



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ चौतीसवां अंक अक्टूबर-दिसम्बर, 2020



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ चौतीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका
(अक्तूबर-दिसम्बर, 2020)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली-110124

हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।



लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ चौतीसवां अंक (अक्तूबर-दिसम्बर 2020)

	पृ.सं.		पृ.सं.
अनुक्रमणिका	3	4. अर्थ-विज्ञान	23
पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5	<i>गौरव हरिथ</i>	
पाठकों के नाम पाती	6	5. आधुनिक युग में कबीर	26
आपके पत्र	7	की प्रासंगिकता	
		<i>डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष'</i>	
लेख		6. लॉकडाउन में क्रियाविधि का	30
1. राजभाषा हिंदी के प्रभावी	13	बदलता हुआ परिवेश	
कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका		<i>सुश्री राजकुमारी शर्मा</i>	
<i>डॉ. सुमीत जैरथ</i>		7. कोरोना मानव जाति के लिए	35
2. शिलांग – पूरब का स्कॉटलैण्ड	18	श्राप या सीख परंतु प्रकृति	
<i>वीरेन्द्र कुमार यादव</i>		के लिए वरदान	
3. विश्व स्तर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार	21	<i>डॉ. लाखा राम</i>	
<i>सुश्री सं.ग. श्रीमती</i>		8. राजभाषा हिंदी का उद्देश्य	38
		<i>संजीव कुमार</i>	

	पृ.सं.		पृ.सं.
9. बंगाल	39	कविताएँ	
योगेश कुमार मिश्र		17. हिंदी हमारी मातृभाषा	78
10. सपनों की उड़ान	42	पंकज अरोरा	
अविनाश कुंदन		18. मेघ बनूँ	79
11. युवा मन का दर्द	43	उदय प्रताप सिंह	
पवन कुमार		19. इंसानियत	80
12. फूलदानी	45	शुभम वर्मा	
सुश्री राजश्री के. शाह		20. स्वागत है बेटी	81
कहानियाँ		केदार नाथ प्रसाद	
13. गुड्डे-गुड़िया की शादी	47	21. फलसफ़ा	82
विनय कुमार गर्ग		दिलीप कुमार मिश्र	
14. दूसरी माटी के लोग	57	22. जीवन के सफर में...!	83
मेहरबान सिंह नेगी		सुश्री हिमा बिंदु	
15. आवारा	63	23. जिंदा दफना रहा हूँ	84
अनिल कुमार शर्मा		सुश्री जुलियट विमला बी.	
16. प्रस्थान	75	24. ओझा का पोछा	86
जसविंदर शर्मा		हीर बल्लभ भट्ट	
		25. गज़ल	88
		सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'	



स्वत्वाधिकार

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन

“लेखापरीक्षा प्रकाश”
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

एक सौ तैतीसवां अंक
(अक्तूबर-दिसम्बर, 2020)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

सुश्री नमिता सेखों
उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री राज कुमार
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अजीत सिंह
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सहायक संपादक

श्री हीरा बल्लभ भट्ट
सलाहकार

सुश्री अनामिका अंतिल
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

रचना चयन समिति

श्री सुनील डबराल
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सुश्री राजकुमारी शर्मा
सलाहकार

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेसंस
जी-194, सेक्टर-2, बवाना, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ
संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।

संपादकीय

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ का एक सौ चौतीसवां अंक (अक्तूबर-दिसम्बर, 2020) आपको प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। आपका यह प्रयास आपके लिये ही उपहार भी सिद्ध हो रहा है, ऐसा आप सब अनुभव कर रहे होंगे। आपकी चन्देक पंक्तियाँ जब कुछ पृष्ठों में छपती है और पत्रिका उन्हें आत्मसात कर बुद्धिजीवियों एवं विद्वानों को मिलती है तो ‘आपके पत्र’ स्तम्भ में आपकी सराहना की झड़ी बरसने लगती है और आप अपने को कृतकृत्य हुआ मानने लगते हैं। जब कवि-लेखक-कहानीकार प्रकाशन में अपनी रचना प्रत्यक्ष देखता है तो उन्हें अपना अमूर्त अनुमान सिद्धशाक्त लगने लगता है। आपकी चुनिंदा सर्वश्रेष्ठ रचनाएं मंत्रालय द्वारा भी वार्षिक रूप से सम्मानित की जा रही हैं जो कि पत्रिका को चार चाँद लगाती है। यह अनुभूति आपको निरन्तर होती रहे, यही शुभकामनाएं हैं।

हिंदी भाषा न केवल भारत वर्ष की राजभाषा है अपितु यह भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक धरोहर का स्वरूप भी है। संस्कृत के बाद हिंदी भाषा वैयाकरणिक रूप से सर्वोत्कृष्ट भाषा है। आज भले ही अंग्रेजी भाषा समाज में एक ऊंचे सामाजिक स्तर से जुड़े होने का दंभ पैदा करती है परन्तु हिंदी भाषा हमारे शालीन और सभ्य स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती है। हिंदी भाषा को जन-जन की भाषा बनाने में समाचार पत्र, पत्रिकाओं, सिनेमा और अन्य मीडिया माध्यमों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दिन-प्रतिदिन प्रौद्योगिकी नये आयाम छू रही है जिसका प्रत्यक्ष प्रतिफल हिंदी भाषा के प्रयोग पर हो रहा है। इसी संदर्भ में, यदि हम नये मीडिया माध्यमों की बात करें तो ये लगातार बढ़ रहे हैं तथा पहले से बेहतर हो रहे हैं। आज फोन, लैपटाप, टैब आदि पर हिंदी भाषा से संबंधित नई एप्लीकेशन, शब्दकोश और हिंदी फोंट आदि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। संक्षिप्त रूप में यदि कहा जाये तो तात्पर्य यह है कि आज के इस आधुनिक समय में हिंदी का प्रयोग न केवल सरल हो गया है अपितु हिंदी सीखने, सिखाने, बोलने और प्रयोग की राह भी काफी अधिक सुलभ हो गई हैं।

अंत में, मैं पत्रिका परिवार सभी सुविज्ञ पाठकों, रचनाकारों, मार्गदर्शकों और कर्तव्यनिष्ठ मुद्रक का हार्दिक आभारी हूँ जिनके सतत सहयोग से पत्रिका का इसके लक्ष्यानुसार समय से प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं पर इसे और अधिक लक्ष्यभेदी बनाने के लिए आपके सर्वमान्य, सुग्राह्य, सुलझे सुझावों का सदैव स्वागत है।

आपका शुभाकांक्षी

अजीत सिंह
संपादक

नई दिल्ली

पाठकों के नाम पाती

प्रिय पाठकों,

जय हिन्द! जय हिन्दी! 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के पन्नों से जुड़े राजभाषा हिंदी के श्रद्धालुओं को सादर नमन। किसी पंजाबी गीतकार ने लिखा है 'कदे उस गुस्से ते गुस्सा न करिये — जो गुस्सा निकलदा है प्यारां दे विच्चों।' संपादक, लेखक व पाठक का मेल तब तक नहीं हो पाता जब तक वे अपनी उपलब्धि प्राप्त नहीं कर लेते। कभी लेखक बाजी मार जाता है तो कभी पाठक जबकि संपादक अपनी बाजी हर तरह सर्वदा सुरक्षित रखता है।

मैं प्रत्येक लेखक और हिंदी प्रेमी की भावनाओं को उजागर करते हुए उनके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि लेखक का मूलभूत उद्देश्य है प्रत्येक मानस में हिंदी के प्रति भावनात्मक लगाव पैदा करना, संघ की राजभाषा संबंधी नीतियों के अनुपालन हेतु बनाए गए विविध कार्यक्रमों में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना तथा राजभाषा हिंदी को जन-जन की भाषा का स्वरूप देते हुए राष्ट्रभाषा पर ससम्मान आसीन करना। लेखक की मेहनत व्यर्थ न जाए इसके लिए इस बात की अपेक्षा है कि उनके मन-मंदिर में हिंदी के प्रति भ्रम प्रवेश न कर पाए।

मैं उन सभी लेखकों को साधुवाद देता हूँ कि जिनके सहयोग से विभागीय पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर जा रही है। मेरा अनुरोध है कि वे तकनीकी विषयों पर अपनी लेखनी अवश्य तैयार करें ताकि हर विधा में हिंदी लिखने में कठिनाई न आये और हिंदी के प्रयोग में आने वाली झिझक स्वतः दूर हो सके।

जय भारत, जय भारती

नई दिल्ली

आपका शुभाकांक्षी
अजीत सिंह
संपादक

आपके पत्र

तीनों अंक मुद्रण, संपादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से बेहद उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं।

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ इकतीसवें अंक की प्रतियां एवं एक सौ बत्तीसवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इस हेतु धन्यवाद। तीनों अंक मुद्रण, संपादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से बेहद उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं। रचनाओं के मध्य भावों एवं अभिव्यक्तियों को दर्शाते हुए छायाचित्र, अत्यंत ही सार्थक, बेहद आकर्षक एवं विषयानुकूल हैं। 130वें अंक में प्रकाशित रचनाओं में श्री नरेन्द्र कुमार पाण्डेय का लेख 'पृथ्वी और चांद का ध्रुव प्रदेश', डॉ. लाखा राम का लेख 'मानवाधिकारों का हनन : समस्या व समाधान', एवं पत्रिका के 131वें अंक में प्रकाशित रचनाओं में श्री योगेश कुमार मिश्र का लेख 'मातृभाषा का महत्व', श्री विजेन्द्र कुमार बेरवाल का लेख 'मोबाईल – मेट्रो में व्यक्ति का सच्चा साथी', श्री सुनील कुमार की कविता 'कोरोना वायरस' एवं श्री केदार नाथ प्रसाद की कविता 'चातक का विनय-पत्र' बेहद प्रशंसनीय हैं। साथ ही ई-पत्रिका के 132वें अंक में प्रकाशित डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष' का लेख 'हिंदी का महत्व एवं सार्वजनिक उपक्रमों में हिंदी में कार्यान्वयन' समसामयिक एवं प्रेरणादायक है। पत्रिकाओं में संकलित शेष सभी रचनाएं भी ज्ञानवर्धक

एवं अनुकरणीय हैं। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को साधुवाद व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु सादर हार्दिक शुभकामनाएं।

कल्याण अधिकारी (रा.भा.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
राजस्थान, जयपुर

पत्रिका में समाहित विभिन्न विषयों पर आधारित रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक हैं।

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ एकतीसवें अंक की प्रतियां प्राप्त हुई, एतदर्थ सादर आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं तथा लेखों के साथ प्रस्तुत छायाचित्र सराहनीय हैं। पत्रिका में समाहित विभिन्न विषयों पर आधारित रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक हैं तथा हमें विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े विषयों से अवगत कराते हैं। पत्रिका के 130वें अंक में प्रकाशित रचनाओं में 'विश्व में हिंदी का स्थान', 'वैश्विक परिदृश्य में हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति', 'हमको बचा लो भगवान', 'स्वयं को कैसे खोजें', 'यमराज का दरबार', तथा 'मेरी मंजिल और पत्रिका के 131वें अंक में प्रकाशित रचनाओं में 'मातृभाषा का महत्व', उड़ते पंछी-एक जीवन सत्य,

‘गुप्तगू’, ‘विदाई’, ‘सबसे निर्बल’, ‘कलयुग का सच’, तथा ‘संतोष’ विशेषरूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के दोनों अंकों के सभी रचनाकारों को उनके योगदान के लिए हार्दिक बधाई, एवं शुभकामनाएं। पत्रिका प्रकाशन के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

उप निदेशक (मुख्यालय)
कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा, मुंबई

पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

हिंदी पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के 130वें एवं 131वें अंक की प्रतियां इस कार्यालय को प्राप्त हुई हैं। पत्रिका में संकलित लेख, कविता, निबंध इत्यादि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानप्रद हैं। कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की झलकियां अति सुन्दर हैं। राजभाषा हिंदी के संवर्धन व प्रसार में यह पत्रिका निश्चय रूप से सहायक है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय,
लखनऊ

पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ तीसवें, एक सौ इकतीसवें अंक की प्रतियां

प्राप्त हुई, तदर्थ आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कार्मिकों ने अपनी मौलिकता से पत्रिका को सुसज्जित किया है। पत्रिका का मुद्रण सर्वोत्तम कोटि का है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.अ.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II,
राजस्थान, जयपुर

पत्रिका में कार्यालयी चित्र बहुत ही सुंदर हैं, जो निःसंदेह पत्रिकाओं की सुंदरता का बखान करते हैं।

गृह पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ तीसवें, एक सौ इकतीसवें अंक की प्रतियां प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। दोनों ही पत्रिकाओं में उत्तम रचनाओं के लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। साहित्य की सभी विधाओं में विषय के अनुसार रचनाएं बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णित की गई हैं। लेखकों की लेखनी बताती है कि सभी लेखक लेखन प्रतिभा के धनी हैं। पत्रिका में कार्यालयी चित्र बहुत ही सुंदर हैं, जो निःसंदेह पत्रिकाओं की सुंदरता का बखान करते हैं। पत्रिका के 130वें अंक के मुख पृष्ठ पर माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा गांधी जी की प्रतिमा का अनावरण करते हुए चित्र बहुत सुंदर हैं।

पत्रिका का प्रत्येक पृष्ठ रंगीन होने के कारण, पाठक के मन को अपनी ओर आकर्षित करता है और साज-सज्जा सुंदर होने के साथ-साथ आकर्षक बन गई है। पत्रिका, राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे, यही हमारी कामना है। पत्रिका के सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को भी बहुत-बहुत बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्र./हि.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
जम्मू व कश्मीर और लद्दाख, जम्मू

पत्रिकाओं की साज-सज्जा एवं मुद्रण उच्चकोटि का है।

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ एकतीसवें अंक की प्रतियां प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिकाओं की साज-सज्जा एवं मुद्रण उच्चकोटि का है। क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिकाओं के गौरव को बढ़ाया है। 130वें अंक का आवरण पृष्ठ आकर्षक एवं प्रेरणादायक है। पत्रिकाओं में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं आकर्षक हैं। संपादक मण्डल द्वारा रचनाओं का चयन एवं सामग्री का समावेश कुशलता से किया गया है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं। आशा है कि हमारी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.अ.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-I,
राजस्थान, जयपुर

पत्रिका का संपादन एवं रचनाकारों की रचनात्मकता हमारी राजभाषा के प्रति समर्पण भाव प्रदर्शित करती है।

त्रैमासिक राजभाषा पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ एकतीसवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का संपादन एवं रचनाकारों की रचनात्मकता हमारी राजभाषा के प्रति समर्पण भाव प्रदर्शित करती है। संकलित समस्त रचनाएं शिक्षाप्रद, नीतिप्रद एवं रोचक होने के साथ ज्ञानवर्धक भी हैं। श्री योगेश कुमार मिश्र का लेख 'मातृभाषा का महत्व', सुश्री अनामिका अंतिल का लेख 'कोविड-19 का संदेश', सुश्री स्मृति श्रीवास्तव की कहानी 'विदाई', श्री कुमार शर्मा 'अनिल' की कहानी 'सबसे निर्बल' तथा कविताएं जैसे सुश्री सुमेधा अमर की 'संतोष' एवं श्री रामौतार प्रसाद की 'मुद्गलों बाद सुहानी नींद आई है' एवं अन्य सभी रचनाएं भी विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। सबके हृदय में हिन्दी भाषा के प्रति प्रेरणा और उत्साह का संचार करने वाली पत्रिका के आगामी अंकों की प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाईयां।

वरि. लेखाधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)-I,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

रचनाओं के साथ प्रकाशित चित्रों ने उनको और अधिक रुचिकर एवं सार्थक बनाया है।

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ एकतीसवें अंक की प्रतियां प्राप्त हुई, एवं एक सौ बत्तीसवें अंक की मुख्यालय की वेबसाइट पर

ई-पत्रिका के रूप में अपलोड कर दिया गया है, एतदर्थ धन्यवाद। इन पत्रिकाओं में शामिल सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं। रचनाओं के साथ प्रकाशित चित्रों ने उनको और अधिक रुचिकर एवं सार्थक बनाया है। विशेषरूप से 'विश्व में हिंदी का स्थान', 'वैश्विक परिदृश्य में हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति', 'भारत में स्वच्छता अभियान की आवश्यकता', 'यमराज का दरबार', 'हिंदी का सम्मान', 'हिंदी दिवस', 'चमन की आवाज', मातृभाषा का महत्व', 'दक्षता एवं निष्पादन लेखापरीक्षा', 'आधुनिक युग में मानवीय मूल्यों का महत्व', कन्या भ्रूण हत्या', 'कोविड-19 : एक महामारी', 'लॉकडाउन पर भावना भारी', 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस', 'जीवन की सांझ', 'कुदरत का कहर-कोरोना', 'लॉकडाउन का सकारात्मक प्रभाव', एवं 'माँ की दुआ' आदि रचनाएं ज्ञानवर्धक, सराहनीय, पठनीय, प्रेरणादायक, प्रशंसनीय एवं अति उत्कृष्ट हैं। रचनाकारों तथा संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामना।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

पत्रिका ई-वर्जन और शानदार संपादन के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ इकतीसवें अंक की प्रतियां प्राप्त हुईं। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 130वें अंक में पत्रिका का मुख्य चित्र आकर्षक है। महात्मा गांधी की मूर्ति का अनावरण बड़ा ही मोहक है। साथ ही अन्य आवक्ष चित्र भी सुंदर हैं। आलेखों में

सुश्री हिताक्षी की रचना 'ज्ञान की परीक्षा' दैनिक जीवन की समस्याओं पर जोर डालती है। सुश्री सुमेधा अमर की रचना 'भारत में स्वच्छता अभियान की आवश्यकता' ज्ञानपरक रचना है। श्री संजय कुमार सिंह की रचना 'हमको बचा लो भगवान' कार्यालयीन जीवन की विडंबनाओं पर कथ्यात्मक रचना बहुत ही आकर्षक है। इसके साथ ही 'यमराज का दरबार' श्री सुभाष चंद्र यादव रचित व्यंजना है जो कार्यालयी व्यवस्थाओं पर एक व्यंग्य है। 131वें अंक समाहित सभी आलेख प्रशंसनीय हैं जिनमें श्री बनवारी लाल सोनी का आलेख 'दशानन की शर्त' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। श्री सुभाष चंद्र यादव की कविता 'फिजाओं में क्यूं घुटन है' बड़ी ही रोचक और प्रदूषण समस्या पर गहरी व्यंजना है। सुश्री अनामिका अंतिल की रचना 'कोविड-19 का संदेश' बड़ी ही रोचक और विचारोद्दीपक है। साथ ही सुश्री सुमेधा अमर की रचना 'संतोष' एक ज्ञानपरक रचना है। दोनों अंक में अन्य रचनाएं भी बहुत ही प्रशंसनीय हैं। पत्रिका ई-वर्जन और शानदार संपादन के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका उत्तरोत्तर इसी प्रकार गुणवत्ता का प्रदर्शन करती रहे ऐसी शुभकामनाओं सहित।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
तमिलनाडु, चेन्नै

रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक व आकर्षक है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ इकतीसवें अंक की प्रतियां

प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक व आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। 131वें अंक में कार्यालय के दो पदाधिकारियों श्रीमती वी. सुधा की रचना 'कन्या भ्रूण हत्या' व हिंदी अधिकारी, श्री उदय प्रताप सिंह की रचना 'ठिठक रहे हैं पाँव' को भी स्थान मिला है, इसके लिए मैं आपका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ एवं अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ।

वरिष्ठ लेखाधिकारी (मा.सं.वि.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
कर्नाटक, बेंगलूर

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं स्तरीय, ज्ञानवर्धक तथा साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ तीसवें अंक की प्राप्ति हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं स्तरीय, ज्ञानवर्धक तथा साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। सुश्री सं.ग. श्रीमती का 'विश्व में हिंदी का स्थान', सुश्री हिताक्षी शर्मा का 'ज्ञान की परीक्षा', श्री संजय कुमार सिंह का 'हमको बचा लो भगवान', श्री जसविंदर शर्मा का 'साहब मुंह लटकाए बैठे हैं' आदि लेख बड़े ही विचारोत्तेजक व सार्थक हैं। इसके अतिरिक्त मानवीय भावनाओं की सुन्दर व रोचक अभिव्यक्ति करती हुई श्री बी.एस. चौहान की 'भिखारी का चोला' बहुत ही भावप्रवण बन पड़ी है। श्री विनय कुमार गर्ग की 'उपहार', श्री अमित कुमार की 'लेखन अवरोध' सभी कविताएं सराहनीय हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल

प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
चण्डीगढ़

विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी यह पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन और राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ इकतीसवें अंक की प्रतियां इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के दोनों अंक स्तरीय रचनाओं से परिपूर्ण हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी यह पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन और राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। रचनाएं रोचकता और पठनीयता से परिपूर्ण हैं। दोनों अंकों की सभी रचनाएं शिल्प और कथ्य के स्तर पर बेहद सशक्त हैं। दोनों अंकों में शामिल उल्लेखनीय रचनाएं – मातृभाषा का महत्व, कोविड-19 का संदेश, आधुनिक युग में मानव मूल्यों का महत्व, बदलाव की बयार, विश्व में हिंदी का स्थान, ज्ञान की परीक्षा आदि शोधपूर्ण और ज्ञानवर्धक भी हैं। विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की सृजनात्मकता प्रतिभा को उभारने हेतु 'लेखापरीक्षा प्रकाश' एक उत्कृष्ट मंच उपलब्ध करा रहा है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है।

राजभाषा हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ इकतीसवें अंक की प्रतियां प्राप्त हुई, जिसके लिए हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित किसी एक रचना की प्रशंसा करना, पत्रिका में प्रकाशित अन्य रचनाओं की उपेक्षा करना होगा, क्योंकि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं प्रभावशाली, रोचक एवं उच्चकोटि की हैं जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आपकी यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है, जिसकी निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

कार्यालयीन छायाचित्र पत्रिका की सुन्दरता में चार चाँद लगा रहे हैं जिससे पत्रिका अधिक आकर्षक हो गई है

पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ इकतीसवें अंक की प्रतियां प्राप्त हुई, इसके लिए हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं, लेख एवं कविताएं सारगर्भित एवं उच्चकोटि की हैं। श्री सजीव कुमार की कविता 'हिंदी दिवस', सुश्री सं.ग. श्रीमती का लेख 'विश्व में हिंदी का स्थान', श्री योगेश कुमार मिश्र का लेख 'मातृभाषा का महत्व', एवं श्री पवन कुमार की कहानी 'कडवी सच्चाई'

इत्यादि सभी रचनाएं अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अति सुंदर है तथा कार्यालयीन छायाचित्र पत्रिका की सुन्दरता में चार चाँद लगा रहे हैं जिससे पत्रिका अधिक आकर्षक हो गई है। पत्रिका के संपादक मंडल रचनाकारों को सफल संपादन एवं लगातार प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (सा.स्था.)
कार्या. महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय प्रा.)
ग्वालियर

पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तीसवें, एक सौ इकतीसवें अंक की प्रतियां तथा एक सौ बत्तीसवें अंक की ई-पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका की ये प्रतियां भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका



डॉ. सुमीत जैरथ
सचिव, राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

राजभाषा अर्थात् राज-काज की भाषा, अर्थात् सरकार द्वारा आम-जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें

मत-मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने-कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी।

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह

लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा — हिंदी को और सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन-प्रति-दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति-विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। माननीय प्रधानमंत्री जी से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए विभाग की रणनीति में 10 'प्र' के फ्रेमवर्क और रूपरेखा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है, जो निम्न प्रकार से है।

प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय-समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा

हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

प्राइज अर्थात् पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/बैंकों/उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं



और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों/बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने-कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए सचिव (रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग डेढ़ महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 3 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवार ब्यूरो के माध्यम से

प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग-अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं – “आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।” कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए – ई-प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान – केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत-स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को NIC-Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

प्रयोग (Usage)

‘यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it)’ हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे-धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है कि भाषा के



शब्दों का व्यापक प्रयोग समय-समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। वर्तमान में राजभाषा हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व — माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश-विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका

अंतरांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वतः ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों का बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार-प्रसार भी शामिल है, का अधिक से

अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी गृह-पत्रिकाओं



का प्रसार होगा और हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ-साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊंचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं कि —

*लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।*

*नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।*

*डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुड़ी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।*

*असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।*

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन दस 'प्र' को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे।

शिलांग – पूरब का स्कोटलैण्ड



वीरेन्द्र कुमार यादव

अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद्
सह-सदस्य विश्व हिंदी सम्मेलन समन्वय समिति
153, एम.आई.जी., लोहियानगर,
कंकड़बाग, पटना-20

मैं शिलांग पहले भी कई बार जा चुका हूँ। शिलांग भारत के उत्तर पूर्वी राज्य मेघालय की राजधानी है। भारत के पूर्वोत्तर में बसा शिलांग हमेशा से पर्यटकों का आकर्षण का केन्द्र है। इसे भारत के पूरब का स्कोटलैण्ड भी कहा जाता है। पहाड़ियों पर बसा छोटा और खूबसूरत शहर पहले असम की राजधानी थी। असम विभाजन के बाद मेघालय बना और शिलांग उसकी राजधानी। मानसून के दौरान जब यहाँ बारिश होती है, तो पूरे शहर की खूबसूरती और निखर जाती है और शिलांग के चारों तरफ के झरने जीवंत हो उठते हैं।

इस बार की शिलांग यात्रा जगदम्बी प्रसाद यादव स्मृति प्रतिष्ठान तथा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद् के द्वारा आयोजित

राजभाषा सम्मेलन एवं काव्य सम्मेलन में आयोजक के रूप में जाने का अवसर मिला। शिलांग जाने के लिए रेलमार्ग नहीं है। यहाँ हवाई जहाज की कम ही उड़ाने जाती है। सड़क मार्ग से यहाँ जाना सबसे सुविधाजनक है। 13 फरवरी को लगभग सायं 7.30 बजे मैं और मेरी पत्नी डॉ. (श्रीमती) अंशुमाला हवाई जहाज से पटना से कलकत्ता होते हुए गुवाहाटी पहुँचे। रात्रि गुवाहाटी में विश्राम कर 14 फरवरी को सुबह वहाँ से कार से शिलांग के लिए निकले। यह दूरी लगभग 120 कि.मी. है। शिलांग जाने की सड़क पूरी तरह से पहाड़ी मार्ग है। एक तरफ पहाड़ और दूसरी तरफ घाटियाँ और हरे भरे पेड़-पौधे बड़े सुंदर लग रहे थे। हम मंत्र-मुग्ध प्राकृतिक सौंदर्य को

निहार रहे थे। पर तभी हमारी कार रुक गई। पता चला कि आगे सड़क जाम थी। कारण था कि विधान सभा चुनाव में प्रत्याशियों द्वारा नामांकन के कारण उनके समर्थकों की गाड़ियों से दोनों ओर सड़क जाम कर दिया गया था। काफी समय के बाद जाम छूटा। वहाँ से आगे बढ़ने पर राहत की सांस ली। दो ढाई घंटे के रास्ते को साढ़े चार घंटे में तय किया।

15 फरवरी को हमारा कार्यक्रम जो कि पुलिस बाजार स्थित अल्पाइन होटल में आयोजित था। सुबह-सुबह हम तैयार होकर सभागार में पहुँच गए। राजभाषा सम्मेलन भव्यता से शुरू हुआ। मेघालय के राज्यपाल महामहिम श्री गंगा प्रसाद द्वारा उद्घाटन किया गया, इस अवसर पर मुख्य



शिलांग पीक का मनमोहक दृश्य

अतिथि भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री, श्री अश्विनी कुमार चौबे थे। प्रतिष्ठान के अध्यक्ष होने के नाते अध्यक्षता मैंने की। स्थानीय साहित्यकारों के साथ हिंदी सेवियों का जमावड़ा था। दिन भर तो हम लोग कार्यक्रम और विभिन्न सत्रों में व्यस्त रहे। सायंकाल राजभवन में काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। हिंदी, गारो, खासी, नेपाली, जयंतिया भाषी कवि और कवयित्रियों द्वारा समा बाँध दिया। राज्यपाल महोदय के काव्य पाठ ने तो समारोह को गरिमामयी बना दिया। तत्पश्चात राजभवन में रात्रि भोज में लजीज व्यंजनों का आनंद का लुत्फ सभी प्रतिनिधियों ने लिया। 16 फरवरी

का दिन शिलांग भ्रमण का था। शिलांग एक छोटा सा शहर है जिसे पैदल घूम कर भी देखा जा सकता है। अपनी सुविधानुसार सिटी बस या दिन भर के लिए

ऑटो या टैक्सी किराए पर लेकर भी घूमा जा सकता है। सबसे पहले हम शिलांग पीक पहुँचे, यह शिलांग का सबसे ऊँचा प्वाइंट है। इसकी ऊँचाई 1965 मीटर है। यहाँ से पूरे शहर का विहंगम नजारा देखा जा सकता है। रात के समय यहाँ से पूरे शहर की लाईट असंख्य तारों जैसी चमकती है। लेडी हैदर पार्क, यह लगभग हर प्रकार के फूलों से सुसज्जित खूबसूरत पार्क है। हेप्पी वेली में स्थित मीठा झरना बहुत ऊँचा और बिल्कुल सीधा है। इसकी खूबसूरती तो देखते ही बनती है। सेवेन सिस्टर फाल्स, यह तो झरनों का एक समूह है जो कि पहाड़ों की घाटी के बीच में स्थित है। यहाँ के दृश्य बहुत ही सुन्दर और मनोरम हैं।



हाथी झरना का सुंदर दृश्य



मोस्वाई केव का मनमोहक दृश्य

बरापानी या उनमाई झील—शिलांग से 17 कि.मी. दूर स्थित है। बरापारी में एक बहुत विशाल झील है जिससे जल से बिजली उत्पन्न होती है। यहाँ हम लोगों ने मोटर नौका व अन्य पानी के खेलों का आनन्द लिया। इसके बाद हम लोग गोल्फ कोर्स देखने गये। यह भारत का तीसरा सबसे बड़ा गोल्फ कोर्स है। इसमें 26 होल है। हाथी झरना (फाल्स) — यह ऊपर शिलांग में स्थित है, जहाँ वायुसेना का ईस्टर्न एयर कमांड भी है। यहाँ कई छोटे-छोटे झरने एक साथ गिरते हैं। यहाँ एक छोटे से रास्ते के सहारे झरने के नीचे भी जाया जा सकता है, जहाँ एक छोटी झील बनी है।

मोस्वाई केव — यह गुफा प्रकृति का अनुपम खजाना है। गुफा में पत्थरों की सुंदरता व कटाई को देखकर लगता है कि कभी यहाँ समुद्र होगा। स्थानीय लोग बताते हैं कि ये गुफा गुवाहाटी के कामाख्या मंदिर तक जाती है। गुफा में लगभग 500-600 मी. अंदर तक जाने का अवसर मिला। एक जमाने में लोग गुफा में मशाल लेकर जाया करते थे। लेकिन अब मेघालय सरकार ने विद्युत का प्रबंध कर दिया है।

शिलांग का डॉन बॉस्को संग्रहालय एक ऐसी जगह है, जो इस पहाड़ी की यात्रा करने आए हर व्यक्ति को

अवश्य देखना चाहिए। यहाँ की व्यवस्था अपने आप में बेहतरीन है।

शिलांग भ्रमण के बाद हम लोग चेरापूंजी की ओर बढ़े यहाँ संकरी और रोमांचक हाथी गुफा में छत से टपकते पानी में धुले चूने से निर्मित आकर्षक पाषाण आकृतियों को जी भर निहारने के बाद भी जी नहीं भरा। हम वहाँ एक दिन और रुकना चाहते थे लेकिन समय की बाध्यता थी। गर्वीले पर्वतों के वक्ष पर बने मनोहारी रास्तों से होते हुए हम आगे बढ़ चले। हमने चेरापूंजी में पहाड़ की चोटी पर स्थित वन विभाग के साढ़े पाँच हेक्टेयर में विस्तृत थागखारंग पार्क से घाटी में झांकने का रोमांच के साथ-साथ नीचे घाटी में फैली नदी के उस पार बंगलादेश और भारत के बीच स्थल सीमा रहित काल्पनिक सीमा की पीड़ा का अनुभव किया। चेरापूंजी अत्यधिक वर्षा के लिए दुनिया भर में मशहूर है। हाल ही में इसका नाम चेरापूंजी से बदलकर सोहरा रख दिया गया है। वास्तव में स्थानीय लोग इसे सोहरा नाम से भी जानते हैं। इस बार की शिलांग यात्रा बहुत ही आनंदमयी थी। तृप्त मन से हम लोग 17 फरवरी को पटना पहुँच गये।

विश्व स्तर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार



सुश्री सं.ग. श्रीमती
सं. 135, न्यू वी.ई.एल. रोड
एजीज लेआउट, बैंगलूर

हर भारतीय के लिए यह गर्व की बात है कि पूरे विश्व में अब हिंदी भाषा को चाहने वालों की संख्या बढ़ रही है। हिंदी अखबारों की वेबसाइट्स ने करोड़ों नए हिंदी पाठकों को अपने साथ जोड़कर हिंदी को और अधिक समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी में इंटरनेट उपयोग करने वालों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है। यह हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा वैश्विक स्वीकार्यता का ही परिणाम है कि आज हिंदी अपनी तमाम स्पर्धियों को पीछे छोड़ते हुए लोकप्रियता का आसमान छू रही है। हिंदी को विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार, विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक माना गया है।

भारत में हर साल 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है। नागपुर में 10 जनवरी 1975 को प्रथम बार विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। भारत में हर

साल 'विश्व हिंदी दिवस' मनाए जाने की घोषणा तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने वर्ष 2006 में की। 10 जनवरी का दिन इसलिए निश्चित किया गया कि प्रथम बार इसी दिन विश्व हिंदी सम्मेलन किया गया।

विश्व हिंदी दिवस, हिंदी की महानता के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम है। इसी अवसर पर, विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों में, हिंदी से संबंधित विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, जनसंपर्क के लिए हिंदी को ही सबसे उपयोगी भाषा मानते थे। हिंदी ऐसी भाषा है जो हर भारतीय को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाती है। विश्वभर में हमारी हिंदी फिल्म इंडस्ट्री का नाम है 'बालीवुड'। ये फिल्में भारत के अलावा विदेशों में भी खूब पसंद की जाती हैं। पौराणिक हिंदी

धारावाहिक जैसे रामायण, महाभारत, विष्णु पुराण पूरे विश्व में अत्यन्त जनप्रिय हो रहे हैं। रूस के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी के साहित्य पर लगातार शोध हो रहे हैं।

हिंदी की महानता के प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं की महती भूमिका है।

“निज भाषा उन्नति अहे,
सब भाषा को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के,
मिटे न हिय को शूल।।”

महान कवि श्री भारतेन्दु के यह उद्गार मानव जीवन तथा सभ्यता में भाषा के महत्व को दर्शाते हैं। आज हमारे देश में पत्र-पत्रिकाएं, सूचना एवं तकनीक का साथ लेकर विश्व भर में हिंदी का प्रचार संभाल रही हैं। सर्वसाधारण की जन-भाषा और हृदय को छू लेने वाली हिंदी का प्रयोग करना, पत्र-पत्रिकाओं का प्रमुख उद्देश्य

है। हिंदी भाषा का प्रथम समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई, 1826 को कानपुर निवासी पंडित युगल किशोर शुक्ल ने निकाला। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीयों को जागृत करना तथा भारतीयों के हितों की रक्षा करना था।

राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ भाषा की महत्ता स्थापित करने की दिशा में श्री भारतेन्दु का बड़ा योगदान है। उन्होंने 1867 में 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन किया जिसका मूल उद्देश्य था "अपधर्म छूटै, सत्त्व निज भारत गहै"। भारत द्वारा सत्त्व ग्रहण करने के उद्देश्य से, हिंदी पत्रकारिता का विकास किया तथा आने वाले पत्रकारों के लिए दिशा निर्माण किया। भारतेन्दु ने कवि वचन सुधा, हरिश्चन्द्र बोधिनी, बाला बोधिनी नामक पत्र निकाले। देश के प्रति सजगता, समाज सुधार, राष्ट्रीय चेतना, मानवीयता, स्वाधीन होने की चाह उनके पत्रों की मूल विषयवस्तु थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से ज्ञानवर्धन करने के साथ-साथ, हिंदी की समृद्धि के लिए व्याख्यान भी लिखे।

1907 का वर्ष समाचार पत्रों की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। महामना मालवीय का 'अभ्युदय', बाल गंगाधर तिलक का 'केसरी', हिंदी के प्रचार-प्रसार में जन-जागृति पैदा करने में महत्वपूर्ण रहा। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती'

पत्रिका के माध्यम से ज्ञानवर्धन करने के साथ नए रचनाकारों को भाषा का महत्व समझाकर गद्य तथा पद्य के लिए राह निर्मित की। प्रेमचन्द ने 1932 में 'जागरण' तथा 'हंस' का प्रकाशन किया। 'हंस' का उद्देश्य समाज का आह्वान करना था।

स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी को 'राजभाषा' दिलवाने तथा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए ही हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन बढ़ना आरंभ हुआ। 'भाषा' पत्रिका भारतीय भाषाओं तथा साहित्य की महत्वपूर्ण पत्रिका है। केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार द्वारा यह पत्रिका हिंदी के विश्व स्तर पर प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके अलावा, प्रत्येक सरकारी संस्थान का राजभाषा विभाग अपनी पत्रिका प्रकाशित करता है जिनमें राजभाषा मंजूषा, मंथन, लेखापरीक्षा प्रकाश, राजभाषा किरण आदि प्रमुख हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निकलने वाली पत्रिकाएँ – यू.के. से प्रकाशित 'पुरवाई', कनाडा से 'वसुधा', 'प्रयास', न्यूजीलैंड से 'भारत दर्शन', आस्ट्रेलिया से 'हिंदी गौरव' आदि पत्रिकाएँ विश्व भर में हिंदी की कीर्ति पताका फहरा रही हैं।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों में हिंदी का अन्तर्राष्ट्रीय विकास अत्यंत तेजी से हो रहा है

हिंदी, एशिया के व्यापारिक जगत में धीरे-धीरे अपना स्वरूप बिंबित कर भविष्य में अग्रणी भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित कर रही है। वेब, विज्ञान, संगीत, सिनेमा, धारावाहिक तथा बाजार के क्षेत्र में हिंदी की मांग तेजी से बढ़ रही है। अनेक विश्वविद्यालयों तथा सैकड़ों छोटे-बड़े केन्द्रों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन शोध स्तर तक हो रहा है। यू.ए.ई. के 'हम एफ-एम' सहित अनेक देश हिंदी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं जिनमें बी.बी.सी., जर्मनी के डॉयचे वेले, जापान के एन.एच.के. वर्ल्ड विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विश्व आर्थिक मंच की सर्वाधिक शक्तिशाली भाषाओं की सूची में हिंदी भी एक है। कोर लेंग्वेजस नाम के साइट ने दस महत्वपूर्ण भाषाओं में हिंदी को स्थान दिया है।

एशियाई देशों में अपनी व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने हेतु, आजकल बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी हिंदी के प्रचार-प्रसार पर विशेष ध्यान देने लगी हैं। मूल्यों के गिरते बाजार में विश्व को अच्छे मूल्यों की चीज देने की क्षमता हिंदी में है। आत्म गौरव की अनुभूति से संपन्न हिंदी, विश्व कल्याण के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दे सकती है। आईए, हम इस महान भाषा 'हिंदी' पर गर्व करें।

अर्थ-विज्ञान



गौरव हारिथ
वरिष्ठ अनुवादक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

मानव समाज में विचारों के आदान प्रदान का महत्वपूर्ण साधन भाषा है। भाषा का शरीर वाक्य से लेकर ध्वनि तक फैला है तो उसकी आत्मा अर्थ है जिसे भाषा कहा जाता है। उसमें यदि सुनने वाले तक अर्थ पहुँचाने की क्षमता नहीं है तो वह मानव समुदाय के लिए अनुपयोगी है। इसी कारण भाषा विज्ञान के प्रमुख विभागों में अर्थ विज्ञान का उल्लेख किया जाता है। अर्थ विज्ञान में भाषा के अर्थ पक्ष का वैज्ञानिक अध्ययन विश्लेषण किया जाता है। अर्थ विज्ञान वर्णनात्मक, ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक – इन तीनों प्रकार का होता है।

अर्थ विज्ञान को लेकर विद्वानों में मतभेद रहा है। कुछ विद्वान इसे भाषा-विज्ञान की एक शाखा मानते हैं किन्तु कुछ आधुनिक इसे भाषा-विज्ञान से अलग मानते हैं।

कुछ लोगों के अनुसार यह दर्शनशास्त्र की एक शाखा है और कुछ अन्य लोगों के अनुसार यह एक स्वतंत्र विज्ञान है। किन्तु इसमें संदेह नहीं कि अर्थ भाषा की आत्मा है और भाषा विज्ञान जब भाषा का विज्ञान है तो बिना उसके (अर्थ) अध्ययन के बिना उसे पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। इस प्रकार अर्थ विज्ञान निश्चित रूप से भाषा विज्ञान का अविभाज्य रूप है।

भृतहरि ने अपने ग्रंथ 'वाक्य पदीय' में लिखा है कि शब्द के उच्चारण से जिसकी प्रतीति होती है वही उसका अर्थ है। परन्तु एक प्रश्न उठता है कि क्या अर्थ केवल शब्द का ही होता है। उदाहरण के लिए, 'राम मारे शर्म के पानी-पानी हो गया' वाक्य के अर्थ की अपेक्षित प्रतीति मात्र 'पानी' शब्द से नहीं हो पाती। अर्थ की प्रतीति तो पानी-पानी' होना है इन शब्दों के

द्वारा ही हो पाती है। अतः कहा जा सकता है कि किसी भी भाषिक इकाई को किसी भी इन्द्रिय से ग्रहण करने पर जो मानसिक प्रतीति होती है, वही अर्थ है।

अर्थ की प्रतीति दो प्रकार से होती है – आत्म अनुभव से तथा परानुभव से। 'चीनी मीठी होती है' में 'मीठी' के अर्थ की प्रतीति स्वयं चीनी परखने से ही हो जाती है। इसी प्रकार गर्मी, धूप आदि के अर्थ की प्रतीति भी आत्म अनुभव से ही हो पाती है परन्तु अनेक ऐसे क्षेत्र भी होते हैं जहाँ हमारी पहुँच नहीं होती। उस क्षेत्र से संबंधित शब्दों के अर्थ की प्रतीति हम परानुभव से करते हैं। जहर, मृत्यु आदि शब्दों के अर्थ की प्रतीति परानुभव से ही होती है। अर्थ को भाषिक प्रतीकों के द्वारा सम्प्रेषित किया जाता है। इस प्रकार अर्थ के निम्न चार प्रकार हैं –

1. संरचनार्थ

इसे व्याकरणिक अर्थ भी कहा जा सकता है। इसका आधार भाषा की संरचना है। उदाहरणार्थ – निम्न वाक्य के दो संरचनात्मक संभव हैं। ‘परिश्रमी छात्र-छात्राएं पास हो गए।’ इस वाक्य में दो अर्थ संभव हैं – (i) केवल छात्र परिश्रमी (ii) छात्र व छात्राएं दोनों परिश्रमी।

2. संकेतार्थ

इसका संबंध बाह्य जगत की वस्तुओं के नामकरण से है। हम जो कुछ देखते हैं या अनुभव करते हैं उसे भाषिक प्रतीक के माध्यम से नाम देते हैं। यह नाम देना ही उसे अर्थ से जोड़ना है। दूसरे शब्दों में वह अर्थ जो विचार को नाम देता है, संकेतार्थ कहलाता है। लड़का, स्कूल, पुस्तक आदि के प्रयोग से जो विचार मन मस्तिष्क में उभरता है वह उसका संकेतार्थ है।

3. प्रयोगार्थ

जो अर्थ भाषा के वास्तविक प्रयोग तथा सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ा होता है, प्रयोगार्थ कहलाता है। इसे वक्ता श्रोता के पारस्परिक संबंध तथा उसके सांस्कृतिक परिवेश का पता चलता है यह दो रूपों में देखा जा सकता है –

(क) सामान्य प्रयोगार्थ – हिंदी में तू, तुम, आप सर्वनाम का प्रयोग अपने से आयु में बड़े, छोटे व सामाजिक स्तर में निर्धन व धनी से जुड़ा है।

(ख) सह-प्रयोगार्थ – ‘राम शब्द परशुराम, दशरथ पुत्र राम तथा बलराम तीनों के लिए प्रयुक्त होता है किंतु राम-लक्ष्मण या सीता-राम कहने पर दशरथ पुत्र राम का ही अर्थ निकलता है।

4. संपृक्तार्थ

इसे लक्ष्यार्थ भी कहा जा सकता है। सामान्य संकेतार्थ से भिन्न जो अर्थ संप्रेषित होता है वह संपृक्तार्थ है। यह अर्थ भाषा समुदाय के बौद्धिक स्तर का परिचायक है। ‘मूर्ख’ के लिए ‘गधा’ या बच्चे को ‘फूल’ कहने में यही अर्थ दिया जाता है। यही इसका संप्रक्तार्थ है। अर्थ की दृष्टि से भाषा में पर्याय, विलोम तथा अनेकार्थी शब्दों का विशेष महत्व है।

(क) पर्यायता – विभिन्न शब्दों के अर्थीय घटक समान होने पर वे पर्याय कहलाते हैं। सामान्य बोलचाल में पर्याय से तात्पर्य ऐसे शब्दों से है जो समानार्थ हों। पर्याय शब्दों के दो प्रकार हैं – (i) पूर्ण पर्याय, (ii) आंशिक पर्याय

(i) पूर्ण पर्याय – पूर्ण पर्याय वे हैं जो एक भाषा में सभी संदर्भों में बिना किसी अर्थ परिवर्तन के एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखे जा सकें। हिंदी भाषा में भोजन-खाना, वर्षा-बारिश, खूबसूरत-सुंदर इसी प्रकार के पूर्ण पर्याय हैं।

(ii) आंशिक पर्याय – आंशिक पर्याय सभी संदर्भों में एक के स्थान पर रखे नहीं जा सकते। उदाहरणार्थ – हिंदी में कठिन-मुश्किल का पर्याय है किंतु सभी संदर्भों में एक के स्थान पर दूसरे को नहीं रखा जा सकता। जैसे – ‘इस काम में थोड़ी कठिनाई है।’ इस वाक्य में कठिनाई के स्थान पर मुश्किलाई नहीं कह सकते। अतः यह पूर्ण पर्याय न कहलाकर आंशिक पर्याय कहलाएंगे।

(ख) विलोमता – एक दूसरे के विरोधी अर्थ वाले शब्द विलोम कहलाते हैं। विलोमता के लिए विषम घटकता महत्वपूर्ण है। बहुत से शब्द ऐसे होते हैं जिनकी संरचना में ही विरोधी तत्व होते हैं। स्पष्ट-अस्पष्ट, राग-विराग, सगुण-निर्गुण, आदि ऐसे ही विलोम शब्द हैं। हिंदी एक शब्द के एकाधिक विलोम भी उपलब्ध हैं। जैसे – ‘सूखा’ शब्द के दो विलोम हो सकते हैं – गीला, हरा-भरा।

वाक्य स्तर पर भी विलोमता महत्वपूर्ण है। हिंदी में अभिव्यक्ति में विलोम अर्थ देने के लिए न, नहीं जैसे निषेध वाचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यथा –

राधा आज स्कूल जाएगी।

राधा आज स्कूल नहीं जाएगी।

(ग) अनेकार्थ – जब किसी शब्द या वाक्य के एक से अधिक अर्थ हों, उसे अनेकार्थी कहा जाता है और इसी से विवेचन अनेकार्थता के अंतर्गत आती है। रहीम का दोहा प्रसिद्ध है –

रहिमन पानी राखिए,
बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरै,
मोती मानस चून॥

यहाँ पानी शब्द जल, इज्जत तथा क्रांति तीनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। अतः यह अनेकार्थी शब्द है। अनेकार्थता वाक्य स्तर पर महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ – ‘उत्तर कहां है?’

अर्थ – (i) उत्तर दिशा कहां है?
(ii) प्रश्न का उत्तर कहां है?

प्रतीक और अवधारणा का संबंध

भाषा में यह प्रश्न अनादिकाल से उठता रहा है कि शब्द और अर्थ में क्या संबंध है। क्या पानी कहने से ही पानी का बोध होता है मिट्टी या काठ का नहीं। क्या पानी शब्द और

पानी द्रव का कोई संबंध है? वास्तव में यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था है। इसका अर्थ है कि भाषा के शब्द प्रतीक है। शब्द और अर्थ का कोई स्वाभाविक एवं सहज संबंध नहीं है। समाज में विभिन्न शब्दों को विभिन्न अर्थों में प्रतीक के रूप में स्वीकार कर लिया है। शब्द विशिष्ट अर्थों के प्रतीक हैं अतः उन शब्दों के प्रयोग से श्रोता उन्हीं अर्थों को ग्रहण करता है। उदाहरण के लिए समाज में ‘पानी’ शब्द को पानी द्रव्य के लिए प्रतीक मान रखा है अतः पानी कहने से उसी का बोध होता है किसी अन्य वस्तु का नहीं।



आधुनिक युग में कबीर की प्रासंगिकता



डॉ. पी. आर. वासुदेवन 'शेष'
जी-4, अक्षय फ्लैट्स, 53,
इरुसुपा स्ट्रीट, आईस हाउस,
ट्रिपलिकेन, चेन्नई-600005 (तमिलनाडु)

मूल्य वे लक्ष्य एवं उद्देश्य होते हैं, जिसके प्रति एक व्यक्ति अथवा संपूर्ण समाज के व्यवहार को निर्देशित किया जाता है। इन मूल्यों के द्वारा ही मनुष्य पशुता से ऊपर उठकर मानवता की श्रेणी में प्रविष्ट होता है। अतः मूल्य मानवता की कसौटी होते हैं, जो जीवन मूल्यों को दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं।

डॉ. देवेन्द्रनाथ त्रिवेदी का यह कथन है कि — “मूल्य अपने व्यापक अर्थ में तत्त्वतः मानव-मूल्य ही हैं, परंतु अपने सीमित अर्थ में मानव मूल्यों का एक विशिष्ट आशय है। विशेष अर्थ में मानव मूल्यों का तात्पर्य उन मूल्यों से है जो मानव के आंतरिक सहज स्वरूप के सबसे निकट प्रतीत होता है। उनकी विशेषता इसी में है कि मानवीय संवेदनाओं की उनमें मुक्त और उदार स्वीकृति है। जीवन में उन मूल्यों की प्रतिष्ठा का अर्थ मानवता एवं मानवीयता की प्रतिष्ठा है।”

सामान्यतः मानव समाज द्वारा निर्धारित नियम एवं अनुभव जन्य आदर्श परिष्कृत एवं श्रेष्ठ जीवन पद्धति प्रदान करने वाली उस सकल्पना को मूल्य कहा जा सकता है जो मानव की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ किसी विषयवस्तु की अच्छी बुरी औचित्य अनौचित्य एवं उपयोग-अनुपयोगी होने का बोध कराते

हुए लोकमंगल तथा मानवता को प्राप्त करने में योगदानकारी भूमिका निभाते हैं तथा जिनमें सभी की मंगलकामना एवं मानव हित की भावना निहित होती है।

हमारी संस्कृति सदैव से ही मूल्यों के उच्चादर्श के लिए प्रसिद्ध रही है। विश्वप्रेम, विश्वबंधुत्व एवं वसुधैव कुटुंबकम् की भावना हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान रही है। वैदिक साहित्य में प्राप्त विश्वबंधुत्व विश्वप्रेम का आधार वाक्य है —

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्।

अर्थात् सभी सुखी हों, सब सकुशल रहें, सबका कल्याण हो, कोई दुःख का भागी न हो। किन्तु वर्तमान समाज दिन-प्रतिदिन मूल्यहीनता की ओर अग्रसर हो रहा है। इस मूल्यहीनता का शिकार न केवल भारतवर्ष है, अपितु यह विश्व में अपने पंख पसारे हुए है। परिणामस्वरूप मानव हित के स्थान पर स्वहित अथवा स्वार्थ की भावना बलवती होती जा रही है। चारों तरफ बिखराव है, परिवार टूट रहे हैं, समाज में भी एकता का अभाव है, आपसी भाईचारे की भावना किताब के पन्नों

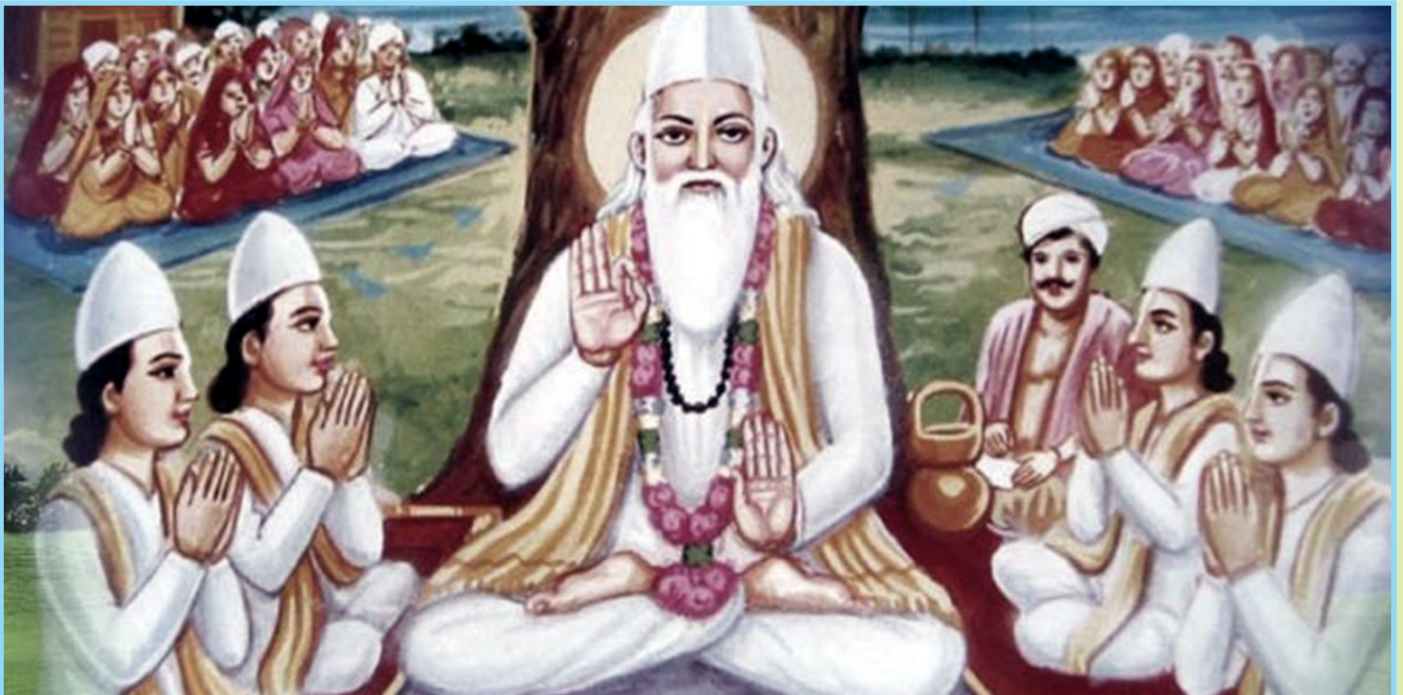
में कैद होकर रह गई है। भौतिकवादी युग में जी रहे लोगों की मानवीय संवेदना का स्त्रोत सुख गया है आज के भारतीय समाज में उग्र सांप्रदायिकता की आंधी चल रही है। धर्म के नाम पर घृणा, द्वेष और उन्माद का प्रचार-प्रसार हो रहा है।

जाति भेद खूँखार जाति युद्ध बन रहा है। तरह-तरह के दुराग्रहों, कट्टरताओं और संकीर्णताओं का बोलबाला है। समाज में व्याप्त ये प्रवृत्तियाँ समाज के नैतिक स्तर को आधार पहुँचा रही हैं, किंतु किसी को भी इसकी चिंता नहीं सताती वरन् प्रत्येक व्यक्ति भौतिक सुख साधना की मरीचिका में फँसा, व्यस्त, दुखी एवं चिंतित है। परिणामस्वरूप मनुष्यता, मानवीय सरोकार और मानवीय संवेदनाएं अपनी अर्थवत्त तथा उपदेयता खोती जा रही है।

आधुनिक समाज की ऐसी परिस्थिति को देखकर कबीरकालीन (मध्यकालीन) समाज का चित्र पुनः सामने उभरकर आ जाता है और साथ ही कबीर के

व्यक्तित्व और उनके कृतित्व की आवश्यकता एवं उपादेयता भी महसूस होने लगती है। इस संदर्भ में मनोज पांडेय कहते हैं कि – “आज की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों को देखकर भले ही हमें यह लगता है कि हम उत्तर कबीरयुग में जी रहे हैं, लेकिन अगर हम कबीर की कविता को ध्यान से पढ़ें तो यह स्पष्ट होगा कि उसमें हमारे समय और समाज के अनेक जटिल सामाजिक-सांस्कृतिक प्रश्नों की पहचान के संकेत हैं और उनके उत्तर की संभावनाएं भी हैं।”

कबीरदास ने आज से कई सौ वर्ष पूर्व माव जीवन के जो मूल्य निर्धारित किए थे आज भी उन्हें अस्वीकार करने का साहस नहीं कर सकता, अपितु वह उन्हें नये ढंग से सार्थक एवं प्रासंगिक पाता है। इसका एकमात्र कारण है जो जो जीवन के वास्तविक मूल्य होते हैं, वे सदैव मूल्यवान होते हैं और प्रत्येक युग में समान रूप से सार्थक होते हैं। डॉ. रामदेव शुक्ल का मानना है कि – “जो असली होती उसमें जितनी ताजगी एक युग में



होती और उतनी ही दूसरे युग में भी। उसके मूल में मानवीय करुणा और उससे परिचालित बौद्धिकता होनी चाहिए, जो रुढ़ि भंजन मनुष्य में उद्धार करने के उपायों का संधान कर सके।” इस दृष्टि से कबीर काव्य पूर्णतया खरा उतरता है क्योंकि उन्होंने मानव उद्धार के लिए एक नवीन एवं कल्याणकारी मार्ग का निर्माण किया तथा समस्त मानव जीवन को एकता के सूत्र में बाँधने का अथक परिश्रम भी, जो आज भी उपादेय है।

इस संदर्भ में वीरेन्द्र मोहन कहते हैं — “कबीर के अनुसार प्रेम, विश्वास, सत्यशीलता, क्षमा मनुष्य की सेवा और सद्भावना ही मानवमूल्य है।” आगे वे कहते हैं कि कबीर दास इस ओर हमारा ध्यान दिलाना चाहते हैं कि “मनुष्य इस जीवन को सीमित मानकर संग्रह न करे अच्छे कार्य करे, सत्कर्म करे, और दूसरे जीवों के साथ बुरा व्यवहार न करे। समाज को कलुषित न करें अथवा दूसरों के लिए कष्ट पीड़ा का कारण न बनें।”

अब: कबीरदास एक आदर्शवादी एवं मूल्यवादी व्यक्ति थे। उन्हें किसी भी प्रकार की अनैतिक एवं मूल्यरहित बातें स्वीकार्य नहीं थी। इसी कारण उन्होंने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों में मूल्य निर्धारित किए। सर्वप्रथम कबीर की दृष्टि समाज में व्याप्त जातिगत एवं वर्णगत भेद पर पड़ी, जो कबीर जैसे सामाजिक चेतना से संपन्न कवि के लिए असहनीय था। अतः उन्होंने इसका जबरदस्त विरोध किया। उन्होंने इस बात को स्पष्ट किया कि जब सभी लोग एक ही हाड़—मांस के बने हैं फिर कोई ऊँच और नीच अथवा ब्राह्मण या शूद्र कैसे हो सकता है —

एक बूँद, एक मलमूतर एक चाम एं गूदा
एक जाति ते सब उतपना, कौन बामन कौन सूदा।।

वर्णगत व्यवस्था के कारण समाज में व्याप्त छुआछूत की भावना का भी उन्होंने विरोध किया। वे पंडे को फटकारते हुए कहते हैं —

काहे को कीजिए पांडे छोति विचारा
छोतिहि से उपजा सारा संसारा।

कबीर ने उन मूल्यहीन विधि—विधानों एवं पाखंडों का भी मजाक उड़ाया, जिनका कोई तार्किक महत्व नहीं है। वे कहते हैं कि —

ताथे कहिये लोकाचार, वेद कतेब कथे व्यवहार
जारि—बारि कारि आवै देहा, मूआ पीछे प्रीति सनेहा
जीवन पित्राहि मारहि डंडा, मूवा पित्र ले घाले गंगा
जीवन पित्र कूँ बोलै अपराध, मूवा पीछे देहि सराध
कहि कबीर मोहि अचिरच आवै, कऊवा खाई मित्र कूँ पावै।।

उपर्युक्त अंश से एक ओर यह पता चलता है कि मध्यकाल में निरर्थक कर्मकांडों में लोगों का अत्यधिक विश्वास था तो दूसरी ओर पिता—पुत्र के लड़खड़ाए हुए रिश्ते का भी एहसास होता है। कबीर ने न केवल सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में मूल्यों के निर्धारण का प्रयत्न किया, बल्कि उनकी दृष्टि तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था पर भी थी। उन्होंने आवास, वस्त्र और भोजन को मनुष्य जीवन और ब्राम्हासाधना के लिए आवश्यक स्वीकार किया है —

भूखे भगति न कीजै, यह माला अपनी लीजै

अतः इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी कबीर ने श्रम के मूल्य की स्थापना की है। वे संपत्ति के विलासी पक्ष की भर्त्सना करते हैं और धन—संग्रह की प्रवृत्ति का विरोध करते हैं। उनका मानना है कि संग्रह की प्रवृत्ति ही सामाजिक विषमता का मूल है। इसलिए कबीर कहते हैं कि —

साई इतना दीजिए जामे कुटुम समाय
में भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाए।।

जहां एक ओर कबीरदास जी अत्यधिक धन संचय का विरोध करते हैं वही दूसरी ओर आर्थिक दृष्टि से संपन्न राजाओं और अमीरों पर उद्देशात्मक व्यंग्य करते हैं —

बडा भ्या तो क्या भया, जैसे पेड खजूर
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

कहने का तात्पर्य है कि सेवाभाव ही सबसे बड़ी संपत्ति है वह संपत्तिव्यर्थ है जो किसी के काम न आ सके। कबीरदास का मानना है कि सच्चे धन का कार्य विलासिता नहीं वरन सेवा और दूसरे के हित की कामना है। अतः कबीरदास ने अपने काव्य के माध्यम से कुछ ऐसी उपदेशात्मक बातें कहीं हैं जो स्वांतः सुखाय एवं सर्वहिताय दोनों ही दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान हैं जैसे —

क्षमा बडन को चाहि, छोटन को उत्पात
जो तो को कौंटा बूवे, ताहि बोंब तू फूल
दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय
बिना जीव की स्वास से, लोह भस्म होई जाए।
कबिरा आप ठगाइए और न ठगिए कोय

तथा —

ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय,
औरन को सीतल करें आपहु सीतल होय

अतः कबीरदास द्वारा निर्धारित मानवमूल्य प्रत्येक दृष्टि से सार्थक एवं कल्याणकारी है। इन मूल्यों को अपनाकर मनुष्यमानवता के उच्छ्वरातल पर प्रतिष्ठित हो सकता है। आखिर इसी में जीवन की सार्थकता है।

कबीरदास मानवीयता के अत्यधिक निकट एवं वर्तमान में पूर्णतया प्रासंगिक भी है। इस संदर्भ में शुकदेवसिंह कहते हैं — “कबीर का साहित्य इसलिए प्रासंगिक साहित्य है कि वह जातिवाद और सांप्रदायिकता जैसे अमानवीय संगठनों के खिलाफ है और कबीर का साहित्य इसलिए साहित्य है कि वह सख्ती की सीमा तक भारतीय संदर्भ में समाजवादी और जनवादी है। यह साहित्य आदमी के खिलाफ आदमी की हिकारत का दरवाजा बंद करता है। यह उसकी सबसे बड़ी मानवीयता है।”

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कबीरदास ने समाज में व्याप्त उन मान्यताओं तथा आचरणों के खिलाफ जबरदस्त आवाज उठाई, जो समाज को मूल्यहीनता के गर्त में धकेल रही थी तथा मानवीयता के मार्ग में बाधक थी। उन्होंने हिंसा, शोषण, अत्याचार, सांप्रदायिकता, ईर्ष्या, द्वेष, भेदभाव, ऊँच नीच आदि सभी मूल्यहीन भावों का निषेध किया तथा संसार के समस्त प्राणियों में एक ही ईश्वर के अंश का ही निवास बताकर सभी को समानता के धरातल पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया जिसकी आवश्यकता आज 21वीं सदी में और अधिक महसूस हो रही है।

संदर्भ —

1. कबीर की खोज, राजकिशोर, संपादक, 2001 पृष्ठ 193 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
2. कबीर ग्रंथावली, श्यामसुंदर दास, संपादक, 24वां संस्करण, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित, कबीरदास चिंतन और सृजन, पृष्ठ 57

लॉकडाउन में क्रियाविधि का बदलता हुआ परिवेश



सुश्री राजकुमारी शर्मा
सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी
एम-143, साउथ सिटी-1, गुरुग्राम

कोविड-19 महामारी ने समस्त विश्व को अपनी चपेट में ले लिया है। इससे समस्त क्षेत्रों में गतिविधियां प्रभावित हुई हैं। लोगों का सामाजिक जीवन बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है' कहावत को चरितार्थ करते हुए लोगों को अब इस महामारी के चलते जीवन चलाने के लिए अपनी दिनचर्या बदलनी पड़ी है। सामाजिक दूरी बनाए रखना, चेहरे पर मास्क लगाना तथा भीड़भाड़ वाली जगह में जाने से बचना इत्यादि मापदंडों का पालन करते हुए लोगों ने नए परिवेश में अपने आप को ढाल लिया है। इस अवधि में निम्नलिखित प्रकार की क्रियाविधि अपनाई जा रही है :

1. **वर्क फ्राम होम कल्चर :**
अब वर्क फ्राम होम कल्चर

विकसित हुई है। इसमें ई-मेल के माध्यम से कार्य किया जाता है। कार्यालय द्वारा कर्मियों को कार्य का आवंटन तथा कार्य पूर्ण करने के बाद उनके द्वारा कार्यालय को उसका प्रस्तुतीकरण ई-मेल के माध्यम से किया जाता है। पूर्व में यह कल्चर केवल प्राइवेट सैक्टर की कंपनियों तक ही सीमित थी

परंतु समय की मांग को देखते हुए इसे अब सरकारी क्षेत्र में भी लागू किया गया है। चूंकि भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए सरकारी कार्यालयों में प्रतिदिन केवल 50% स्टाफ की उपस्थिति ही अनिवार्य है। इस व्यवस्था के तहत 50% स्टाफ को



घर से कार्य करने का आदेश दिया जाता है जो कि सरकारी मेल के माध्यम से किया जा रहा है।

2. बैठकों/सेमीनारों का ऑनलाइन आयोजन :

लॉकडाउन की अवधि के दौरान बैठकों/सेमीनारों का आयोजन या तो सामाजिक दूरी तथा अन्य सरकारी मापदंडों का पालन करते हुए किया जा रहा है अथवा इनका आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया जा रहा है। इसका एक ज्वलंत उदाहरण लॉकडाउन के दौरान प्रधानमंत्री जी द्वारा राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ लॉकडाउन की स्थिति का जायजा लेने के लिए समय-समय पर की गई ऑनलाइन बैठकें हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बैठकों का आयोजन या तो वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से अथवा ऑनलाइन किया जा रहा है।

3. विद्यालयों में ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करना :

लॉकडाउन के दौरान सभी विद्यालय बंद हैं। बच्चों का वर्ष व्यर्थ न हो तथा उनकी शिक्षा जारी रहे इसके लिए विद्यालयों में बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई है। अध्यापक बच्चों की

ऑनलाइन कक्षाएं ले रहे हैं। इसमें अध्यापक बच्चों के साथ ऑनलाइन बातचीत करते हैं तथा उनकी कठिनाइयां दूर करते हैं। इसी प्रकार बच्चों की परीक्षा भी ऑनलाइन ही आयोजित की जा रही हैं। ऑनलाइन शिक्षण योजना में अपने नियत कार्यक्रम के अनुसार कार्य चल रहा है। पी.एम. ई-विद्या प्रोग्राम इसका अच्छा उदाहरण है जिसमें डिजिटल/ऑनलाइन शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित की गई है।

4. ऑनलाइन कोचिंग प्रदान करना :

लॉकडाउन लगाने से पहले विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले परीक्षार्थियों को कोचिंग संस्थानों में कोचिंग दी जाती थी। लॉकडाउन के दौरान

चूंकि सभी संस्थान बंद हैं इसलिए परीक्षार्थियों को कोचिंग ऑनलाइन दी जा रही है। इसमें व्याख्याता परीक्षार्थियों को अपना व्याख्यान ऑनलाइन ही देता है। परीक्षार्थियों को परीक्षा के लिए तैयारी की सामग्री भी ऑनलाइन ही उपलब्ध कराई जाती है। यदि परीक्षार्थियों को किसी भी प्रकार का संदेह/कठिनाई हो तो संदेह/कठिनाई को सुनने के बाद उसका समाधान भी व्याख्याता द्वारा ऑनलाइन ही किया जाता है। इसी प्रकार परीक्षार्थियों द्वारा परीक्षा संबंधी अपनी तैयारी के बारे में सुनिश्चित होने के बारे में उनके द्वारा मॉक टेस्ट देने की प्रक्रिया की व्यवस्था भी कोचिंग संस्थानों द्वारा ऑनलाइन उपलब्ध कराई जाती है।



5. चिकित्सा सुविधाएं ऑनलाइन प्रदान करना : कोविड-19 महामारी के चलते सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए आजकल डॉक्टर विशेष बीमारी/परिस्थिति वाले मरीजों को छोड़कर अन्य मरीजों को ऑनलाइन चिकित्सा सुविधा प्रदान कर रहे हैं। ऑनलाइन सुविधा में मरीजों को डॉक्टर से पहले अपाइंटमेंट की तारीख तथा समय लेना होता है। डॉक्टर द्वारा दी गई तारीख तथा समय पर मरीज तथा डॉक्टर के बीच बीमारी के संबंध में बातचीत होती है। मरीज द्वारा बीमारी के बताए गए लक्षणों के आधार पर तथा यदि पहले कोई दवाई डॉक्टर द्वारा दी गई है तो उस पर विचार करने के बाद डॉक्टर मरीज को दवाई देता है। केवल उन्हीं मरीजों को अस्पताल में आने/भर्ती होने की सलाह दी

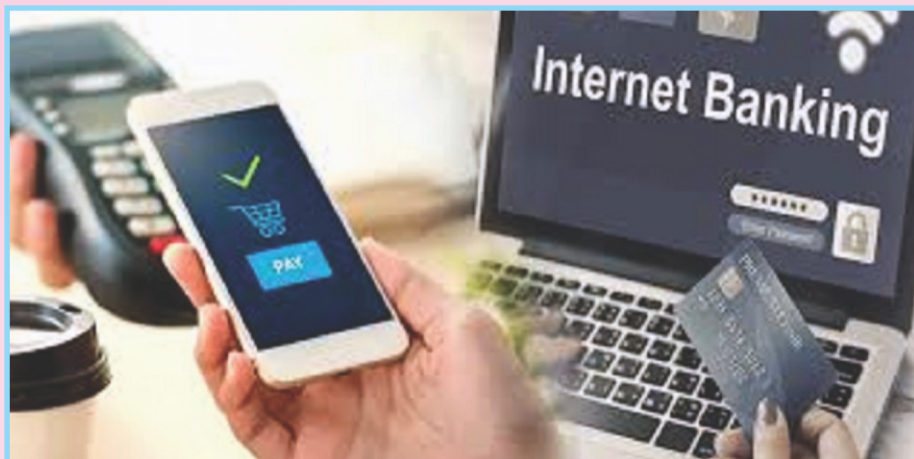


जाती है जिनका तत्काल ऑपरेशन करना अनिवार्य हो/जो गंभीर बीमारी से जूझ रहे हों/आपातकालीन उपचार आवश्यक हो जैसे दुर्घटना, हार्ट अटैक, दिमाग की नस फटना आदि जैसी आपातकालीन स्थिति।

6. सरकारी कार्यालयों के कार्य करने की शैली में परिवर्तन : कोविड-19 महामारी

के चलते समय-समय पर भारत सरकार, राज्य सरकारों तथा विभिन्न कार्यालयों द्वारा जारी किए गए निर्देशों/अनुदेशों/आदेशों (जैसे सामाजिक दूरी बनाए रखना, फेस मास्क का उपयोग करना, समूह 'क' से नीचे के स्टाफ की 50% उपस्थिति, स्टाफ को अलग शिफ्टों में बुलाना आदि) की अनुपालना करते हुए सरकारी कार्यालयों के कार्य करने की शैली में परिवर्तन करना पड़ा है ताकि समस्त कार्य समय पर तथा सुचारु रूप से चल सके। कई कार्यालयों में ई-ऑफिस पद्धति को प्रारंभ किया गया है ताकि सब कुछ एक डिजिटल फॉर्मेट और कागज रहित प्रणाली में रखा जा सके। यह प्रणाली संव्यवहारों में पारदर्शिता, जवाबदेही में समर्थ





व्यय में कमी आई है बल्कि पाठकों को वर्षानुवर्ष पठनीय सामग्री एक ही जगह पर उपलब्ध कराई जा सकती है। सामग्री के कंप्यूटर में सेव रहने के कारण इसका भंडारण लंबे समय तक सुनिश्चित तरीके से किया जा सकता है।

8. ऑनलाइन भुगतान : आज के युग में ऑनलाइन भुगतान का प्रचलन बढ़ गया है। कोविड-19 महामारी के चलते इसका महत्व और भी बढ़ गया है। नकद भुगतान का चलन अब बहुत कम हो गया है। पेटीएम, ईवालेट, क्रेडिट/डेबिट कार्ड, धनराशि का ऑन-लाइन ट्रांसफर आदि ऑनलाइन भुगतान के कुछ उदाहरण हैं। ऑनलाइन भुगतान के माध्यम से धनराशि को लाने-ले जाने का जोखिम नहीं उठाना पड़ता तथा

बनाने और विलम्ब में कमी करने में सहायक होगी। यह संबंधित कर्मचारियों को कहीं से भी कार्य करने में समर्थ बनाती है और इसके बदले कार्यक्षमता में सुधार होता है। ई-आफिस प्रणाली में विभिन्न फाइलों/दस्तावेजों का सृजन किया जाता है। कर्मचारी पूरी सूचना आसानी और शीघ्रता से सीधा प्राप्त कर सकते हैं। इस अवधि में मैनुअल रूप से किए जाने वाले कार्यों में कमी आई है। इससे न केवल कर्मचारियों के बीच प्रत्यक्ष संपर्क में कमी आई है बल्कि परिचालन लागत में भी कमी आई है। ई-आफिस प्रणाली के माध्यम से कार्य करने से कम श्रमबल द्वारा अधिक कार्य का निष्पादन किया जा सकता है।

7. डिजिटीकरण को बढ़ावा : वर्तमान परिस्थितियों में डिजिटीकरण का महत्व और बढ़ गया है।

कई कार्यालयों में पत्रिकाओं का डिजिटीकरण किया गया है। पत्रिकाओं को ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया गया है जिससे कोविड-19 की परिस्थिति में हार्ड कॉपी के रूप में कम से कम लोग इसका प्रयोग करें अपितु ई-पत्रिका के रूप में वेबसाइट के माध्यम से इसे पढ़ा जा सकें। इससे न केवल स्टेशनरी की बचत तथा मुद्रण आदि में किए जाने वाले



इसमें चोरी होने का भय भी नहीं रहता। भुगतानकर्ता के पास भुगतान का पूरा प्रमाण रहता है कि उसने किसको किस दिन कितनी राशि का भुगतान किस माध्यम से किया है। ऑनलाइन भुगतान से काफी हद तक भ्रष्टाचार को कम/समाप्त किया जा सकता है क्योंकि नकद भुगतान के मामले में भ्रष्टाचार होने की संभावना अधिक होती है।

9. ई-कॉमर्स शापिंग : कोविड-19 महामारी के दौर में सामाजिक दूरी तथा अन्य मापदंडों को ध्यान में रखते हुए ऑनलाइन शापिंग के प्रचलन को बढ़ावा मिला है। इससे न केवल लोगों का समय बचता है बल्कि घर बैठे ही लोगों को आवश्यकता की चीजें आसानी से उचित कीमत पर उपलब्ध हो जाती हैं। चूंकि भुगतान भी ऑनलाइन किया जाता है अतः नकद भुगतान के झंझट से भी छुटकारा मिलता है। लोगों के लिए ई-कॉमर्स शापिंग में कई प्लेटफार्म उपलब्ध कराए गए हैं जैसे फ्लिपकार्ट, अमेजन आदि। विभिन्न प्लेटफार्मों के बीच प्रतिस्पर्धा की होड़ लगी होने के कारण ऑनलाइन शापिंग में कई तरह के आकर्षक प्रस्ताव/गिफ्ट इत्यादि से ग्राहकों को आकर्षित किया

जाता है। इससे न केवल समय की बचत के साथ-साथ सही सामान उचित कीमत तथा उचित समय पर लोगों तक पहुंचाया जाता है बल्कि इससे हजारों लोगों को रोजगार भी मिला है।

10. अन्य सुविधाओं के लिए ऑनलाइन बुकिंग : सामान्य जनजीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए अब अन्य सुविधाओं को भी ऑनलाइन प्राप्त किया जा सकता है। जैसे कि यात्रा (हवाई, ट्रेन अथवा बस) टिकट प्राप्त करना, केमिस्ट से दवाईयां मंगवाना, अर्बन क्लैप जैसी कंपनियों से घरेलू सुविधा प्राप्त करना, विभिन्न साइटों से रेडीमेड कपड़े मंगवाना, अन्य घरेलू सामान

दुकानों से ऑर्डर बुक करके प्राप्त करना आदि। इसी प्रकार बहुत सारी अन्य सुविधाएं भी ऑनलाइन बुकिंग के माध्यम से प्राप्त की जा सकती हैं।

अंत में यह कहा जा सकता है कि कोविड-19 महामारी के चलते आज हमारे जीवन की कार्यशैली पूर्णतया बदल गई है। जीवन के हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ गया है जिससे न केवल समय तथा श्रमबल की बचत होती है बल्कि कार्य सुचारु ढंग से तथा समय पर सम्पन्न होता है। हमारा उद्देश्य कार्यान्मुख होने की बजाय परिणामोन्मुख हो गया है।



कोरोना मानव जाति के लिए श्राप या सीख परंतु प्रकृति के लिए वरदान



डॉ. लाखा राम
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार कोरोना वायरस संक्रमण के कुछ इक्के-दुक्के मामले सर्वप्रथम चीन में सामने आए और कुछ माह बाद ही इसने वैश्विक महामारी का रूप धारण कर लिया। निःसंदेह, कोरोना महामारी वर्तमान पीढ़ी के लिए एक आश्चर्यचकित कर देने वाली घटना है क्योंकि महामारी का ऐसा प्रकोप, पूरी दुनिया में पहले न कभी देखा और न ही कभी सुना था। एक ऐसी महामारी जिसने पूरी दुनिया में हाहाकार मचाकर रख दिया है। इस महामारी ने लोगों को यह अहसास करा दिया कि मनुष्य के पास धन उपलब्ध होना ही पर्याप्त नहीं है। यह गौरतलब है कि कोविड-19 एक प्रकार के वायरस से फैलने वाली बीमारी है जो मानव के श्वसन तंत्र को सर्वाधिक प्रभावित करती है और

इसके शुरुआती लक्षण सर्दी, जुखाम एवं खांसी के रूप में दिखाई देते हैं। यह बीमारी एक मनुष्य से दूसरे मनुष्यों में खांसने अथवा छींकने से फैलती है। विश्व के लगभग दो सौ से अधिक देशों में फैल चुकी इस महामारी को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वैश्विक आपदा घोषित किया है।

दरअसल, बेकाबू होते इस वायरस के काबू करने के प्रयास के तौर पर विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा आने जाने तथा सामाजिक मेल-जोल पर बंदिशें लगाने के कारण दुनिया की 7.8 बिलियन की आबादी में से लगभग एक तिहाई से अधिक आबादी अपने घरों में बंद रहने को मजबूर है। इस महामारी से न जाने कितने लोग कालग्रस्त हुए, न जाने कितने बेरोजगार हुए। इस महामारी ने विशेष रूप से

पलायन कर रहे श्रमिकों द्वारा झेले गये अपार कष्ट तथा समाज के निर्धन वर्ग के सम्मुख खड़े रोजी-रोटी के संकट ने आम लोगों के दिलों को अंदर तक झकझोर दिया है। मजदूर वर्ग की दिक्कतों को देखकर आखें नम हो जाती है। एक समय तो हालात यह हो गए कि सब घरों में बंद हैं, न कोई मनोरंजन के साधन, न धुंआ फूंकती गाड़ियां, न शोर-शराबा, न अनगिनत हवाई उड़ाने, न एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ दिखाई दे रही थी, दिखाई दे रहा था तो वह केवल जीने के लिए संघर्ष। शायद ऐसी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी कि देश में रेल, हवाई-जहाज, सड़क परिवहन, मंदिर, मस्जिद, चर्च एवं गुरुद्वारों के द्वार श्रद्धालुओं और आम जनता के लिए कभी भी बंद हो सकते हैं।

निःसंदेह, इस बीमारी ने मानव के दैनिक कार्यकलाप, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक गतिविधियों को भी प्रभावित करने के साथ ही प्रकृति में भी बड़ा बदलाव लाकर रख दिया है। इसने व्यापार करने का तरीका, पूजा करने का तरीका, सामाजिक रीति-रिवाजों एवं संस्कारों का तरीका ही बदल दिया है। जनता कर्फ्यू भी आम जनता को पहली बार देखने को मिला। इस प्रकार इस महामारी ने सारे सामाजिक ताने-बाने को ही छिन्न-भिन्न कर दिया है। इस भयावह महामारी की रोकथाम के लिए चिकित्सकों ने लोगों को हाथों को बार-बार साबुन से धोने, मास्क पहनने, सामाजिक दूरी बनाकर रखने, रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, लॉकडाउन के दौरान प्रशासनिक नियमों का सख्ती से पालन करने, प्रतिदिन योगाभ्यास करने, शरीर व परिवेश की सफाई करने तथा प्राकृतिक संसाधनों का अधिकाधिक प्रयोग करने पर विशेष रूप से बल दिया है।

यद्यपि यह महामारी मानव जाति के लिए श्राप या सीख हो सकती है परंतु प्रकृति के लिए यह वरदान

साबित हो रही है। प्रायः मानव प्रकृति को केवल दोहना जानता है उसे सजाना-संवारना नहीं। लेकिन इस महामारी ने प्रकृति के जख्मों को भरना शुरू कर दिया है। लॉकडाउन की वजह से पेड़-पौधे, जीव-जंतु, पशु-पक्षी, नदी-झरनों के साथ ही ओजोन परत भी साफ-सुथरी व सुरक्षित दिखाई देने लगी है। पंजाब में सतलुज और ब्यास का पानी पहले से काफी साफ हो गया है। इस कारण हरिके पत्तन में डाल्फिन मछलियां खेलती देखी जा रही हैं। वहीं उत्तराखंड में लॉकडाउन के दौरान हरिद्वार, ऋषिकेश, टिहरी, देवप्रयाग और उत्तरकाशी के गंगा तट भी वीरान हो गए थे। हर की पौड़ी समेत सभी गंगा घाटों पर गंगा आरती देखने के लिए श्रद्धालुओं पर पाबंदी लगा दी गई थी। आज भी हरिद्वार और ऋषिकेश के सभी उद्योग बंद पड़े हैं। इससे गंगा जल के स्वच्छ होने से यहां बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षियों ने भी डेरा डाल दिया है। गंगा के तटों पर इन पक्षियों को आसानी से बड़े-बड़े समूह में देखा जा सकता है। भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान,

कोलकाता के एक प्रोफेसर सुप्रिय मित्रा समेत कई भूकंप वैज्ञानिकों का मानना है कि धरती की सतह में अब कंपन धीरे हो रहा है। एक शोध के अनुसार बेल्जियम की राजधानी ब्रसेल्स में कोविड-19 के प्रसार को रोकने के लिए अपनाए गए बंद की वजह से मानव जनित भूकंपीय शोर में करीब 30 प्रतिशत की कमी आई है।

सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सी.एस.ई.) की रिपोर्ट के अनुसार, कोविड-19 महामारी के कारण वैश्विक गरीबी दर में बाईस वर्षों में पहली बार वृद्धि होगी। भारत की गरीब आबादी में एक करोड़ बीस लाख लोग और जुड़ जाएंगे, जो विश्व में सर्वाधिक हैं। विश्व खाद्य कार्यक्रम के कार्यकारी निदेशक डेविड बीस्ले ने कहा कि पूरी दुनिया में हर रात बियासी करोड़ दस लाख लोग भूखे पेट सोते हैं। इसके अलावा तेरह करोड़ पचास लाख लोग भुखमरी या उससे भी बुरी स्थिति का सामना कर रहे हैं। विश्व खाद्य कार्यक्रम के विश्लेषण में पता चला है कि 2020 के अंत तक तेरह करोड़ और लोग भुखमरी की कगार पर पहुंच सकते हैं, इस

तरह भूखमरी का सामना कर रहे लोगों की कुल संख्या बढ़कर छब्बीस करोड़ पचास लाख तक पहुंच सकती हैं। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र के श्रम निकाय ने चेतावनी दी थी कि कोरोना वायरस संकट के कारण भारत में अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाले लगभग चालीस करोड़ लोग गरीबी में फंस सकते हैं और अनुमान है कि इस साल दुनियाभर में 19.5 करोड़ लोगों की पूर्णकालिक नौकरी छूट सकती है और व्यापक पैमाने पर भूखमरी बढ़ सकती है। यूनिसेफ ने भी कहा है

कि कोरोना वायरस महामारी बच्चों की शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य को खतरा पहुंचा रही है। इतना ही नहीं कोरोना महामारी के कारण वैश्विक स्वास्थ्य संकट भी गहराता जा रहा है और सुस्ती की मार झेल रही भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी और दबाव बढ़ गया है। वैश्विक स्तर पर भी इस वर्ष पिछले साल की तुलना में सकल घरेलू उत्पाद में 6 प्रतिशत की गिरावट आने का अनुमान है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आई.एल.ओ.) ने अपनी रिपोर्ट 'आई.एल.ओ. निगरानी – दूसरा संस्करण : कोविड-19 और

वैश्विक कामकाज' में कोरोना वायरस संकट को दूसरे विश्व युद्ध के बाद का सबसे भयानक संकट बताया है।

इस प्रकार व्यापक पैमाने पर अफरा-तफरी मचाने वाली इस वैश्विक महामारी के भयावह दुष्परिणाम भुगतने के लिए मानव जाति को भविष्य में भी तैयार रहना होगा। आज पूरी दुनिया कोरोना वायरस की वैक्सीन बनाने के लिए एकजुट होकर जोर-शोर से चिकित्सा के क्षेत्र में काम कर रही है।



राजभाषा हिंदी का उद्देश्य

संजीव कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हरियाणा, चंडीगढ़

एक लोकतांत्रिक देश में जनमानस का कल्याण ही सर्वोपरि होता है। लोगों द्वारा चुनी गई सरकार लोगों के हितों को ध्यान में रखकर ही सभी नीतियां बनाती है, इन नीतियों को जनमानस तक पहुंचाने के लिए सरकार प्रशासनिक प्रणाली का सहारा लेती है। किसी भी देश की राजभाषा इस प्रणाली में अहम योगदान निभाती है। सरकार की नीतियों, जनकल्याण की योजनाओं व निर्देशों को लोगों तक पहुंचाने के लिए भाषा महत्वपूर्ण होती है, यदि कोई भाषा लोगों के बीच अस्पष्टता व भ्रम पैदा करती है, तो उसका मुख्य उद्देश्य खत्म हो जाता है। भाषा वही उपयोगी और सार्थ सिद्ध होती है, जो लोगों में स्पष्टता पैदा करे।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे देश की प्रशासनिक प्रणाली लंबे समय से अंग्रेजों के अधीन होने के

कारण इस पर अंग्रेजी भाषा का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। इसके परिणामस्वरूप आज भी सरकारी काम-काज में अंग्रेजी का काफी वर्चस्व देखा जा सकता है। उस समय जब हमारे जन प्रतिनिधियों ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया था, तो उन्होंने काफी विचार-विमर्श करने के पश्चात ही हिंदी को संवैधानिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया था क्योंकि हिंदी ही देश के बहुत बड़े भू-भाग पर बोली व समझी जाती है। भारत एक बहुभाषी और विभिन्न संस्कृतियों वाला विशाल देश है, इन विभिन्नताओं को हिंदी ने ही एक सूत्र में पिरोकर रखा है। वर्तमान में अगर हम आकलन करें तो अंग्रेजी भाषा अभी भी बहुत कम प्रतिशत लोगों के द्वारा ही स्पष्ट रूप से समझी जाती है। भाषा का उद्गम जिस स्थान पर होता है उसमें उस स्थान के संस्कार,

संस्कृति, व्यवहार व भावनाओं का विलय हो जाता है, हिंदी ही इन जनभावनाओं को समझाने वाली भाषा है। लोगों की कठिनाईयों व समस्याओं के निराकरण के लिए सबसे पहले लोगों के दिलों से जुड़ना पड़ता है, इसके लिए भाषा का महत्व बहुत बढ़ जाता है। यदि भाषा अपनेपन का अहसास दिलाती है, तो समस्याओं व कठिनाईयों का समूल नाश किया जा सकता है। हिंदी ही वह भाषा है जो इसके लिए बहुत बड़ा किरदार निभा रही है।

प्रत्येक व्यक्ति जो देश की प्रशासनिक प्रणाली से जुड़ा है, उनका यह नैतिक कर्तव्य है कि वे अपने काम-काज में ज्यादा से ज्यादा राजभाषा हिंदी का प्रयोग करें, ताकि कोई भी बात जनमानस तक आसानी से पहुंच सके और उनके जीवन में परिवर्तन आ सके।

बंगाल



योगेश कुमार मिश्र
वरिष्ठ अनुवादक
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
पंजाब, चंडीगढ़

भारत वर्ष बौद्धिक परम्पराओं का अग्रदूत रहा है। इसमें भी बंगाल देशभक्ति, अध्यात्म और ज्ञान और लेखनी से धन्य यह पुण्य भूमि कला से भी समृद्ध रहा है। आज भी बंगाल के सभी परिवारों में माता-पिता अपने बच्चों को कोई एक कला अवश्य सिखाते हैं। संगीत, ललित कला, नृत्य, अभिनय या वादन में से कोई एक या एक से अधिक पर अधिकार होना उनके रक्त में है। देशभक्ति की बात हो तो प्रथम क्रांतिकारी जिन्हें फांसी दी गई वे पुण्यात्मा खुदीराम बोस इसी भूमि से थे। भारत को अपने गंतव्य अर्थात् स्वतंत्रता की चौखट पर ले जाने वाले नेता जी सुभाष चन्द्र बोस भी इसी प्रांत से थे। लाल, बाल, पाल के पाल हों या गुरुवर रविन्द्रनाथ ठाकुर या रासबिहारी बोस सभी बंगाल से थे। कालीकट के तट से

अंग्रेज प्रवेश तो कर गए पर विरोध का साहित्यिक, स्वर हो या समग्र प्रयास बंगाल भूमि के उपजाऊपन ने अंग्रेजों के दांत खट्टे कई बार किए। प्रेसीडेंसी कॉलेज का वह छात्र जिसे “Examinee is better than examiner” की कालजयी अभ्युक्ति मिली और बाद में भारत का पहला प्रथम नागरिक बना, उनके ज्ञान की साधना स्थली और राजाराम मोहन राय का पुर्नजागरण सबका परिचय उसी स्थल से सहज दृष्टिगोचर होता है। बंगाल को ‘सोनार बांग्ला’ भी कहा जाता है इससे पता चलता है कि बंगाल की समृद्धि पर संदेह नहीं किया जा सकता। उपज एवं सिंचाई, चावल, कपड़े, मिठाइयाँ, बुनकारी, मस्त्य पालन, चाय, जूट आदि के उत्पादन वाला यह क्षेत्र भारत में अपनी एक अलग पहचान रखता है। वर्तमान में ‘तीस्ता बैराज

परियोजना’ और ‘सुवर्ण रेखा बैराज परियोजना’ पर कार्य प्रगति पर है। उपर्युक्त फसलों की सिंचाई बेहतर हो सके इसके लिए उल्लेखित परियोजना से 51.475 हजार हेक्टेयर सिंचाई क्षमता प्राप्त करने का लक्ष्य है। पुरुलिया जिले में मध्यम 32 सिंचाई योजनाओं में से 25 सिंचाई योजनाएं पूरी हो चुकी हैं। राज्य में अंतिम लघु सिंचाई 44.34 लाख हेक्टेयर आंकी गई है जिसमें 31.34 लाख हेक्टेयर भूमि संसाधनों तथा 13.00 लाख हेक्टेयर भूमि भूजल संसाधनों से सिंचित की जानी है।

बिजली : पश्चिम बंगाल में इस समय ‘प. बंगाल विद्युत विकास निगम लिमिटेड’, ‘प. बंगाल राज्य बिजली बोर्ड’, ‘कोलकाता विद्युत आपूर्ति निगम’, ‘दुर्गापुर परियोजना लि.’, ‘दिशेरगढ़ विद्युत आपूर्ति

निगम' इत्यादि द्वारा बिजली का उत्पादन किया जाता है।

संस्कृति व साहित्य : पूरे भारत वर्ष में वैदिक सभ्यता आरंभ से ही रही है। उत्तरोत्तर में बौद्ध परंपरा से तंत्र एवं वाम मार्ग का अविर्भाव हुआ। बंगालियों ने सदैव साहित्य कला, संगीत और रंगमंच को संरक्षण दिया है। बांग्ला साहित्य का अविर्भाव 12वीं सदी से पहले हुआ। हिन्दू धर्म के एक सघन भावनात्मक स्वरूप, चैतन्य आन्दोलन को मध्यकालीन संत चैतन्य (1485-1533) ने प्रेरित किया। रंगमंच यहाँ लोकप्रिय है यहां की 'जात्रा' खुले रंगमंच पर

होने वाला पारंपरिक कार्यक्रम है जिसका कथा वस्तु अब स्पष्ट रूप से पौराणिक एवं ऐतिहासिक विषयों में समकालीन विषय वस्तु में परिवर्तित हो रही है और यह ग्रामीण और शहरी, दोनों स्थानों में लोकप्रिय है। साहित्य, संगीत और कला की राजधानी के रूप में कोलकाता विश्व प्रसिद्ध है। कृतिवास रामायण, आनंदमठ तथा नेतृत्व, राजनीति में वामपंथ विचार धारा, सत्यजीत रे, ज्योति बसु, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, सोमनाथ चटर्जी आदि अनेक स्मृतियां समेटे बंगाल अपने विरासत के कारण दूर से ही अलग पहचान रखता है।

एक तरफ बंगाल अपनी विशेषताओं की झलक दिखाता है दूसरी तरफ इसने जो पीड़ा अनुभव की है वह शब्दातीत है। ऐतिहासिक आधार से देखें तो 'काला पहाड़ से लेकर नोआखोली, भारत पाकिस्तान विभाजन और 'डायरेक्ट एक्शन डे' काले अक्षरों से लिखे जाने के दुर्योग देश बंगाल ने झेले हैं। पंजाब और बंगाल एक ओर जहां पाँच नदियां, पाँच ककार आदि की विशेषता है जहाँ लड़कियाँ कम होती हैं दूसरी तरफ बंगाल जहाँ पंचमकार है, जहाँ लड़कियाँ अधिक होती हैं, लिंगानुपात की दृष्टि से विपरीत दोनों ने विभाजन, दंगा और सांप्रदायिकता की पीड़ा को अपने वक्षस्थल पर हृदय विदारक घाव के रूप में झेला। बांग्लादेश बंगाल से तो आजादी के समय अलग हुआ लेकिन इसके पूर्व में 1905 में भारत के तत्कालीन वाइसराय कार्जन के द्वारा मुस्लिम बहुल प्रांत का सृजन करने के उद्देश्य से ही भारत से बंगाल को दो भागों में बांट दिए जाने का निर्णय लिया गया था। बंगाल-विभाजन 16 अक्टूबर 1905 से प्रभावी हुआ। इतिहास में इसे बंगभंग के नाम से भी जाना जाता है।



दक्षिणेश्वर काली मन्दिर का सुंदर दृश्य

आज़ाद हिन्द फौज का गठन हो या शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में भारत का माथा ऊँचा करने की बारी हो, गीतांजली, गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स, अमर्त्यसेन को नोबल पुरस्कार की बारी हो या सुष्मिता सेन को ब्रह्माण्ड सुंदरी के खिताब से नवाज़ा जाना हो। भारतीय क्रिकेट जगत के आक्रामक खेल के लिए आगे बढ़ाने वाले सौरभ गांगुली की बात हो या श्री राम कृष्ण परमहंस की हृदयस्पर्शी भूमिका अदा करने वाले मिथुन चक्रवर्ती की बात हो या 'श्री कृष्ण' के श्री कृष्ण की भूमि में अरिदमन बनर्जी हो, संगीत में पंचम दा के नाम से मशहूर आर. डी. बर्मन, दादामुनी के नाम से मशहूर अशोक कुमार हो या सदाबहार गायक किशोर कुमार हो या पी.सी. सरकार का जादू सभी बंगाल की सोंधी मिट्टी की खुशबू प्रदान करते हैं।

बंगाल की धरती मातृशक्ति आराधक है। कालीघाट की कालीमाता भारत के शक्तिपीठ में से एक है। रानी रास मणि द्वारा स्थापित तथा ठाकुर रामकृष्ण परमहंस द्वारा पूजित—अर्चित

दक्षिणेश्वरी काली माता का वैभव अतुल्य है। गंगा किनारे माता का भव्य मंदिर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त और समयक व्यवस्था वाला स्थान है। प्रकृतिवाद की छाया में स्थापित विश्वविद्यालय, रविन्द्रनाथ के सपनों की विद्यास्थली विश्व भारती शांति निकेतन देश के अग्रणी शिक्षा संस्थानों में से एक हैं।

भारतवर्ष यूं भी अनूठा देश है, चाहे वह भौगोलिक स्थिति हो या मौसम का मिज़ाज, तीन तरफ से जल से घिरा यह पेनांसुलार (प्रायद्वीप) विभिन्न संस्कृति, भाषा—भाषी, धर्म, मत, संप्रदायों का गढ़ है। इसी से आगे चलते हुए इसकी विभिन्नताओं का आधार क्षेत्रीय, प्रांतीय विशेषता रही है। सामाजिक

संस्कृति को सूत्रपात करता अनेक मत, पंथ और भाषा से जुड़ा हमारा देश महान है और हमारी आस्था इसके प्रति अविचल है। इन्हीं आस्था का आधार हमारा ऐक्य है, देश की विरासत को बढ़ाने वाले सभी राज्यों का योगदान अप्रतिम है, अद्वितीय है पर बंगाल की बौद्धिक संपदा ने भारत का भाल सदैव उन्नत रखा है बंगाल की महिमा भागवत पुराण में भी आती है जहाँ भक्ति तरुण अवस्था में उपस्थित है। बंगाल की महान परंपरा भारत की महानता में चार चाँद लगाने वाली रही है आगे भी भारत की श्रेष्ठता में बंगाल अग्रणी भूमिका निभाता रहे यही कामना है।



सपनों की उड़ान

अविनाश कुंदन

लेखापरीक्षक

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II

तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नै-600018

“हौसलों की उड़ान ऐसी हो कि आसमान छोटा लगने लगे। रोशनी बिखेरने दुनिया में हर रोज़ सूरज को जलना पड़ता है।”

डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारतीय वायु सेना में पायलट न बन सके मगर जिन्दगी की ऐसी उड़ान भरी कि आसमान छोटा पड़ गया।

रामेश्वरम की गलियों में अखबार बेचने वाले एक छह साल के बच्चे को इस बात का इल्म भी नहीं था कि उसे भारत रत्न से नवाज़ा जाएगा, पूरा देश उनका परिवार होगा और वे भारत के मिसाइल मैन कहलायेंगे। राष्ट्रीय वैमानिक एवं अंतरिक्ष प्रशासन (नासा) में कार्यरत होकर वे अपनी जिन्दगी को और भी बेहतर बना सकते थे, लेकिन छः माह की ट्रेनिंग के बाद उन्होंने वापस भारत आने का फैसला कर लिया और एक ऐसे काम में लग गए जो अब से पहले कभी भारत में नहीं हुआ। भारत को परमाणु समृद्ध देश बनाने की यह एक ऐसी शुरुआत थी जिस पर पूरे देश की आन, बान और शान लगी हुई थी, लेकिन उन्होंने यह कर दिखाया और काफी उतार-चढ़ाव के बावजूद भी भारत को परमाणु रहित देश घोषित किया गया। यह तो बस उनके सफ़र का एक हिस्सा था।

सेवा-निवृत्ति के कुछ साल बाद उन्हें भारत के राष्ट्रपति पद से सम्मानित किया गया और उन्होंने इसे बखूबी निभाया। लेकिन क्या यह कहानी उनकी सफलता की है या फिर उनकी अनगिनत डिग्रियों की? नहीं, यह कहानी उस सवाल की है, कि आखिर क्यों वे भारत को ही अपनी कर्मभूमि बनाना चाहते थे। उनकी यह प्रेरणादायक सोच

और सुदृढ़ संकल्प ही था कि वे लाखों नौजवानों की प्रेरणा बन सके। उन्होंने इस देश को उस समय चुना था जब यह देश उनके काबिल नहीं था। जब हमारे देश में काबिलियत की जरूरत थी, तब उसे देने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे।

एक मध्यम वर्गीय परिवार का बच्चा अगर अपने बहन के गहने बेचकर पढ़ाई करता है तो उस परिवार को उससे कई उम्मीदें हो जाती हैं। लेकिन उनके परिवार ने आज तक इस देश से अपने बेटे के बलिदान का कर्ज़ नहीं माँगा। नमन है उनके परिवार को जिसने जात-पात, अमीरी-गरीबी से ऊपर अपने देश को चुना।

डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक ऐसे प्रेरणास्रोत हैं जिन्होंने अपनी उड़ानों को अपनी पैर ज़मीन से खिंचने नहीं दिए।

एक 10/12 के कमरे में रहने वाला भारत का पहला मिसाइल मैन, भारत का ग्यारहवाँ राष्ट्रपति जिसने अपने आठ साल की पेंशन को दान कर दिया अपनी गाँव की भलाई के लिए, जिनकी स्मृति के नाम पर सिर्फ छः जोड़े कपड़े, 2500 किताबें, एक पद्मश्री, भारतरत्न, पद्मभूषण और 16 डॉक्टरेट की डिग्रियाँ थी। इनका जन्म रामेश्वरम में, कर्म पूरे भारत के लिए और मृत्यु भी बच्चों को संबोधित करते हुए शिलांग में हुई। उन्होंने अपने जीवन को मरणोपरान्त भी अमर कर दिया।

शब्द कम पड़ जाते हैं, जब कहानियाँ बड़ी होती हैं अक्सर स्याहियों की नोक पर, किस्से नहीं लिखे जाते।

युवा मन का दर्द



पवन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
तमिलनाडु, चेन्नै-600018

आज के दौर में, युवा मन का दर्द काफी गहरा है। अपने सपनों और अपनों को बोझ तले युवा मन का अस्तित्व चरमरा रहा है। उनमें कुछ खास करने की चाहत है, पर कैसे, उनको पता नहीं, उनको कोई बताने वाला, राह दिखाने वाला नहीं मिलता।

माँ-बाप अपने बच्चों को आसमान की बुलंदियों पर देखना चाहते हैं, लेकिन बेटे और बेटी के दिल का हाल जानने के लिए उनके पास वक्त नहीं है। पढ़ाई और अन्य खर्चों के लिए धन जुटा देना यही उनके लिए सब कुछ है। समय-समय पर उनको जताते रहते हैं कि मैंने तुम्हारे लिए क्या-क्या नहीं किया है, तुम्हारे लिए क्या सुविधा और सहूलियत जुटाई हैं। उनको इन बातों के बोझ से उनके लाड़ले और लाड़ली का

मन दबा जा रहा है, इसकी उनको खबर तक नहीं है।

युवक व युवतियों के इस दर्द की पहली शुरुआत तब होती है जब वो किशोर अवस्था में कदम रखते हैं। वह अवस्था शरीर और मन के परिवर्तन का दौर होता है। लड़का हो या लड़की मैंने देखा है कि यह परिवर्तन दोनों में आता है। परिवर्तन के साथ मन की चाहत भी बदलती है, कल्पनाओं और सपनों का नया संसार शुरू होता है। इसको वे बताना तो चाहते हैं, पर उन्हें कोई सुनने को तैयार नहीं होता। और हाँ, बात-बात में माँ-बाप से झिड़कियाँ भी सुनने को मिलती है कि अब तुम छोटे नहीं रहे, तुम को समझना चाहिए, कम से कम अब तुम्हें अपनी जिम्मेदारी का एहसास होना चाहिए। बहुत हो गया खेल-

खिलवाड़ अब तो सुधर जाओ।

जवाब में वह कहना चाहते हैं कि मेरी बात सुन लो, पापा मेरी भी बात सुन लो, पर उनकी यह आवाज कानों में ही गूँज कर रह जाती है। उनको सुनने वाला कोई नहीं होता। इसी अवस्था में करियर और पढ़ाई की दिशा तय होती है — मेडिकल, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट, कम्प्यूटर या कोई और दिशा में उनका भविष्य तय होता है। बहुत कम ही माता-पिता होते हैं जो अपने बच्चों की रुचि के अनुसार काम करते हैं। अधिकतर माँ-बाप अपनी प्रतिष्ठा के चक्कर में अपने बच्चों का भविष्य खराब कर देते हैं और बच्चे भी क्या करें चुपचाप जो पापा कहते हैं वो कर लेते हैं, आखिर उनके पैसों पर ज़िंदगी जो जीनी है, यहीं से शुरुआत होती है, बेमेल जीवन का दर्द।

जब पहिया सही नहीं चल पाता है तो अभिभावकों की कड़ी फटकार सुनने को मिलती है। अपने निकम्मेपन का प्रमाण लगभग रोज ही सुनने को मिलता है। हर बात पर उनको यह बताया जाता है कि वे किसी काम के नहीं हैं। कभी-कभी तो स्थिति यह बन जाती है कि नवयुवकों में डर सा समा जाता है। मन चीखता है, पर यह चीख अंदर ही अंदर घुटकर रह जाती है।

यह दर्द किसी एक का नहीं, लगभग सभी युवाओं का है। दरअसल किसी को किसी से कोई मतलब नहीं, हमारे पापा हमारे लिए पैसा जुटाते हैं, ज्यादा हुआ तो हमारे लिए केवल सपनों को घास-भूसा की चिंगारी लगाते हैं। उनको अपने दोस्तों, रिश्तेदारों को यह बताने में खुशी मिलती है कि उनका लड़का डॉक्टर या इंजीनियर बन रहा है।

डॉक्टर या इंजीनियर बनते ही बड़ी-सी नौकरी मिल जाएगी। उन्होंने कभी बात की तो जिम्मेदारी और नैतिकता की घुट्टी पिला देते हैं। जो दोस्त हैं वे टाइमपास हैं क्योंकि अपने-अपने सपनों के घोड़ों पर सरपट दौड़ रहे हैं। इसके लिए माँ-बाप को सकारात्मक रवैया अपनाना चाहिए। युवा मन का दर्द हमारे बड़े लोगों को समझना होगा, तभी हम कामयाब जीवन जी सकेंगे।



अपने विषय में कुछ कहना पड़े तो बहुत कठिन हो जाता है क्योंकि अपने दोष देखना आपको अप्रिय लगता है और उनको अनदेखा करना औरों का।

- महादेवी वर्मा

फूलदानी

श्रीमती राजश्री के. शाह
वरिष्ठ लेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
गुजरात, रेसकोर्स रोड,
राजकोट-360001

‘फूलदानी’ शब्द सुनते ही हमारा मन और हृदय खुशबू से भर जाता है। आंखों के सामने रंग-बिरंगे फूल दिखाई देते हैं, क्योंकि हम फूलदानी में गुलाब, मोगरा, जूही, चंपा, चमेली, सूर्यमुखी और रातरानी जैसे फूल सजाते हैं। वे अपनी खुशबू से हमारे मन को महकाते हैं, घर की शोभा बढ़ाते हैं और अलग-अलग संदेश भी देते हैं। मोगरा-जूही-रातरानी जैसे श्वेत फूल शांति का, गुलाब शौर्य का संदेश देते हैं। फूलदानी के हरेक फूल के अलग-अलग रंग, खुशबू और गुण होते हैं। लेकिन हम फूलदानी में थोर के फूल को नहीं सजाते क्योंकि उसमें रंग तो होता है मगर खुशबू या गुण नहीं होते।

हमारा जीवन भी फूलदानी की तरह है। हम जीवन में जितने गुणों को सजाएंगे, हमारा जीवन उतना ही शांतिमय, रंग-बिरंगा और खुशबूदार होगा। हमें जीवन की

शांति, सेवा, अहिंसा, विश्वास और निर्लोभ जैसे गुण अपनाने चाहिए। हमें जीवन में राग-मोह-लोभ-अहंकार को पनपने नहीं देना चाहिए नहीं तो असत्य, हिंसा, द्वेष जैसे अवगुण तो उसके पीछे-पीछे मुफ्त में हमारे जीवन में प्रवेश कर जाएंगे।

आजकल इंसान को पतन की ओर ले जाने वाले कई महादूषण हैं – जिसमें पहला है : अहंकार – इस दूषण को दर्शाने के लिए मैं चुटकुला बताती हूँ। एक पाठशाला में एक बार गुजराती के शिक्षक को छुट्टी पर जाना था तो उन्होंने अंग्रेजी के शिक्षक से पूछा कि क्या आप मेरी गुजराती की क्लास ले लेंगे? लेकिन अंग्रेजी का शिक्षक अहंकारी था, उसने अंग्रेजी में कहा “I Have Neither Leva Nor Deva With Your Gujrati” तो गुजराती का शिक्षक भी अहंकारी था उसने अंग्रेजी में जवाब दिया “A Pipe Is Not Broken Upon You” क्योंकि

यह गुजराती की कहावत का उसने अंग्रेजी अनुवाद किया।

इंसान का दूसरा बड़ा दुश्मन है : लोभ – मगनभाई स्वभाव से खूब लोभी थे। उसके परिवार वाले उसके ऐसे स्वभाव से तंग आ गये थे। एक दिन मगनभाई छत पर टहलने गए, किसी कारण से छत के ऊपर से नीचे गिरे गए। गिरते हुए रसोईघर की खिड़की से गुजरे तो उन्होंने पत्नी को बोला “आज मेरे हिस्से का खाना मत बनाना।”

इस महाशय के बारे में आप क्या कहेंगे! ऐसी लोभ से बचाई हुई संपत्ति को गरीबों की मदद पर लगाएंगे तो कुछ तो समाज-सेवा होगी।

तीसरा दुश्मन है : माया – एक डॉक्टर को उसके मित्र ने पूछा कि तुमने कभी किसी मरीज की जाँच करने में गलती की है? तो डॉक्टर ने मुस्कराकर जवाब दिया – “हाँ”। एक दिन एक महिला मेरे पास पेट

दर्द की शिकायत लेकर आई थी, उसको मैंने सामान्य दर्द है कहकर दवाई दी थी, बाद में पता चला वो तो इतनी धनवान थी कि अपेंडिक्स कहकर उसके पेट का ऑपरेशन किया जा सकता था।” पैसे की माया इंसान को कैसे-कैसे नाच नचाती है और सेवा के क्षेत्र में कुछ ऐसे लालची लोगों ने इस क्षेत्र को बदनाम कर दिया है।

चौथा दूषण है : क्रोध — इस दूषण का कोई चुटकुला मुश्किल है तो उसको मैं कहानी के जरिए प्रस्तुत करती हूँ। एक बार एक राजा जंगल में शिकार के लिए निकले थे वह अपने साथियों को पीछे छोड़ गए और भटक गए थे। राजा को बहुत प्यास लगी थी और थकान की वजह से एक पेड़ के नीचे उसने विश्राम ले लिया। उसने देखा पेड़ से पानी टपक रहा था, राजा पत्ते की कटोरी बनाकर पानी इकट्ठा करके पीने ही वाला था कि एक तोते ने पत्ते को झटक कर पानी गिरा दिया, ऐसा तीन बार

हुआ तो राजा को एकदम गुस्सा आया और आवेश में आकर चौथी बार जब तोता पत्ते को गिराने आया तो उसने तोते को पकड़ कर मार दिया। अब पानी भी टपकना भी बंद हो गया था। राजा ने जाँच करने के लिए ऊपर देखा तो एक साँप सरक रहा था और उसके मुँह से ज़हर टपक रहा था। ये देखकर राजा के होश उड़ गए, उसने सोचा तोते ने आज मुझे बचा लिया वरना क्या होता!!! उसके पश्चाताप का ठिकाना नहीं रहा मगर आवेश में

आकर राजा ने तोते को मार दिया था, वह फिर से जिंदा नहीं हो सकता था। तो इस भयानक दुशंका को हमें जीवन में कभी पनपने नहीं देना है, जोकि हमें बर्बाद कर सकता है।

हमें अपने जीवन में सद्गुणों को स्थान देकर अपना जीवन ऐसे जीना है कि लोग हमारे बाद भी हमें ऐसे याद करें जैसे फूल मुरझाने के बाद भी खुशबू देते हैं और पीस जाने के बाद इत्र बनकर हमारे जीवन को महकाते हैं।



**जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के
गौरव का अनुभव नहीं है वह उन्नत हो सकता।**

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

गुड्डे-गुड़िया की शादी



विनय कुमार गर्ग
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

महक एक अंतर्मुखी स्वभाव की लड़की थी। उसका हमेशा अपने आप में मस्त रहना, अपने घर के इर्द-गिर्द फुदकते रहना, कभी अपने मनपसंद गुड्डे-गुड़िया के खेल में रम जाना तो कभी अपनी शैतानियों के कारण घरवालों के लिए सिरदर्द बन जाना। कुछ ऐसी ही थी महक।

किन्तु, जिस बात से महक को सबसे ज्यादा चिढ़ थी वह थी उसकी माँ का जबरदस्ती पकड़ कर उसे खाना खिलाना, इस कारण कई बार वो खाने के समय छिप जाती और उसकी माँ बेचारी बेकल सी होकर उसे खोजती रहती और बड़बड़ाती रहती, “पता नहीं, ये लड़की खाने के वक्त कहाँ चली जाती है? यहाँ तो मैं पकड़-धकड़ कर खाना खिला देती हूँ, कल ससुराल चली जायेगी तो वहाँ इसका कौन ख्याल

रखेगा?” और ये बोलकर रोने लगती।

माँ को रोता देख, महक पैर पटकती माँ के पास चली आती, फिर माँ पहले तो उसे पकड़कर खाना खिलाती और फिर गुस्से में थप्पड़ भी लगाती कि खाने के वक्त, हमेशा अपनी माँ को तंग करती है। महक भी रो-रोकर कहती कि पता नहीं माँ से उसका पीछ कब छूटेगा?

महक जब ज्यादा परेशान होती तो अपने खिलौनों से गुड़िया को निकालकर उससे खेलने लगती। उसके पास अपनी माँ के पुराने कपड़ों से बनाई अलग-अलग रंगों की – सुनहरी, लाल, पीली सितारों वाली व और भी कई साड़ियाँ थी, जिन्हें वह अपनी गुड़िया को पहनाकर दुल्हन की तरह सजाती और अपनी सहेली आभा के विदेशी

गुड्डे के साथ, अपनी गुड़िया की शादी कर अपनी परेशानी भूल जाती।

दूसरी बात, जिससे महक को सबसे ज्यादा भय लगता था वह था अपने घरवालों के बिना, अकेले कहीं जाने से।

एक बार महक जब अपनी माँ के साथ पास के दुर्गा मंदिर गई थी तो वहाँ भीड़ के कारण वो अपनी माँ से बिछुड़ गई और अकेला होने के कारण जोर-जोर से रोने लगी और फिर मारे डर के बेहोश भी हो गई। हालांकि, शीघ्र ही उसकी माँ ने उसे खोज भी लिया और किसी तरह उसे होश में ले आई, परन्तु, तब से उसकी माँ भी अपनी फूल सी बेटा के कमजोर हृदय से डर सी गई थी।

अतः रिश्तेदारों के यहाँ भी महक

बामुशिकल ही जाने को राजी होती।

जैसे-जैसे समय का पहिया घूम रहा था तैसे-तैसे महक बाल्यावस्था से किशोरावस्था और फिर किशोरावस्था से तरुणावस्था को प्राप्त हो रही थी। और अब चढ़ती आयु के साथ-साथ, एक नवयोवना के हृदय में उमड़ने वाली, नैसर्गित प्रणय-भावनाएं भी उसके हृदय में कहीं जन्म लेने लगी थी।

अपनी सहेली आभा के गुड्डे के साथ अपनी गुड़िया की शादी का खेल खेलते-खेलते तथा अपनी बचपन की पक्की सहेली आभा की

शादी हो जाने के बाद से, अब महक को, स्वयं के विवाह के सपने भी आने लगे थे।

ऐसा नहीं था कि मात्र महक ही अपने विवाह के सपने देख रही थी, महक के माता-पिता भी लड़की को सयानी होती देख, उसके विवाह की चिंता में घुलने लगे थे।

हालांकि, महक के माता-पिता कभी-कभी ये सोचकर भी परेशान हो जाते कि महक तो कभी अपने घरवालों के अतिरिक्त, किसी अन्य के साथ रिश्तेदारी में भी जाना पसंद नहीं करती है, तो फिर, फिर विवाह के पश्चात, एक अनजान परिवार में, अनजान लोगों के साथ, ताउम्र कैसे रह पाएगी?

परंतु, महक की दादी जरूर उनका मज़ाक उड़ाती और कहती, “अरे थारी बेटा कोई दुनिया से निराली ना है। लड़कियां तो गौ की तरह होवे हैं, जिस खूंटे से बांध दो, बस वहीं की होकर रह जावे हैं।”

आखिरकार, वह दिन भी आ ही गया जब महक के सपनों को अमली जामा पहनाया जाने लगा। महक का विवाह आगरा निवासी, श्याम के साथ तय कर दिया गया।

श्याम एक पढ़ा-लिखा, सजीला, मध्यम परिवार का, मँझला पुत्र था और नगर-पालिका में बाबू के पद पर कार्यरत था।

श्याम के परिवार में, उसके माता-पिता के अतिरिक्त, उसके बड़े भैया तथा एक छोटा भाई था।



श्याम के बड़े भैया मदन विवाहित थे और शहर के ही बिजली विभाग में कनिष्ठ अभियंता लगे हुए थे, इसलिए ऊपरी आमदनी भी अच्छी-खासी थी साथ ही मदन एक दबंग व्यक्तित्व का स्वामी था और जिसके कारण श्याम के घर में उसके बड़े भाई मदन का रौब चलता था।

उधर, मदन की पत्नी नीरू भी एक धनाढ्य परिवार से थी और उनके विवाह में नीरू के परिवार वालों ने बहुत सा दान-दहेज दिया था। जिसके कारण, नीरू भी पूरे दंब के साथ अपनी ससुराल में रहती थी।

हालांकि, नीरू अस्थमा की मरीज थी और अधिकांशतः बीमार सी रहती थी। परंतु, धनाढ्य परिवार से होने के कारण उसने मनचाहा वर पाया था।

श्याम का छोटा भाई अनुज, श्याम से आयु में तीन वर्ष छोटा था तथा फिलहाल वकालत की पढ़ाई कर रहा था।

श्याम के पिता बिशन दास किसी प्राइवेट फर्म में मुंशी का कार्य करते थे, किन्तु, मदन ने बिजली विभाग में नौकरी लगने के पश्चात, अपने

पिता की प्राइवेट नौकरी छोड़वा दी थी।

वहीं श्याम की माँ, मनोरमा, अल्प पढ़ी-लिखी, एक घरेलू महिला थी, जो वैसे तो अड़ोस-पड़ोस में मदन की पत्नी नीरू की बीमारी का रोना रोती रहती, मगर घर वापिस आकर, मजबूरन अपनी बहु की झूठी लल्लो-चप्पो करती।

दूसरी ओर, महक के परिवार में उसके माता-पिता व दादी के अतिरिक्त उसके एकमात्र बड़े भैया मुकेश थे, जिन्हें महक प्यार से ददा कहकर बुलाती थी। मुकेश भी अपनी इकलौती बहन को बड़ा प्यार व मान देता था। मुकेश पढ़ाई में काफी अच्छा था, मगर दुर्भाग्यवश सरकारी नौकरी ना मिलने के कारण, अब गृह नगर बरेली के ही एक प्राइवेट स्कूल में अध्यापक लग गया था और अभी अविवाहित था।

महक के पिता, सुन्दर लाल, इलाहाबाद बैंक में क्लर्क थे तथा नौकरी के रहते-रहते ही उन्होंने बरेली शहर में अपना मकान बना लिया था। तत्पश्चात, वह पिछले वर्ष ही बैंक से सेवानिवृत्त हुए थे और अब वो जल्द से जल्द कन्यादान कर उन्नयन होना चाहते थे।

महक की माता, कौशल्या, एक घरेलू महिला थी और अपने बच्चों के इर्द-गिर्द घूमते रहना ही अपना कर्तव्य समझती थी।

परंतु, अब जबकि महक का विवाह होने जा रहा था, इस कारण से उसकी माँ के ऊपर तो मानो जिम्मेदारियों का पहाड़ सा आन पड़ा था। एक तरफ तो पुत्री के विवाह की तैयारियों का दबाव था तो दूसरी ओर, अपनी जान से प्यारी, मासूम महक से जुदा होने की चिंता भी सताने लगी थी।

लेकिन कहते हैं ना कि लड़कियां तो पराया धन होती हैं और कोई कितना भी बड़ा गरीब हो या अमीर हो, सभी को एक दिन अपनी लाडली को विदा करना ही पड़ता है।

ऊपर वाले का भी अजीब इन्साफ है ... कहने के लिए तो लड़कियों को दो-दो घर दे दिए, परन्तु, दोनों ही घर वाले लड़कियों को पराया ही मानते हैं और अपना कहने के लिए उनका एक भी घर नहीं होता।

अतः महक की माँ ने भी अपने कलेजे पर पत्थर रख, महक का विवाह करके अपने जिगर के

टुकड़े को विदा कर ही दिया। ये अलग बात थी कि विदाई के समय महक जब रो-रोकर हलकान हो रही थी तब उसके माता-पिता को घूम-फिरकर यह सब याद आ रहा था कि जिस लड़की ने घरवालों के साथ के अतिरिक्त, कभी घर के आँगन से बाहर, एक पाँव भी नहीं निकाला, वो इस अंजान सफर को कैसे तय करेगी?

लेकिन कहते हैं ना कि ईश्वर ने, विशेष तौर से नारी को मानसिक रूप से बड़ा ही शक्तिशाली बनाया है। इसी को सही सिद्ध करते हुए, महक, माता-पिता के आदेश को ईश्वर की इच्छा समझ, भारी कदमों से, अपने पति श्याम के साथ विदा हो गई।

जिस पल से महक, श्याम के साथ विदा हुई थी, उसे इतना तो समझ आ ही रहा था कि आज वो जिस वैवाहिक बंधन में बंधी है वो कोई साधारण बंधन नहीं है अपितु, एक ऐसा पावन बंधन है जो समाज के सम्मुख, पंडितों के दैवीय मंत्रों-उच्चारण द्वारा तथा उचित नक्षत्रों की गणना के पश्चात जोड़ा गया है।

महक को अपने घर के सदस्यों से बिछुड़ने का दुख व अकेले घर छोड़ने का डर तो अतुलनीय था,

परन्तु, उसके मन में एक अजीब सा कौतूहल भी चल रहा था कि बचपन से जो उसके मन में, आभा के विदेशी गुड़ड़े की, एक मोहनी सी छवि बैठी हुई थी, आज उसका अपना गुड़ड़ा साक्षात् श्याम के रूप में उसकी बगल में सटकर बैठा हुआ है जो प्यार से उसकी ही ओर देखे जा रहा था।

जब श्याम ने देखा कि महक का रोना कुछ कम हो रहा है तो उसका दुख कम करने के उद्देश्य से श्याम ने बातचीत से महक का मन बहलाने का प्रयास आरंभ कर दिया।

श्याम महक को समझाने वाले लहजे में बोला, “महक, मैं जानता हूँ, किसी भी लड़की के लिए अपने माँ-बाप को एकाएक छोड़कर, ससुराल को चल देना बड़ा ही कठिन सफ़र होता है। किन्तु, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं और मेरा परिवार आपको किसी भी बात की कमी महसूस होने नहीं देगा, अतः आप चिंता छोड़, अपने इस नव-जीवन की सुखद बेला का आनंद लें।”

इसी प्रकार श्याम, नाना प्रकार की बातों के द्वारा, महक का मन बहलाने का लगातार प्रयास करता रहा।

किन्तु, महक के द्रवित हृदय में, स्वजनों के विछोह के दुःख के कारण, श्याम की बातों का ज्यादा कुछ असर नहीं हो पा रहा था, इस बात को श्याम भी समझ रहा था।

और जिस प्रकार हर सफर का एक अंत होता है, ठीक उसी प्रकार, महक के बाल्यकाल का भी आज अंत हो गया था और अब वो एक नई-नवेली दुल्हन बनकर अपने ससुराल की ड्योढ़ी पर आ पहुँची थी।

ससुराल पहुँचते ही, प्रथा अनुसार, नई दुल्हन का स्वागत उसकी सास द्वारा आरती उतार कर किया गया।

महक अपनी माँ के द्वारा दी गई सीख के अनुसार, अपनी सास के चेहरे में, अपनी माँ का चेहरा तलाशने लगी। फिर अचानक भाव-विभोर हो अपनी सास के पैरों में लिपट कर रोने लगी, जिस पर उसकी सास ने भी, महक को प्यार से उठाकर दुलार किया और फिर महक को अपने घर के भीतर ले गई।

घर के अन्य सदस्यों को भी देख महक को, ससुर में अपने पिता की व जेठ मदन में अपने ददा मुकेश की छवि का एहसास हुआ।

देवर अनुज, महक को मित्रवत प्रतीत हुआ, तो जेठानी नीरू ने भी महक का गर्मजोशी से स्वागत किया।

ससुराल में, महक को रह-रहकर, माँ-दादी की बातें याद आने लगी थी कि लड़कियों को भगवान ने दो-दो परिवार दिए हैं, उनके दो-दो माँ-बाप होते हैं और इसी प्रकार भाई-बहन भी दो-दो होते हैं। परिवार के सभी सदस्यों को देखकर अब महक के दिल को थोड़ा ढाढ़स सा मिलने लगा था।

महक, मेहमानों वाले कमरे के एक कोने में, दिन भर एक गठरी सी

बनी बैठी रही और रिश्तेदार व अड़ोसी-पड़ोसी, उससे तरह-तरह के बातें पूछते रहे, जैसे — शादी में क्या लिया-क्या दिया, आदि आदि।

पूरा दिन यूँ ही रीति-रिवाज निभाने व मेहमानों की चुहल-बाजियों में गुजर गया। महक भी बैठे-बैठे उकता गई थी और साथ ही काफी थकान भी महसूस कर रही थी।

रात में उसकी जेठानी, महक को श्याम के कमरे में छोड़ गई।

कुछ समय पश्चात, श्याम भी अपने कमरे में आ गया और कमरे में

अपनी जीवन संगिनी को पाकर, श्याम ने महक को भरपूर प्रेम दिया।

महक ने भी खुद को परिस्थितियों के हवाले कर दिया और पति-पत्नी के बंधन से मिली इस नवीन अनुभूति के आनंद को महसूस करने लगी।

रह-रहकर महक को माँ और दादी की विवाह से पूर्व की बातें याद आ रही थी कि विवाह के बाद औरत का एक नया जन्म होता है और इस नए जन्म के साथ ही, नए रिश्तों और नए अहसासों का जन्म भी होता है।

वक्त के गुजरते-गुजरते, अब वही महक एक अंजान शहर में, नितांत अजनबियों के बीच खुद के नए रिश्ते तलाश रही थी और एक कुशल वधु की भांति अपने नए रिश्तों को तराशने भी लगी थी।

महक के विवाह का शुरुआती दौर तो विवाह की औपचारिक रस्मों में, दान-दहेज के सामानों की गिनती में, जांच-परख में और उनके लेन-देन में ही व्यतीत हो गया।

बीच-बीच में महक की सास कभी-कभी दबी जबान में बोल पड़ती कि तुम्हारे घरवालों ने शादी



में कुछ खास सामान नहीं दिया है, अमुक वस्तु कम दी है, फलां चीज घटिया दी है आदि—आदि।

रस्म अदायगी के लिए, एक बार, महक का भाई मुकेश, उसे लिवाने के लिए, उसकी ससुराल आया। तो महक की सास उसके ददा को भी उलाहना देने लगी कि उसकी बहन महक, घर के कामों में बहुत ढीली है और दान—दहेज को लेकर भी बोलने लगी कि दहेज के मामले में भी उन्हें बहुत निराशा हाथ लगी है क्योंकि, उन्हें तो आस थी कि इकलौती बहन है, भाई भी कमाता है और बाप भी बैंक में मोटे पैसे लेकर रिटायर हुआ है, मगर उस हिसाब से उन्हें दान—दहेज कुछ खास नहीं मिला। इससे कई गुणा ज्यादा सामान तो उनके बड़े बेटे की शादी में ही मिल गया था।

यह सब सुनकर, मुकेश को बड़ा लज्जित महसूस हुआ, क्योंकि, उन्होंने तो महक की नई गृहस्थी का सारा सामान तथा जेवरात आदि सभी कुछ अपनी हैसियत से बढ़—चढ़कर दिया था और महक के ससुराल पक्ष को खुश करने के चक्कर में उन पर कुछ कर्ज भी हो गया था।

फिर भी अपनी प्यारी बहन के कारण, मुकेश काफी विनम्रता के

साथ, महक की सास के साथ अनुनय—विनय करता रहा और फिर मायके में पैर—फिराई की रस्म के लिए, महक को साथ लेकर चला गया।

कुछ दिनों पश्चात, महक रस्म निभाकर, फिर वापिस ससुराल आई।

महक की सास को इस बार भी निराशा ही हाथ लगी, क्योंकि, वह तो उम्मीद कर रही थी उसने बहु के भाई को इतना सुनाया है तो जरूर इस बार कुछ मोटा माल हाथ लगेगा। किन्तु, वैसा कुछ भी नहीं हुआ। क्योंकि, महक के घरवालों के सिर से तो अभी शादी का पहला कर्ज भी नहीं उतरा था, तो वो बेचारे अब कैसे अपना घर उठाकर दे देते।

अतः महक की सास के सारे

अरमान पानी—पानी हो गए, उसे लगा महक ने ही और सामान देने के लिए मना कर दिया होगा। जिसके कारण महक की सास, महक को ही दोषी मानने लगी और हुई हताशा के कारण महक के साथ रूखा व्यवहार करने लगी।

धीरे—धीरे महक की सास ने अपने बुढ़ापे का तथा नीरु की बीमारी का बहाना बनाकर, पूरे रसोईघर का कार्य महक को सौंप दिया।

महक भी पूरे जी—जान से अपने कर्तव्य का निर्वहन करती, परन्तु, घर का सारा काम करने के बावजूद भी, महक को खुद के लिए खाना लेने की इजाजत नहीं थी। महक का खाना, उसकी सास ही देती।

शुरू—शुरू में तो महक को ये सब ज्यादा महसूस नहीं हुआ, क्योंकि,



उसके मायके में भी, उसकी माँ ही उसके खाने-पीने का ख्याल रखती थी।

खाने में, महक को कभी बासी खाना मिलता, तो कभी आधा-अधूरा खाना मिलता, तो कभी महक की सास, दाल-सब्जी कम पड़ने पर उसमें पानी मिलाकर देती। कुछ ऐसा ही हाल उसे कभी-कभी मिलने वाले दूध का भी था, जिसमें दूध कम और पानी ज्यादा होता। महक को खराब तो लगता, मगर उसने बचपन से ही कभी अपने खाने को तवज्जो नहीं दी थी, इसलिए वो इस सब के बावजूद भी अपने जीवन से संतुष्ट थी।

परन्तु, हद तो तब हो गई, जब नित्यप्रति महक को खाने में, दूसरों का बचा-खुचा झूठा खाना मिलने लगा, जिससे महक को अपने आत्म सम्मान पर ठेस सी महसूस होने लगी। परिवार के सब लोग अच्छा-अच्छा, भरपूर खाना खाते और उसके साथ नौकरों जैसा बर्ताव होने लगा।

श्याम भी घर के मामलों में कुछ खास दखल न देता था इसलिए जब कभी महक श्याम से अपने साथ हो रहे दुर्व्यवहार की चर्चा

करती तो श्याम महक के आरोपों को सिर से नकार देता कि ये सब उसकी गलतफ़हमी है।

जेठानी नीरु की घर में धाक होने के कारण नीरु के साथ कोई बदसलूकी नहीं करता था। इसलिए नीरु भी कभी महक के भोलेपन का, तो कभी अपनी जेठानी के बड़े रिश्ते का हवाला देकर, तो कभी अपनी अस्थमा की बीमारी का बहाना बनाकर, महक से अपने व्यक्तिगत कार्य कराती।

महक की ससूराल में, एकमात्र उसका जेठ मदन ही था, जो महक से बड़े प्यार से बात करता था, जिससे महक को बड़ी तसल्ली मिलती थी और उसे लगता कि उसके जेठ उसकी सब परेशानी समझते हैं और उन्हें महक से

हमदर्दी है, इसलिए महक को जेठ मदन में अपने दद्दा मुकेश दिखाई देते थे।

एक रोज सभी घरवाले, महक को घर में अकेला छोड़, शहर के ही किसी रिश्तेदार के यहाँ उनके बच्चे के जन्मोत्सव में शामिल होने के लिए गए हुए थे। मदन और श्याम अपनी-अपनी ड्यूटी पर गए हुए थे।

इसलिए महक घर पर बिल्कुल अकेली थी।

दिन के करीब बारह बजे होंगे, तभी दरवाजे की घंटी बजी, महक ने सोचा कि शायद घरवाले कार्यक्रम से जल्दी वापिस आ गए हैं, इसलिए उसने तेजी से दरवाजा खोल दिया।



दरवाजा खोलने पर उसने देखा कि सामने परिवार वाले नहीं, वरन उसके जेठ मदन खड़े हैं।

घर में महक को अकेला पाकर, मदन ने महक से चिकनी-चुपड़ी बातें शुरू कर दी और फिर मदन ने महक से पीने के लिए पानी लाने को कहा।

महक तुरंत रसोईघर से पानी ले आई और जब वह मदन को पानी देने लगी तो सहसा मदन ने महक का हाथ पकड़ लिया।

जेठ के इस अप्रत्याशित व्यवहार ने महक को संज्ञाशून्य कर दिया और उसे कुछ नहीं सूझा, कि क्या हो रहा है?

फिर मदन, महक का हाथ अपने हाथ में लेकर, याचना भरे स्वर में महक से बोलने लगा, "महक! मुझे पता था कि घर वाले तुम्हें उत्सव पर नहीं लेकर जाएंगे और तुम घर पर अकेली होगी। इसलिए मैं दफ्तर बीच में ही छोड़कर, तुम्हारे लिए ही आया हूँ। अब तुम्हें भी पता चल ही चुका है कि मेरी जिंदगी कैसे जहन्नुम बन चुकी है? पैसे के लालच में घरवालों ने मेरी शादी एक बड़े घर की, बीमार औरत से कर दी है। जिसके साथ मैं एक

पल भी खुश नहीं हूँ। लेकिन जिस दिन से तुम इस घर में आई हो, उसी दिन से मैं, तुम्हें मन ही मन चाहने लगा हूँ, तुम मेरी बन जाओ फिर पूरा घर तुम्हारी चाकरी में लग जाएगा और नीरू की ही भांति, तुम्हें भी घर का कोई काम नहीं करना पड़ेगा।"

इसलिए, आज इसी पल से तुम मुझे अपना बना लो, ऐसा कहकर मदन, महक को अपनी ओर खींचने लगा।

मदन की बातें, महक के दिमाग में हथौड़े की तरह चोट कर रही थी और अब तक महक, मदन की बदनीयती ताड़ चुकी थी। इसलिए महक ने झटके से मदन से अपना हाथ छुड़ा लिया और दौड़कर अपने कमरे में बंद हो गई।

पीछे से मदन ने महक को कई आवाजें लगाई, किन्तु, महक ने मदन की एक ना सुनी और अपने कमरे का दरवाजा नहीं खोला। गुस्से में मदन पैर पटकते हुए वापिस दफ्तर चला गया।

महक अपने कमरे में घुस ज़ोर-ज़ोर रोने लगी, क्योंकि, आज महक के सम्मान को इतनी बड़ी ठेस जो लगी थी। जिस जेठ

की तुलना वो हमेशा से अपने ददा से करती आई थी, उसका चरित्र कितना धिनौना निकलेगा, उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। महक को अब सब समझ आ रहा था कि आरम्भ से ही मदन का व्यवहार उसके साथ इतना मृदु क्यों था?

इसके साथ ही, महक आज बचपन की ही भांति डर से काँप भी रही थी और स्वयं को नितांत अकेला भी महसूस कर रही थी, क्योंकि जिसे वह अपना संबल समझ रही थी, वह तो दलदल साबित हो चुकी थी।

शाम तक सारे घरवाले, घर में वापिस आ गए और महक भी अपने आंसुओं को काबू कर रोज़मर्रा के कामों में व्यस्त हो गई।

महक ये सोचकर निश्चिंत हो गई थी कि रात को श्याम से उसके बड़े भाई की हरकत की शिकायत करूँगी। किन्तु, रात होते-होते महक की विचारधारा बदल गई और महक सोचने लगी कि कहीं उसकी वजह से दोनों भाइयों में झगड़ा ना हो जाए और पूरे घर में बवाल ना हो जाए।

दूसरी ओर, उसे ये भी अंदेशा था

कि कहीं उल्टा उसे ही कसूरवार ना मान लिया जाए, क्योंकि पूरे घर में तो उसके जेठ का ही रौब चलता है।

यह सब सोचकर महक ने चुप्पी साध ली।

वैसे भी कहने को तो श्याम उसका पति था मगर वो भी अपने घर वालों से ज्यादा कुछ अलग नहीं था। शुरू-शुरू में तो महक को लगता था कि उसका पति उसे बहुत प्यार करता है पर शादी के एक-दो महीने के बाद ही महक को लगने लगा था कि जैसे श्याम के प्यार का खुमार ख़त्म हो गया है और अब वो श्याम के लिए मात्र एक भोगने की वस्तु रह गई थी।

तब महक को और दुःख होता, जब कई बार, श्याम भी महक को ताना मार देता था कि देखो उसके बड़े भाई के कितने ठाठ हैं जो मजे से शादी में मिली कार में बैठकर दफ़्तर जाते हैं और एक में हूँ जिसे शादी में एक बाईक भी नहीं मिली।

कई बार महक श्याम से अनुरोध करती कि देखो उसकी साड़ी कितनी बदरंग और पुरानी हो गई है तो श्याम चिढ़ कर कहता कि ना तो मेरी तनखाह इतनी है और ना

ही तुम्हारे घर वालों ने मुझे शादी में इतने पैसे ही दिये थे कि मैं रोज-रोज तुम्हें नई-नई साड़ियाँ दिलाने ले जाऊँ, जब अपने घर जाओगी तो वहीं से दो-चार साड़ी लेती आना।

जिसे सुनकर महक चुप हो जाती और एक औरत की किस्मत पर चार आँसू बहाकर अपनी जरूरत भूल जाती।

महक को अब अपने मायके से भी, मदद की कोई आस नहीं थी, क्योंकि, उसके पिता का स्वर्गवास हो चुका था और उसके ददा, मुकेश की शादी हो चुकी थी वो भी उसकी नई-नवेली भाभी के साथ अपने वैवाहिक-जीवन में व्यस्त थे। माँ, बेचारी की अब घर में कुछ चलती नहीं थी, महक ने एक-दो बार, अपने ददा, मुकेश से भी अपने हालात बयान करने चाहे, मगर उसके ददा ने उसकी बातों में कोई खास रूचि नहीं दिखाई।

महक को अब अपने जीवन में नयेपन की कोई आस नहीं थी, उसके जीने का ढर्रा निश्चित हो चुका था, कि रोज सुबह सबसे पहले उठकर, घर में नौकरों की तरह काम में पिल जाना और बदले

में घर वालों के ताने व अपमान सहना। अब तो महक को भी इसकी आदत सी हो गई थी।

उधर, मदन भी महक को कम परेशान नहीं करता था, महक ने तो सोचा था कि शिकायत नहीं करने से मदन सुधर जाएगा, किन्तु, हुआ इसके उलट, शिकायत ना होने से मदन के हौंसले और बुलंद हो गए। अब वह घर वालों के सामने तो उसे फटकारता और अकेला पाकर उससे छेड़छाड़ करता।

एक दिन जब असहनीय हो गया तो महक ने परेशान होकर घर वालों के सामने मदन की शिकायत कर दी और फिर वही हुआ जिसका महक को अंदेशा था। मदन ने चिल्ला-चिल्लाकर पूरा घर सिर पर उठा लिया और अपने तर्क-कुतर्क से, महक को ही उल्टे मुजरिम ठहरा दिया।

महक को तो, मानो अब काटो तो खून नहीं, क्योंकि सभी घर वाले महक को ही दोषी समझ रहे थे और सभी उसे बुरा-भला कह रहे थे। महक की अंतरात्मा रो रही थी और उसका मन हो रहा था कि अभी धरती फटे और वह उसमें समा जाए।

नीरू यूँ तो अपनी दुनिया में ही मस्त रहती थी, जिसमें — ब्यूटी-पार्लर में आना-जाना, सहेलियों के साथ घूमना-फिरना या फिर किट्टी पार्टियों में मस्त रहना। वह घर में किसी से कुछ खास मतलब नहीं रखती थी, परन्तु, आज घर का माहौल कुछ ज्यादा ही गर्म व तनावपूर्ण हो गया था, अतः नीरू आज चुप ना रह पाई और उसके क्रोध का ज्वालामुखी अपने ससुराल वालों पर फट पड़ा।

नीरू ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी और अपने ससुराल वालों को तथा अपने पति मदन को बुरा-भला कहने लगी कि आप लोगों को, गाय समान बहु को परेशान करते हुए, शर्म नहीं आती!

फिर उसने अपनी सास को आड़े हाथों लिया और बोली, “माँ जी! क्या आपको पता नहीं है, कि महक का चाल-चलन कैसा है? महक को घर में आये छह महीने से ज्यादा हो गए हैं वह एक मासूम बच्चे के समान है और आपका बेटा मदन, उसका चाल-चलन कैसा है? यह भी आपको, अच्छे से पता है। फिर भी आप लोग महक को ही सताए जा रहे हो। शर्म आनी चाहिए आप लोगों को। पैसे के

लालच में आप लोग कितना गिर गए हो, अगर आप लोगों को पैसे की इतनी ही भूख है तो मेरे पापा से और मांग लो, वे दे देंगे। किन्तु, दूसरे की बेटी के साथ ऐसा दुर्व्यवहार, घोर पाप है।”

मदन ने नीरू को रोकने के लिए, बीच में बोलना चाहा, किन्तु, नीरू ने मदन की भी एक ना सुनी और तब तक चिल्लाती रही, जब तक उसकी सांस फूल नहीं गई।

फिर जब नीरू को लगा कि वो अब और ज्यादा नहीं बोल पाएगी तो वो बेचारी विवशता के कारण, पैर पटकती हुई, अस्थमे की दवा लेने, अपने कमरे में चली गई।

नीरू की क्रोध की आंधी के बाद, घर का माहौल अब कुछ बदल चुका था। नीरू के लताड़ने से, मदन और उसके परिवार वाले थोड़ा लज्जित महसूस कर रहे थे।

महक भी अपमान का घूंट पीकर अपने कमरे में चली गई और अपने बिस्तर पर, कटे पेड़ की भाँति गिर पड़ी।

आज की घटना से, उसका तन-बदन अभी भी जल रहा था और उसे द्रौपदी की मनःस्थिति अब कुछ-कुछ समझ आ रही थी कि कैसे कौरवों ने द्यूत क्रीड़ा में

जीती द्रौपदी का भरी सभा में, उसके पतियों के सामने, वरिष्ठ कुल जनों के सामने, चीर-हरण कर अपमान करने की कोशिश की थी और दरबार में उपस्थित सभी भद्रजनों ने कैसे चुप्पी साध ली थी। ठीक इसी प्रकार, आज उसका जेट मदन, उसके पूरे परिवार के सामने, उसके पति के सामने जब उसकी इज्जत तार-तार करने की कोशिश कर रहा था तो यहाँ भी उसके साथ कोई नहीं था। आज उसके साथ हुई घटना के परिपेक्ष में, उसे खुद में और द्रौपदी में कोई भी फ़र्क नज़र नहीं आ रहा था। फ़र्क था, तो सिर्फ़ इतना, वहाँ द्रौपदी के सम्मान की रक्षा, भगवान श्रीकृष्ण ने की थी और आज उसके सम्मान की रक्षा उसकी जेठानी नीरू ने की थी।

महक का मन, अपनी जेठानी नीरू के प्रति कृतज्ञता से भर गया, तथा साथ ही महक मन ही मन ईश्वर से सवाल पूछ रही थी कि आपने नारी को ऐसा जीवन क्यों दिया? जहाँ उसे रस्मों के नाम पर अपने परिवार से बिछुड़ना पड़ता है और एक ऐसे परिवार को अपना पड़ता है जहाँ बहु को एक लूट-खसौट की वस्तु से ज्यादा कुछ नहीं समझा जाता।

दूसरी माटी के लोग



मेहरबान सिंह नेगी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)
भूखण्ड 191 (एफ 2), सेक्टर-4, वैशाली
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201010

विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित ऑनरेरी कैप्टेन खुशहाल सिंह रावत, जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध में अपनी जान की परवाह किए बिना अपने वरिष्ठ सैनिक अधिकारी की जान बचाई, शिवालिक पर्वतमाला में स्थित पुस्तैनी गांव में विस्थापित होकर कोटद्वार भाबर में सेवानिवृत्त जीवन ही रहे थे। उनके बड़े बेटे लेफ्टीनेंट शक्तिवर्धन रावत ने देहरादून कैंट में सेवाकाल के दौरान स्थानीय फौजी अधिकारी मित्र श्री विजय भण्डारी के सहयोग से उनके समीपस्थ गांव में एक घर सहित 10 बीघा भूमि खरीदी। उनकी पत्नी और पुत्र जय देहरादून आ गए। जय का मन एकल परिवार के एकांत घर में नहीं लगा तो उसके दादा उसे वापस ले गए। वे उसके लिए मिलिट्री हरे रंग की ड्रेस ले आए। वह ड्रेस पहनकर परेड

करता तो कभी बच्चों के संग खेलता और खुशी की अनुभूति करता। वीरता की कहानियां उसे भाने लगी थीं।

ले. रावत की तैनाती पाक सीमा पर हो गई। वे लाइन ऑफ कंट्रोल पार कर जासूसी के आरोप में 5 वर्ष पाकिस्तानी जेल में रहे। मार्च 1999 में जेल से छूटे तो दो माह की छुट्टी पर देहरादून आ गए। मई 1999 में सभी फौजियों को अवकाश से वापस बुला लिया गया। मेजर के पद पर पदोन्नति के बाद उनकी तैनाती कारगिल हो गई। अपनी सैनिक टुकड़ी घाटी में थी। पाक सैनिक सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पर्वत शिखरों पर थे। मेजर ने एक योजना बनाई। संध्याकाल में 250 भेड़ों के गले में एक-एक छोटी टॉर्च बंधवा के कुत्ते के साथ पहाड़ी पगडंडी पर ऊपर को छोड़ दिया। पाक सैनिकों ने

सोचा भारतीय सेना आक्रमण पर है तो ताबड़तोड़ गोलियां दागनी शुरू कर दी। कुछ भेड़ मर गए पर टॉर्च जलती रही। कुछ डरकर झाड़ियों में छिप गए। दो घंटे बाद पाकिस्तानियों का असलहा समाप्त हो गया। मेजर रावत की सैनिक टुकड़ी ने रात में चढ़ाई चढ़ी और अप्रतिम शौर्य का परिचय देते हुए कारगिल की तीन चोटियों से शत्रु सेना का कब्जा छुड़ाकर तिरंगा फहरा दिया था। लेकिन, आगे से सैन्य संचालन करते हुए एक अन्य चोटी से कब्जा छुड़ाने के प्रयास में मेजर रावत 'जय हिन्द' कह गए।

मेजर रावत के 6 वर्षीय बेटे ने पिता के तिरंगे में लिपटे पार्थिव शरीर के समक्ष सेल्यूट किया। उसने मुखाग्नि देते समय शपथ ली कि वह पिता की शहादत का बदला लेगा। उस श्रव्य-दृश्य से उत्पन्न संवेदनी भावों के कारण

प्रत्यक्षदर्शियों की आंखें छलक आई थीं।

जय के भाई यश और श्री विजय भण्डारी की पुत्री अन्नपूर्णा (पूर्णा) का जन्म क्रमशः 7 और 15 दिसम्बर 1999 को हुआ। दोनों कक्षा 1 से ही साथ-साथ पढ़ते रहे और स्नातक (अंतिम वर्ष) की परीक्षा के बाद बहुत प्रसन्न थे। अगले दिन वे उभयनिष्ठ पूर्वदीप्तियों व परीक्षा में अनुमानित अंकों पर बात कर रहे थे। तदुपरांत एक यश-प्रश्न, कि अगले शिक्षा सत्र में किस विषय को चुनेंगी, के प्रत्युत्तर में पूर्णा बोली, “जिस गांव नहीं जाना, उसका रास्ता भी क्या पूछना। मैंने झरोखे से अपने माता-पिता की चर्चा सुनी। कह रहे थे कि बेटी जवान हो गई। परीक्षाफल निकल जाय और कोई अच्छा-सा फौजी लड़का मिल जाय तो शीघ्र मेरी शादी कर देंगे। सुनो यश, उन्होंने मेरी जन्म कुंडली की छायाप्रति बनवा ली है। उसके पार्श्वभाग में, सिवाय ग्रेजुएशन में प्राप्तांकों के, समस्त अन्य विवरण भी अंकित कर दिया है।” यश चिंतनी-मुद्रा में था। क्षणिक अंतराल तक जब कुछ न बोला तो पूर्णा ने उसकी आंखों के आगे हाथ हिलाते हुए पूछा, “यश, सुना नहीं क्या?”

चिंतनी तंद्रा में ही यश बोला, “सुन तो लिया है। लेकिन, समाधान के लिए कुछ गहराई से सोच रहा हूं।”

पूर्णा तपाक से बोली “इसमें इतनी गहराई से सोचने की क्या बात है? शादी तो सबकी होती है। एक दिन मेरी भी होगी। दिसम्बर 2017 में बालिग हुई, अब 20+ हूं। दिसम्बर 2020 में तुम 21 वर्ष के हो जाओगे। उसके बाद तुम्हारी भी होगी।”

तनिक चिंतन के बाद वह मित्र पर एकाधिकार के भाव से बोला, “पूर्णा यदि तुम्हारी शादी हो गई तो बातें करना तो दूर, मिलना भी दूभर हो जाएगा। मेरे 26 वर्षीय बड़े भाई कैप्टन जयवर्धन रावत के लिए मेरी मां लड़की ढूँढ़ रही है। बगल में लड़की नगर में ढिंढोरा क्यों पीटना। बात छेड़ के देखता हूं। पूर्णा मैं विश्वास दिलाता हूं कि बात बन गई तो मैं जीवन के हर मोड़ पर तुम्हारा साथ दूंगा।” पूर्णा मानती थी कि जिन बच्चों के पिता नहीं होते उनका सांसारिक अनुभव और उचित निर्णयन शक्ति दूसरों की अपेक्षा अधिक होती है। समय की कसौटियों पर परीक्षित परम मित्र पर पूर्णा को पूर्ण विश्वास था कि वह सदैव सकारात्मक सोचेगा। अतः वह मौन थी।

कुण्डलियों के मिलान के बाद सुश्री भण्डारी बोली, “अन्नपूर्णा, जब तक जय के दादी-दादा जीवित थे वह कोटद्वार में रहा। लैंसडौन छावनी के केंद्रीय विद्यालय में पढ़ाई की। जय से मिल कर दो बातें कर लो। इस प्रस्ताव पर तुम्हारी पास की मुहर लगे तो ही निर्णय लेंगे।”

अन्नपूर्णा स्पष्टता से बोली, “लड़का क्या देखना, लड़के का भाई तो देखा है। दूसरी बात यह है कि मेरे पास करने से क्या होगा जब सरकार ने कड़ी लिखित और व्यावसायिक परीक्षाओं के पश्चात साक्षात्कार के उपरांत उन्हें मेडिकली भी फिट घोषित कर रखा है।”

एक दिन शुभ मुहूर्त पर साधारण समारोह में जय और पूर्णा का विवाह विधिवत सम्पन्न हुआ। आगामी सांध्यकाल नवदम्पति दुरागमन पर भण्डारी निवास पहुंचे तो वहां सत्यनारायण कथा वाचन प्रारंभ हो गया। रात्रि विश्राम के बाद वे दुरागमन से लौटे। यश ने जय के पद छूकर प्रणाम किया। जैसे ही वह भाभी जी कहते हुए प्रणाम करने को झुका, अन्नपूर्णा ने उसके दोनों हाथ थाम लिए। वह अत्यंत अपनत्व के भाव से बोली, “यश हम सहपाठियों के मध्य

पुराना मित्रता का रिश्ता है। तुम मुझे पूर्ववत् पूर्ण कह कर संबोधित कर सकते हो।”

यश अपना पक्ष रखते हुए बोला, “भाभी जी मुझे नए रिश्ते से पुकारने में अच्छा लगता है लेकिन आपकी आज्ञा यह आपका आज्ञाकारी देवर टाल न सकेगा। लोकतांत्रिक व्यवस्था में रिश्ते में छोटे की बराबरी का अधिकार देने के लिए शुक्रिया।”

जय की छुट्टियों के समापन से कुछ दिन पूर्व मां ने कहा, “जय, बहू को मुम्बई के दर्शनीय स्थल, गेट वे, बॉलीवुड और सागर तट तो दिखा दे। इस देवभूमि में उसने पर्वत श्रृंखलाओं, घाटियों और नदियों के सिवाय देखे हैं तो मंदिर, स्कूल, कॉलेज और पुस्तकें।”

जय की तैनाती कश्मीर में हुई तो अन्नपूर्णा मुम्बई से देहरादून लौट आई। कैप्टन जय की टुकड़ी ने पहले पाक की उन चौकियों को ध्वस्त किया जहां से वे ग्रामीणों पर मोर्टार दाग रहे थे। फिर दैनिक मुठभेड़ों में पाक के कई नापाक दहशतगर्दों को मार गिराया। एक दिन शत्रु ने एक सीमान्त गांव के मध्य एक ग्रेनेड फेंका जो फटा नहीं। उसे तत्काल निष्प्रभावी करते हुए जय घायल हो गया। हर संभव प्रयास के बावजूद चिकित्सकों को

असफलता ही हाथ लगी। सूचना-प्रसारण के युग में समाचार अग्नि की तरह फैल चुका था।

घर का वातावरण गमगीन था। जब कोई आता, पुनः रुदन स्वर सुनाई देते। स्थिति को संभालने के लिए विशेषकर महिलाएं प्रयासरत थीं। अंत में सिसकती अन्नपूर्णा की वीरप्रसू सासू मां उसे समझाते हुए बोली, “मेरे ससुर विक्टोरिया क्रॉस विजेता सेनानी और सासू मां चित्तौड़ी राणा जाति की थीं। उन्होंने मुझे मेरे पति की वीरगति के बाद कहा था कि प्रथम, मार्शल जाति के लोग वीरों के बलिदान पर ज्यादा आंसू नहीं बहाते। द्वितीय, रोना-धोना मेरे पेट में पल रहे शिशु के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। मेरे सास-ससुर ने दिल पथर के किए और आंसू नहीं बहने दिए। कुछ दिन बाद सासू मां ने मुझे बिन्दी, टॉप्स और लॉंग धारण करने की अनुमति यह कहकर दी थी कि यदि मेजर शक्तिवर्धन अमर है तो उसकी पत्नी विधवा कैसे। मैंने अपने पति का परमवीर चक्र प्राप्ति से पूर्व सरकार से विनती की थी कि उनका परिचय देते समय ‘मरणोपरांत’ के स्थान पर ‘अमरत्व या वीरगति प्राप्ति के उपरांत’ परमवीर चक्र प्रदान किया जाता है पढ़ा जाय।”

पूर्णा सोच रही थी कि संवेदना के आंसू स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। लेकिन, उसने दिल पक्का किया कि वह मलेथा निवासी मार्शल जाति के वीर सेनानायक माधोसिंह भण्डारी के चचेरे भाई वीर भद्र साधोसिंह भण्डारी की पड़पोती है जिनसे अंग्रेज खौफ खाते थे। इतिहास साक्षी है महानतम बलिदानों के बावजूद उनकी आंखों में आंसू नहीं आए थे। अतः उसके पूर्वज मुगलों और अंग्रेजों के गुलाम कभी नहीं रहे।

जब जय का पार्थिव शरीर घर पहुंचा। देशभक्ति के नारों से वीररस का संचार हो रहा था। पूर्णा ने सैनिक अधिकारियों से कहा, “मैं रोऊंगी नहीं। कृपया अंतिम दर्शन करवा दीजिए।” पूर्णा ने अंतिम दर्शन के बाद चरण छुए और हाथ उठा के तीन बार बोली, “भारत माता की — जय।” फिर सलूट ठोककर बोली, “निर्भय कैप्टन जय — आपकी भी जय।” अंतिम यात्रा वीररस के नारों के साथ प्रारंभ हुई तो पूर्णा ने हाथ जोड़े, सिर नवाया, दो कदम उल्टे लिए और फिर मुड़कर एक वीरांगना की तरह वापस कक्ष में लौट गई।

शव वाहन के पीछे वाली बस में यश का सहपाठी गौरव गुप्ता मित्रों से बोला, “बहुत उत्तराखण्डी

आजाद हिन्द फौज में थे और सेना में भी काफी हैं। वीर हवलदार चन्द्रसिंह गढ़वाली ने पेशावर में उच्च सैनिक अधिकारी के गोली चलाने के आदेश की अवमानना की और कहा था कि हम अपने भाइयों पर गोली नहीं चलाएंगे। रॉयल गढ़वाल के वीरों ने मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ते हुए यूरोप में बेमिसाल जौहर दिखाया। कुमाऊं रेजीमेंट, गोरखा ब्रिगेड तथा तीन सौ चीनी सैनिकों से अकेले लोहा लेने वाले गढ़वाल राइफल्स के अमर सेनानी जसवंतसिंह रावत के अप्रतिम शौर्य से सब परिचित हैं। यहां के काफी लोग ताम्रपत्र व सैनिक सम्मान भी पा चुके हैं। यह क्रम आज भी जारी है।”

हरीश कांडपाल बोला, “हां, आजकल हर माह शहीदों के तिरंगे में लिपटे शव आ रहे हैं। दून निवासी शहीद मेजर विभूति ढौडियाल की जांबाजी एवं उनकी पत्नी द्वारा प्रदर्शित देशप्रेम कौन नहीं जानता। बी.एस.एफ. के वीरगति प्राप्त सब इंस्पेक्टर राकेश डोभाल की ऋषिकेश वासी 10 वर्षीय पुत्री मोली की अकल्पनीय देशभक्ति व विधि प्रदत्त सहनशक्ति हेतु चर्चा में है। शांति मिशन पर कार्यरत गढ़वाल राइफल की सैनिक टुकड़ी को

संयुक्त राष्ट्र संघ ने शांति स्थापना हेतु उनकी अभूतपूर्व अतिविशिष्ट सेवाओं के लिए विशेष सम्मान दिया है।”

देवव्रत मासीवाल बोला, “देवभूमि के निवासी युद्धकाल में कठोर और शांतिकाल में अत्यंत सरल स्वभाव के हो जाते हैं।”

अमृत अरोड़ा बोला, “अमरत्व प्राप्त परमवीर चक्र विजेता मेजर शक्तिवर्धन रावत जी द्वारा कारगिल में प्रदर्शित सैन्य संचालन, युद्ध कौशल व वीरता से सब परिचित हैं। उनके बेटे जांबाज युवा शहीद हमारे इस अमर शहीद मित्र कैप्टन जय ने कश्मीर में जैसे आगे से नेतृत्व किया और अन्नपूर्णा भाभी ने जिस असाधारण धैर्य का परिचय दिया वह किसी से छिपा नहीं है। ये सब अपने पूर्वजों की थाती को दृढ़ता प्रदान करने वाले किसी ‘दूसरी माटी के लोग’ हैं। ऐसे जांबाज वीरों व वीरांगनाओं को कोटिशः नमन। सरकार ने अन्य क्षेत्रों में ऐसे दूसरी मिट्टी से बने लोगों को चिह्नित कर राष्ट्र निर्माण के कार्य में लगा दिया है और कुछ और समर्पित नागरिकों की तलाश में हैं।”

हरिद्वार में गंगा तट पर यश ने जय के पार्थिव शरीर को सैनिक सम्मान

के साथ मुखाग्नि दी। कुछ देर बाद कपाल क्रिया की। इसके बाद अस्थियां विसर्जित करते हुए दोनों हाथ जोड़कर मन ही मन मां गंगा से क्षणिक प्रार्थना भी की।

एक दिन एक धवल केशधारी बूढ़ी माई आई। आंसू बहाते कहने लगी, “जय बहुत अच्छा युवक था। वीर भड़ भरपूर जवानी में भारत मां के चरणों में शीश चढ़ा गया। जब सन् 1962 में मेरे पति चीन सीमा पर वीरगति को प्राप्त हुए थे तब मैं 19 वर्ष की थी। लोगों ने मुझे बहुत हौंसला दिया लेकिन कुछ दिन बीतने के बाद सबके तनबदन में उस ग्रंथि का स्राव, जिससे उन संवेदनी भावों की उत्पत्ति हो रही थी, वर्षा के बाद अकस्मात् आई बरसाती नदियों के जल की तरह घटने लगा और कुछ समय बाद ग्रंथि भी मौसमी नदियां—सी सूख गई। मैं तब से अब तक नित्यप्रति असुरक्षा के भावों में जी रही हूं। बेटी, तुम तो पढ़ी लिखी हो तो क्या समझाऊं। बस अपना ध्यान रखना।”

यश ने सिर मुंडवाया, पीपल पूजा की और भाई का पाषाण प्रतीक पित्रकूड़ी में स्थापित कर दिया। ब्रह्मभोज के बाद वह सोच रहा था कि बूढ़ी माई ने जो बातें आप बीती और जनस्मृति के बारे में कही वे

सत्य थी। अतः उसे अपनी बढ़ी जिम्मेदारियों का अहसास हो चुका था। लेकिन, वह मां का मन टटोलना चाहता था। मां का मानना था कि प्रथम, अतीत के प्रति लम्बी वेदना और भविष्य के प्रति अतीव उदासीनता के भावों की उपस्थिति लाभकारी नहीं हो सकती। द्वितीय, केवल देवताओं के सहारे न रहें, अपना तन-बदन भी हिलाना चाहिए।

यश घर के हर काम में हाथ बंटाता लेकिन प्रायः अंतिम निर्णय उसकी अनुभवी मां ही लेती थी। वे भक्ति और कर्मयोग में रमने हेतु रोज गीता पाठ कर दैनिक कार्यों में लग जातीं। लेकिन, जैसे ही दृष्टि उदास अन्नपूर्णा पर पड़ती वे तत्काल सोचने लगती कि समक्ष खड़ी 20 वर्षीय नवयोवना का क्या होगा। वे सोच रही थीं कि उनके साथ भी ऐसी ही घटना घटी थी लेकिन तब वे 30 वर्ष की थीं। जीने के लिए जय और गर्भ में पल रहे यश का सहारा था। जैसे तैसे वैधव्य के दिन कट गए। लेकिन, इस 20 वर्षीय नवयोवना बहू के पास तो वह भी नहीं। मां ने संज्ञान लिया कि अन्नपूर्णा ने जब से श्रृंगारदान के दर्पण को उल्टा किया था तब से उसने न तो कंधी की न ही अपनी सूरत आरसी में

देखी। मेजरानी साहिबा ने आवाज दी, “यश, श्रृंगारदान को सही स्थिति में लगा दे। अन्नपूर्णा को दराज से उसकी कंधी दे और मुझे उसके श्रृंगार बॉक्स से एक बिंदी दे।” यश ने मां की आज्ञा का पालन किया। अन्नपूर्णा भी सासू मां की इच्छा, अनुभव और ज्ञान का सम्मान करते हुए अपने बाल काढ़ने लगी। तदनन्तर उसकी सासू मां ने उसके माथे पर एक लाल बिंदी लगा दी।

यश कुछ समीप से पूर्णा को निहार कर मां की ओर मुड़ते हुए बोला, “मां, पूर्णा अब भी अपूर्णा लग रही है। मम्मी, हमारी दादी ने आपको तीन छूट दीं। आप अगली पीढ़ी की होकर भी एक पर ही अटक गई। बट, वन गुड टर्न डिजर्व्स अनदर।” उसने एक चुटकी सिंदूर ली और पूर्णा की मांग में भर दी। पूर्णा का रूप तनिक निखर आया था।

मां तुनक कर बोली, “अरे पगले, यह क्या कर दिया?”

यश बोला, “मां उस दिन महिलाओं ने पूर्णा की बिंदी हटाई, मांग की सिंदूरी रेखा मिटाई, कांच की चूड़ियां तोड़ डाली और सारे आभूषण उतरवा के पूर्णा को नख से शिख तक अपूर्णा बना दिया था। मम्मी, अब आपने बिंदी लगाई

और मैंने बस एक वैसी ही सिंदूरी रेखा खींच दी जैसे भाई ने खींची थी। हम दोनों कलाकारों ने अपूर्णा को पुनः आंशिक रूप से पूर्ण बना दिया। अभी तो बहुत कुछ बाकी है। जो हमारे वश में है वह अवश्य करेंगे। हम न तो जीते जी जोवना के जुबनाते सपनों को मरने देंगे और न ही उसे जोगन बनने देंगे।”

मां यश की आयु व अक्ल को कम आंकते हुए बोली, “बुद्धू कहीं का। तू अपने को जितना बड़ा समझता है उतना है नहीं।”

यश मंद स्वर में बोला, “मां, मैं अठारह साल की उम्र से मताधिकार का प्रयोग कर सरकार चुनने में योगदान दे रहा हूं। आज 22वें वर्ष में प्रवेश किया तो आशीर्वाद देने के बजाय जन्मदिन पर बुद्धू कह रही हो। हो सकता है इसमें आपका आशीर्वाद सम्मिलित हो।” उसने क्षणभर में मां के पद छुए और चरण धूरि सर माथे ली। मां ने स्वाभाविक प्रतिक्रिया स्वरूप दायां हाथ उसके सिर पर रख दिया।

मां के द्वारा एक आम पूछे जाने वाले प्रश्न के उत्तर में यश बोला, “मां जब हम दादी-दादा के पास कोटद्वार जाते दोनों भाई एक थाली में खाते। भाई मेरे लिए कुछ

खाना छोड़ देता और मैं अपने छोटे-से हाथ से देर तक खाता रहता। भाई देहरादून आता तो जब तक मैं स्कूल की ड्रेस बदलता भाई लगभग खा चुका होता और आप उसी जूठी थाली में मुझे खाना दे देती। मां आप बड़े भाई की वह संभालकर रखी 6-7 साल पुरानी ड्रेस, कमीज, निकर, पैंट और स्वेटर मुझे पहना देती। मैं अब समझा कि मानव परिस्थितियों का दास है।”

“यद्यपि विधि ने पूर्णा के भाग्य में यही लिखा था लेकिन वह समझदार, न्यायप्रिय और वीरांगना भी है। उसने जय के भविष्य निधि और ग्रेच्युटी के पैसे बैंक खाते में जमा कर दिए। सैनिक अधिकारियों ने पूछा की सरकारी सेवा से नियुक्ति किस पारिवारिक सदस्य को दें तो पूर्णा ने वह अधिकार लिखित रूप में तुम्हें दे दिया,” मां अपने तर्क की पुष्टि प्रदान करती हुई संतुष्टि के भाव से बोली।

यश ने मां से पूछा, “मेरा भाई वह मां, जमीन-जायदाद, आदि, किसके लिए छोड़ गया है? सब कुछ मेरे लिए ही ना!”

मां उदारता से बोली, “हां, हां, वत्स ‘सब कुछ’ तुम्हारा ही है। समस्त

अधिकार और जिम्मेदारियां भी।”

यश ने विस्मय से पूछा, “इस ‘सब कुछ’ में पूर्णा और उसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारियां भी सम्मिलित हैं न मां!”

यश की तर्कशक्ति के आगे मां निशब्द थी। यश ने मौन को स्वीकृति मानते हुए शुभकार्य में देरी किए बिना श्रृंगार बॉक्स से लौंग, बालियां, पायल, अंगूठी, बिछुवे लिए और अन्नपूर्णा को पहना दिए। मंगल सूत्र पहनाके अपूर्णा को पूर्णतः पूर्णा बना दिया। दोनों ने एक साथ मां के चरण छुए और आशीर्वाद लिया। मां ने दोनों को हृदय से लगा लिया और गंगा-जमुना की पावन धारा से भिगो दिया। मां अश्रुधारा को पल्लू से पोंछती हुई बोली, “मुझे जय का दुःख तो था ही परन्तु उससे अधिक मैं अन्नपूर्णा के भविष्य के लिए चिंतित थी। यश, तुम तो वत्स अपनी मां और पूर्णा का अधिकांश दुःख हर कर यशस्वी हो गए हो।” मां ने पूर्णा के खाली हाथों में दो-दो सोने की चूड़ियां पहना दी।

मेजरानी साहिबा ने फोन कर सुश्री भण्डारी को तत्काल बुला लिया। उन्हें ‘तत्काल’ से लगा कि जरूर कोई अनहोनी हुई है। वे जैसी थी उसी हालत में अश्रुधार बहाती

पहुंची तो अप्रत्याशित दृश्य देखकर रौने के बजाय गगलाने लगी। यश और अन्नपूर्णा दोनों ने एक साथ इस मां के भी पद छुए। मां ने गगलाते स्वर में ही आशीर्वाद दिया। सुश्री भण्डारी ने कई दिनों छाए दुःख के बादलों में प्रस्फुटित आशा की नवकिरण दिखी तो वह जीवन्त दृश्य सचल दूरभाष पर वीडियो कॉल कर ब्रिगेडियर भण्डारी को दिखा दिया। ब्रिगेडियर भण्डारी बोल पड़े, “जिन्दगी मोड़ों का नाम है, लो एक तीव्र मोड़ और गुजर गया।” फिर उन्होंने दूरभाष पर आशीर्वाद के साथ यश को जन्मदिन की बधाई भी दी। सुश्री भण्डारी ने इस घर के तीनों सदस्यों को निमंत्रण देते हुए कहा, “आप इस घर में शायद खुशी का इजहार उतना न कर पाओ। मेरे घर पर यश के जन्मदिन का केक काटेंगे। दो-दो रोटियां भी वहीं खा लेंगे।”

पूर्णा की सखी सायंकाल उन्हें भण्डारी निवास में मिली तो मोबाइल से फोटो खींचकर सोशल मीडिया पर मैसेज कर दिया, “अन्नपूर्णा के जीवन में आई रिक्ति की पूर्ति कर यश ने महान समाजशास्त्री राजाराम मोहन रॉय के अधूरे काम में अपना अंशदान किया है।”

आवाज



अनिल कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

जनवरी की ठिठुरती सुबह घने कोहरे की साड़ी में लिपटी अनमनी—सी हो जाग उठी है। जनवरी में सूरज कभी भी सात बजे से पहले आकर उसे नहीं धमकाता। कभी—कभी तो पूरे दिन बादलों की चादर में मुंह छुपाए शीत से बचता फिरता है।

रोज की तरह अभी छः ही बजे थे, जब साथ वाले कमरे में घड़ी का अलार्म अपनी पूरी कर्कशता से कुछ इस तरह चीख उठा जैसे गर्म तवे पर उसका पैर पड़ गया हो। डॉक्टर साहब ने कानों तक रजाई खींच उस आवाज की कर्कशता से बचने का प्रयास किया। पिछली कई रातों से वह अच्छी तरह सो नहीं सके थे। नींद जैसे उनसे रुठ—सी गई है। रोज रात एक बजे तक वह बेवजह टेलीविजन के चैनल बदलते रहते ... कोई भी कार्यक्रम उन्हें रुचिकर नहीं

लगता। कई बार टेलीविजन पर नजरें गड़ाए हुए ही अतीत के गलियारे में भटकते रहते और वक्त के दरवाजों से बन्द स्मृति की अंधेरी कोठरियों में धूल से अटी पड़ी पुरानी घटनाओं की पोटलियों को खोलने लगते।

रात एक बजे के बाद वह टेलीविजन बंद कर नींद लाने की तमाम युक्तियां अपनाते हैं परन्तु नींद तो जैसे उनके दोनों बेटों की तरह अकारण ही उनसे दूर चली गई थी। मन को वह जितना एकाग्र करने का प्रयास करते उतना ही वह अतीत की गलियों में उछलता—कूदता भागता फिरता। वह मन के पीछे भागते और उसे पकड़कर वर्तमान में खींचते हुए लाते, परन्तु कुछ पलों बाद ही वह पुनः अतीत की गलियों में शरारती बच्चे—सा भाग निकलता। पूरी रात यही खींचतान चलती और उन्हें

थोड़ी—सी झपकी, इस भाग—दौड़ की थकान के बाद उस समय लगती, जब लोग उठने की तैयारी कर रहे होते।

उनकी पत्नी निर्मला को बहुत गहरी नींद आती है। कई बार उन्हें निर्मला की नींद से ईर्ष्या होती। बिस्तर पर लेटते ही उसे गहरी नींद आ जाती जबकि वे पूरी रात करवटें बदलते रहते। उसे सुबह जल्दी उठना होता है, अतः वह अलार्म लगा कर सोती है।

चण्डीगढ़ के पॉश इलाके में डॉक्टर साहब की शानदार कोठी है, परन्तु इतनी बड़ी कोठी होने के बावजूद दोनों बेटे चण्डीगढ़ में ही किराये पर रहते हैं। बड़ा बेटा विजय और उसकी पत्नी इंजीनियर है तो छोटा बेटा राकेश और बहु दोनों डॉक्टर हैं। दोनों बहुएं उनके बेटों की पहले सहकर्मी थीं और बाद में

साथ काम करने से उपजे आकर्षण और प्यार को उन्होंने रिश्तों में बदल लिया। इन दोनों अन्तर्जातीय विवाहों में निर्मला का हल्का-सा विरोध जरूर रहा था लेकिन दोनों बेटों की शादियां उन्होंने पूरे रस्मों-रिवाज के साथ शानदार तरीके से की थीं। निर्मला का विरोध भी बहुओं की जातियों को लेकर नहीं था, बल्कि उसे यह चाव था कि बेटों के लिए बहुएं वह पसन्द करे और नौकरी करने वाली आधुनिक परिधानों में सजी लड़कियां उसके उस सपने में फिट नहीं हो रही थीं जो वह बड़े चाव से दिन में भी पिछले कुछ बरसों से देख रही थी। वह चाहती थी घरेलू किस्म की साड़ियों में लिपटी गुड़ियाओं जैसी बहुएं जिन्हें वह अपनी बेटियों की तरह प्यार कर सके, उन पर अपना अधिकार जमा सके। वह शिक्षित परन्तु पुरानी आदर्शवादी विचारधारा की स्त्री थी और बेटों और बहुओं पर अपना अधिकार समझती थी। उसकी सारी दुनिया घर, पति और बेटों तक सीमित रही थी और उसकी सारी सोच और दिनचर्या पूरा जीवन इन्हीं तीनों के आसपास घूमती रहती थी। डॉक्टर साहब सरकारी सेवा में रहे थे और अक्सर उनके तबादले छोटे-छोटे शहरों में होते रहते। बार-बार स्कूल बदलने

से बच्चों की पढ़ाई खराब न हो, अतः निर्मला हमेशा बच्चों के साथ चण्डीगढ़ में ही रही। घर के मुखिया की तरह वह घर और बाजार के सारे काम संभालती और अपने बच्चों का पालन-पोषण उसने इस तरह किया था जैसे कोई चिड़िया अपने नवजात चूजों की सुरक्षा में तैनात हो। दोनों बेटे भी उसे बहुत मानते थे। विककी और रिक्की जब मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों में गए तो अचानक आए इन खर्चों को पूरा करने के लिए उसने अपने वे गहने बेच दिए थे, जिनसे निर्मला को अथाह प्यार ही नहीं था बल्कि उसकी कोमल संवेदनाएं और स्मृतियां भी उनसे जुड़ी हुई थीं। “गहनों का क्या है, फिर बन जाएंगे। मेरा असली गहना तो ये विककी-रिक्की ही हैं” – उसके चेहरे पर विजेता का सा दर्प था। बच्चे किराये के मकानों में न रहें, इसके लिए उसने जिद्द करके सारी जमापूंजी और बैंक से ऋण लेकर इतनी बड़ी कोठी इस प्लॉट पर निर्मित करवाई थी ताकि जब दोनों बेटों की शादियां हों तो वह साथ ही रह सकें। बैंक से लिए ऋण की किश्तें अभी जारी थीं परन्तु दोनों बेटों में से किसी ने भी यह नहीं सोचा कि वे अपनी पेंशन से इसे कैसे चुकायेंगे। दोनों बेटों का

विवाह एक ही दिन एक ही मंडप के नीचे हुआ था और शादी के मात्र छः माह बाद ही दोनों एक ही दिन अकारण घर छोड़ गए थे।

दोनों बहुएं आधुनिक विचारधारा की थीं परन्तु डॉक्टर साहब ने कभी भी उनके निजी जीवन में दखलअंदाजी नहीं की थी। हां, निर्मला अवश्य बहुओं को घर की मर्यादा का पाठ पढ़ाती रहती, यद्यपि उसमें भी सास की तरह बंधन लगाने की प्रवृत्ति नहीं बल्कि एक मां की तरह बेटियों का मार्गदर्शन करने का कर्तव्य निहित होता। शायद यही एक कारण रहा होगा कि अकारण और अचानक दोनों बेटों ने अलग रहने का फैसला कर लिया। इसके अतिरिक्त यदि कोई और कारण रहा हो तो वह बहुओं और बेटों को ज्यादा पता होगा। इतना सम्मान तो बेटे बहुओं ने उनका किया ही था कि वे न तो कभी आपस में लड़े थे और न ही कभी उनसे या निर्मला से उन्होंने बहस की थी। ऊपर से सब कुछ शांत था, परन्तु रिश्तों की जमीन में कहीं गहरे, नई पीढ़ी की विचारधारा के ज्वालामुखी में असंतोष का लावा दहक रहा है, इसे पिछले कुछ समय से डॉक्टर साहब शिद्दत से महसूस कर रहे थे। कुछ दिनों से रात का खाना दोनों अपनी पत्नियों के साथ

होटल में खाकर ही घर आने लगे थे। जबकि दोपहर का खाना उनके जॉब के कारण घर में संभव ही नहीं था। बहुओं के आकर्षण में बंधे, महत्वाकांक्षी बेटों का यह निर्णय अपने साधारण से अतीत की कैद से निकल संभावनाओं के अनंत आकाश में बहुत ऊँचे एकाकी उड़ने का वही आदिम प्रयास था जिसमें अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति से वशीभूत पक्षियों के चूजे 'पंख' निकल आने पर अपने घोंसले छोड़कर कभी न लौटने के लिए अनंत उड़ान पर निकल जाते हैं और भूल जाते हैं कि किस तरह उनकी मां ने अपना खाना चबा-चबा कर उनकी चोंच में डाला था और परभक्षियों से उनकी रक्षा की।

एक वर्ष हो चुका है दोनों बहुओं को घर छोड़े हुए। इस एक वर्ष में सिर्फ एक बार वह उनसे मिलने घर आए हैं, वह भी दीपावली वाले दिन मात्र औपचारिकतावश। जाने के बाद एक दो माह तक दोनों बेटे कभी-कभी फोन पर हाल-चाल पूछ लिया करते थे परन्तु अब पिछले आठ महीनों से फोन करना भी उन्होंने बन्द कर दिया है। दोनों बेटों के घर छोड़कर चले जाने से निर्मला को गहरा सदमा लगा और वह बीमार पड़ गई। पूरे जीवन वह इसी भ्रम में जीती रही थी कि जिन

बेटों को उसने इतने लाड़-प्यार से पाला है, वे उससे दूर कभी रह ही नहीं पायेंगे। सदमा तो उन्हें भी लगा था क्योंकि वे ऐसा समझते थे कि उनके बच्चों में ऐसे संस्कार नहीं हैं कि वे बुढ़ापे में अपने मां-बाप को अकारण ही छोड़ देंगे। आर्थिक रूप से भी वह अपने बच्चों पर बोझ नहीं थे। अपनी नौकरी के कारण यदि दोनों बेटे कहीं दूसरे शहरों में अलग रह रहे होते तो अलग रहने का कारण समझ में आता परन्तु एक ही शहर में रहते हुए बेटे बहुओं का अलग-अलग किराये के मकानों में रहना और उनसे बोलचाल तक बंद कर देना – डॉक्टर साहब इस बारे में सोचकर भी स्वयं को अपमानित महसूस करते। लगातार सोचते रहने से वह 'डिप्रेशन' और अकेलेपन की बीमारी का शिकार हो गए थे। कहीं भी जाना उन्होंने लगभग बंद कर दिया था। पूरा दिन केवल शाम को आधा घंटा वह सामने के पार्क में टहलने जाते। निर्मला ने इस सदमे से उबरने के लिए 'आध्यात्म' की राह पकड़ ली और वह घर और मंदिरों में पूजा-पाठ में अपना समय व्यतीत करती। वह डॉक्टर साहब के पास आकर बैठने से भी बचने लगी थी। उसे हमेशा यही डर लगा रहता कि बात घूम फिर कर बेटों से आकर

जुड़ जाएगी और वह जख्मों को खुरचना भर होगा। दोनों ही बेटों का पालन-पोषण उसने बड़े लाड़-प्यार से किया था और पूरे जीवन में उसने केवल उन्हीं मुद्दों पर डॉक्टर साहब से बहस की थी, जो उसके बेटों की खुशी से जुड़े थे, फिर चाहे वहां वह गलत ही क्यों न हो। चाहे जितनी भी आर्थिक परेशानियां रही हों उसने कभी बच्चों को किसी चीज का अभाव महसूस नहीं होने दिया था। बच्चों की हर सही गलत बात में वह बच्चों का पक्ष लेती। डॉक्टर साहब का मत था कि लाड़-प्यार एक अलग बात है और बच्चों में अनुशासन की भावना पैदा करना एक अलग बात। ऐसा भी नहीं था कि बच्चे अनुशासित नहीं थे परन्तु कई मामलों में वह अपनी मां पर पूर्णतः निर्भर थे और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में डॉक्टर साहब को अतिरिक्त श्रम करना पड़ता। डॉक्टर साहब महसूस करते थे कि बेटों की मां पर आश्रित रहने की यही भावना जब पत्नियों से आकर जुड़ गई तो पत्नियों के अलग रहने के निर्णय को दोनों बेटे टाल नहीं सके। डॉक्टर साहब ने कभी दोनों बेटों से अकारण घर छोड़ने का कारण नहीं पूछा ...। जब दोनों ने मकान किराये पर लिया तब भी नहीं और न ही कभी फोन पर। पूरे

जीवन उन्होंने आत्मसम्मान की कीमत पर कोई समझौता नहीं किया था। बेटों के घर छोड़कर जाने के पश्चात जब निर्मला गंभीर रूप से बीमार पड़ी तब भी उन्होंने कभी बेटों को उसकी बीमारी के बारे में नहीं बताया। एक घाव उनके मन पर हमेशा ताजा रहता, जिस पर इस प्रश्न की मक्खियाँ हमेशा भिनभिनाती रहतीं कि बच्चों की परवरिश में उनसे या निर्मला से कहां गलती हुई थी।

बहुओं की पाश्चात्य जीवन-शैली को लेकर निर्मला के मन में कहीं कोई गांठ हो तो उन्हें नहीं पता, परन्तु उन्होंने उसी स्वरूप में उन्हें स्वीकार किया था, जैसी वे थीं। बहुओं की सोच उनकी जीवन-शैली, उनके परिवेश की देन थी। उसमें उनका कोई कसूर नहीं था। वे मध्यमवर्गीय परिवार की दबी-सहमी, प्रताड़ित वे लड़कियाँ नहीं थी जिनका अपना शोषण का जिक्र करते हुए भी मर्यादा भंग होती है। जबकि निर्मला की नजरों में वे उन सुंदर, मासूम गुड़ियाओं की तरह थीं जिन्हें झपटने को हजारों हाथ हमेशा तैयार रहते। वह जब-तब उन्हें जमाने की दुहाई देकर उनके पहनावे और वेश-भूषा को लेकर कर्तव्य-बोध कराती रहती।

बहुओं का मोबाइल जब भी बजता तो वह हमेशा पूछ बैठती — “किसका फोन है?” ... और शायद यहीं आकर बहुओं को लगता कि निर्मला उनके निजी जीवन में दखल दे रही है। घर में अनुशासन बनाये रखने की जिम्मेदारी शुरू से ही निर्मला ने संभाल रखी थी और उसके बनाये नियमों का पालन दोनों बेटे और वे स्वयं भी करते थे। बहुओं के आने के बाद धीरे-धीरे वे नियम टूटने लगे लेकिन फिर भी निर्मला ने इसके लिए कभी बहुओं से झगड़ा नहीं किया। जहां वह असहमत होती, वहां भी वह बड़े प्यार से बहुओं को समझाती।

घड़ी का अलार्म बजने के बाद वे कभी सो नहीं पाते, परन्तु बिस्तर वे तभी छोड़ते हैं, जब निर्मला नहा-धोकर पूजा-पाठ करके उनके लिए चाय लेकर आती है।

“चाय सिरहाने रखी है ... पी लेना—रोज की तरह निर्मला चाय रखते हुए बोली — मैं मंदिर जा रही हूँ।”

जब से बच्चे घर छोड़ कर गए हैं, वह इसी तरह चुपचाप रहने लगी है। बहुत आवश्यक हो, तभी उनसे बात करती है। जबकि पहले सुबह चाय रखकर वह तब तक कुछ न कुछ बोलती रहती थी, जब तक वे

बिस्तर से उठ नहीं जाते थे। बेटों के जाने के बाद उसकी बहस करने की आदत अब बिल्कुल खत्म हो चुकी है जबकि पहले वह छोटी-छोटी बातों पर उनसे बहस करती — “यह कागज फर्श पर क्यों डाल रखे हैं, इन्हें रद्दी की टोकरी में क्यों नहीं डाला ... कपड़े उतारकर हैंगर पर क्यों नहीं टांगे, बूट अपनी जगह पर क्यों नहीं रखते ... गीला तौलिया बेड पर क्यों डाल देते हो?” अपनी तरफ से वह पूरी कोशिश करते कि निर्मला को कुछ कहने का मौका न दें परन्तु वह कोई न कोई मौका ढूँढ ही लेती। यद्यपि उसके टोकने में भी अपराध का अहसास करवाने का भाव कम और समझ जतलाने का भाव ज्यादा होता।

रजाई से बाहर निकल उन्होंने वॉश-बेसिन से मुंह हाथ धोए और अखबार उठाने के लिए दरवाजा खोल बाहर निकले तो देखा बाहर घना कोहरा छाया हुआ है। बंगले के बाहर जो सड़क है, वह कोहरे की चादर में पूरी तरह दबी-ढकी लग रही थी। अखबार उठाकर वे अंदर लौटे तो देखा निर्मला पूजा-सामग्री ले मंदिर जाने को तैयार खड़ी है।

“बाहर इतना घना कोहर है ... ऐसे में कहां जाओगी। थोड़ी धूप निकल

आये तब जाना।” — उन्होंने निर्मला को टोका।

“अच्छा” ...। वह बिना कोई तर्क किये अपने कमरे में लौट गई।

जब से बच्चे गए हैं, वह निर्मला को जो भी कहते हैं वह चुपचाप मान लेती है, किसी भी बात पर उनसे असहमति व्यक्त नहीं करती, न ही किसी चीज की मांग करती है। फर्श पर रद्दी कागज अगर वे फेंक देते हैं तो चुपचाप उन्हें उठाकर रद्दी की टोकरी में डाल देती है। अव्यवस्थित पड़े उनके जूते, कपड़े, गीले तौलिये को चुपचाप अपनी जगह व्यवस्थित रख देती है। पिछले एक वर्ष से उसने बालों को कलर करना बंद कर दिया है और अब सिर के सफेद बालों से वह एकदम से ज्यादा बूढ़ी नजर आने लगी है जबकि पहले वह अपने शरीर का ध्यान रखती, बालों को कलर करती व गहरे रंग के कपड़े पहन कर सुंदर दिखने का प्रयास करती। अब वह अपने शरीर और वेशभूषा दोनों की ओर से लापरवाह हो गई है। उसे अस्थमा की शिकायत काफी बरसों से है और वह रोटहेलर का प्रयोग करती है।

चाय खत्म कर उन्होंने अखबार उठा लिया और सुर्खियों पर नजर दौड़ाने लगे। पिछले एक वर्ष से अखबार पढ़ने में डॉक्टर साहब की

रुचि भी कम हो गई है जबकि पहले वह दो तीन अखबार रोज ही बहुत दिलचस्पी से पढ़ते थे। दूसरे कमरे से लगातार निर्मला के खांसने की आवाजें आने लगीं तो वह उठकर निर्मला के कमरे में चले गए।

“अस्थमा की दवाई नहीं ली क्या आज?” उन्होंने पूछा।

“खत्म हो चुकी है दवाई।” — निर्मला ने खांसते हुए उत्तर दिया।

“कब?”

“हो गये करीब दस-बारह दिन।”

“दस-बारह दिन? ... और तुमने मुझे बताया तक नहीं” — उन्हें गुस्सा आ गया।

“भूल गई” — वह छाती पर हाथ रख फिर खांसने लगी।

“हद है तुम्हारी भी” — बड़बड़ाते हुए वे अपने कमरे में चले आए। उन्हें याद आया कि किस तरह कई बार दवाई भूल जाने पर निर्मला तब तक उनसे बहस करती थी जब तक कि वे दवाई लेने घर से बाहर नहीं निकल जाते थे। “मेरी दवाई आप जान बूझकर भूलते हो” — वह तर्क देती।

“अभी तो कोई मेडिकल स्टोर भी नहीं खुला होगा” — उन्होंने सोचा

— “कहीं अस्थमा का अटैक ही न पड़ जाए।” वह निर्मला को लेकर चिंतित हो उठे। निर्मला की खांसी रुकने का नाम नहीं ले रही थी और उसे सांस लेने में तकलीफ होने लगी थी। अचानक उन्हें याद आया कि शाम को गार्डन में सैर करने वाले वर्माजी भी अस्थमा की उसी दवाई का प्रयोग करते हैं जो निर्मला करती है। वर्माजी का घर उनके बंगले के पीछे से गुजरने वाली सड़क को पार करने के बाद थोड़ी ही दूरी पर था। उन्होंने पैदल ही वर्माजी के घर जाने की सोची और ओवरकोट पहन वे मुख्य सड़क पर निकल आए। कोहरा अभी भी उतना ही घना था और दस मीटर से ज्यादा दूर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। शून्य डिग्री के आसपास के तापमान से उनकी बूढ़ी हड्डियों में कंपकंपी दौड़ रही थी।

कांपते-कांपते वे वर्माजी के घर पहुंचे तो तत्काल उन्होंने दवाई की एक नई शीशी पकड़ा दी। “मैं तो हमेशा एक शीशी सुरक्षित स्टॉक में रखता हूं। क्या पता कब कहीं रखकर भूल जाऊं अब याददाश्त भी तो साथ नहीं देती।”

वर्माजी के चाय पीकर जाने के आग्रह को टालते हुए वह शीघ्रता से घर लौटने लगे। मुख्य सड़क

पर जब पहुंचे तो उन्होंने देखा कि एक कुतिया कोहरे के कारण किसी कार की चपेट में आ गई है और उसकी मृत देह के पास उसका एक नवजात पिल्ला ठंड में कूंकूंक करता हुए उसे जगाने का प्रयास कर रहा है।

उनके कदम अचानक ही ठिठक गए। कोहरे के कारण सड़क पर ट्रैफिक कम अवश्य था, परन्तु अभी भी कार-बस ट्रक वहां से गुजर रहे थे। उन्हें लगा कि यदि उस पिल्ले को उन्होंने अपनी मां की मृत देह के पास से नहीं हटाया तो वह अबोध भी किसी कार के नीचे आ जाएगा। उन्होंने फुर्ती से बढ़कर उसे हाथों में उठा लिया। सड़क किनारे उसे छोड़ने का कोई औचित्य नहीं था, क्योंकि वह दुबारा अपनी मां की मृत देह के पास पहुंच जाता। उन्होंने सोचा कि वे उसे अपने बंगले के आस-पास कहीं छोड़ देंगे और सुबह-शाम घूमने जाते समय उसे खाने-पीने को कुछ देते रहेंगे। बर्फ के जैसा सफेद रंग का वह देसी नस्ल का पिल्ला था, जिसके शरीर पर घने सफेद रेशमी बाल थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि वह एक हफ्ते पहले ही जन्मा होगा। “इसकी जीभ कितनी गुलाबी है और दांत कितने सुंदर ... आंखों में भी कितना भोलापन है” —

उन्होंने मन ही मन सोचा। अचानक कहीं उनके मन में ढेर-सी सहानुभूति उमड़ आई। सर्दी से ठिठुरते हुए वह अभी भी कूंकूंक कर रहा था। उन्होंने उसे ओवरकोट से सटा लिया। जब बंगले के पास पहुंचे तो उन्होंने उसे वहां थोड़ी दूर बुझे मन से सड़क पर उतार दिया। उतरते ही वह कूंकूंक करता हुआ उनके स्लीपर और पैर चाटने लगा। मन में उतर आई ढेर सी सहानुभूति के बावजूद वे इस मनःस्थिति में नहीं थे कि उसे बंगले पर ले चलें। न तो उसकी देखभाल करने वाला कोई था और न ही वे चाहते थे कि देसी नस्ल का आवारा पिल्ला उनके बंगले में रहे। तरस, दया, ममता और सहानुभूति ऐसी मानवीय

भावनाएं हैं जो मन में जाग तो जाती हैं लेकिन स्वार्थ उन्हें मन में स्थाई रूप से टिकने नहीं देता।

घर पहुंचे तो निर्मला अब भी खांस रही थी। उन्होंने ‘रोटाहेलर’ ढूँढ़ कर कैप्सूल उसमें डाल निर्मला को पकड़ाया और उसकी पीठ सहलाने लगे। थोड़ी देर बार उन्हें लगा कि मुख्य द्वार को कोई जोर-जोर से खरोंच रहा है। उठकर दरवाजा खोला तो देखा वही पिल्ला था। उन्हें आश्चर्य हुआ कि वह उनके पीछे-पीछे घर तक कैसे आया। दरवाजा खुलते ही बिना एक पल गंवाए वह घर के अंदर आ उनके पैरों में समर्पण की मुद्रा में लेट गया। आवाज सुनकर निर्मला भी बाहर निकल आई — “अरे, इसे अंदर क्यों बुला लिया?”



उन्होंने उसकी मां के मरने की पूरी कहानी सुनाई तो निर्मला के मन में भी सहानुभूति उभर आई — “बेचारा भूखा होगा ... मैं इसे थोड़ा दूध—ब्रेड खाने को दे देती हूँ” — वह दूध ब्रेड लेने रसोई में चली गई तो वह पिल्ला कूँ-कूँ करता हुआ पूरे घर में अपनी मां को ढूँढता फिरने लगा। उन्होंने सोचा कि जब थोड़ी धूप निकल आयेगी तो वे उसे बंगले से दूर गार्डन के आसपास छोड़ आयेंगे।

डॉक्टर साहब ने अपने कमरे में आकर टेलीविजन ऑन कर दिया और रजाई में घुसकर न्यूज देखने लगे। थोड़ी देर बाद निर्मला उनके कमरे के दरवाजे पर आकर चुपचाप खड़ी हो गई। उन्होंने आश्चर्य से पूछा — “क्या हुआ?” “इसे गीजर में गर्म पानी कर नहला दूँ बहुत गंदा हो रहा है?” — उसने डरते-डरते पूछा। “इस आवारा पिल्ले को...? इसे नहला-धुला कर क्या करोगी? शाम को इसे जब गार्डन में छोड़कर आऊंगा तो फिर गंदा हो जाएगा” — “डॉक्टर साहब की आवाज में थोड़ी तल्खी आ गई।” “गंदा नहीं होगा, बल्कि एक रात में ही मर जाएगा। अभी दूध के अलावा कुछ खाता—पिता नहीं है वह। दूध पिलाने को उसकी मां तो है नहीं ... भूख और सर्दी से जल्दी

ही मर जाएगा” — वह डरते-डरते बोली।

“जो दिल में आए करो” — वह फिर टेलीविजन देखने लगे अचानक उनके चेहरे पर एक मंद-मंद मुस्कराहट तैर गई। महीनों बाद निर्मला ने उनकी किसी बात पर उनसे असहमति व्यक्त की थी।

लगभग दो घंटे बाद वह स्नान करने के लिए उठे तो देखा निर्मला अपने कमरे में सीने तक रजाई ले आंख बंद कर लेटी है।

“क्या बात ... आज मंदिर नहीं गई?” — उन्होंने पूछा।

“बाहर इतना कोहरा है ... कोहरे में अस्थमा की शिकायत और बढ़ जाती” — वह बोली।

“वह पिल्ला कहां गया?” — उन्होंने फिर पूछा। निर्मला ने चुपचाप अपने सीने से रजाई हटाई तो उन्होंने देखा वह सफेद रेशमी रुमाल की तरह निर्मला के सीने से चिपका पड़ा था।

“हद है तुम्हारी भी ... पता है तुम्हें, इन आवारा जानवरों में सैकड़ों किस्म के बैक्टीरिया पलते हैं। अस्थमा तुम्हें पहले से है, कोई नई एलर्जी हो गई तो फिर उसके इलाज के लिए अस्पताल के चक्कर लगाते रहना ...। लगता है

इसी आवारा के चक्कर में आज तुम मंदिर नहीं गई” — उन्हें गुस्सा आ गया। निर्मला मूक टुकुर-टुकुर उनका चेहरा देखने लगी। उन्हें निर्मला की भाव-शून्य हो चुकी आंखों में आज फिर ममता का वही पुराना महासागर हिलोरें मारता नजर आया। निर्मला का इस तरह देखना उन्हें द्रवित कर गया। वे चुपचाप बाथरूम की ओर चले गए।

पूरा दिन ऐसे ही बीत गया। दोपहर का खाना खाने के बाद शाम देर तक वे टेलीविजन देखते रहे, फिर शाम को गार्डन में सैर करने निकल गए। लौटकर खाना खाया और फिर टेलीविजन देखने लगे।

थोड़ी देर बाद ही निर्मला उनके पास आकर चुपचाप बैठ टेलीविजन देखने लगी। उन्हें आश्चर्य हुआ। महीनों बाद वह उनके पास आकर बैठी थी। थोड़ी देर तक वह चुपचाप बैठी रही। उन्हें लगा वह टेलीविजन देख रही है।

“इसे हम पाल नहीं सकते ... अगर छोड़ दिया तो ...” — आगे के शब्द उसके मुंह में ही अटक गए।

“इस आवारा को ...? पालने के लिए तुम्हें यह देसी नस्ल का आवारा पिल्ला ही मिला। देसी

नस्ल के ये आवारा पिल्ले कभी पालतू नहीं बनते। पन्द्रह-बीस दिन बाद जब यह कुछ खाने-पीने लगेगा तो इसे कहीं दूर छोड़ आऊंगा। कुत्ता पालने की अगर तुम्हारी इतनी ही इच्छा है तो कोई अच्छी नस्ल का पिल्ला खरीद लेंगे, जो पालतू बन सके” — उन्होंने समझाया — “वैसे भी जब यह कुछ खाने-पीने लायक बड़ा हो जाएगा तो खुद ही घर छोड़कर चला जाएगा।” उन्होंने देखा निर्मला के चेहरे पर अनजाने भय की एक भीगी सी परछाई कांप उठी। उन्हें लगा अनजाने में ही उन्होंने निर्मला की कोई दुखती रग छेड़ दी है। “खुद घर छोड़कर चला जाएगा तो मैं रोकूंगी नहीं, परन्तु अभी उसे हमारी जरूरत है।” वह बुझे मन से उठकर अपने कमरे में चली गई।

रोज की तरह रात डेढ़ बजे तक वह टेलीविजन के चैनल बदलते रहे। उन्हें याद आया, जब बेटे साथ थे तो वह दस-ग्यारह बजे तक टेलीविजन बंद कर दिया करते थे ताकि बेटे और बहुएं डिस्टर्ब न हों। उनके बेडरूम के साथ ही दोनों बेटों के बेडरूम थे। अब भी दोनों बेटों के बेडरूम निर्मला ने ज्यों के त्यों रखे हुए हैं। बेटों के घर छोड़कर चले जाने के पश्चात शुरू-शुरू में निर्मला घण्टों

उनके बेडरूम में जाकर बैठी रहती। बेटों के बेडरूम में अभी भी उनकी वस्तुएं मौजूद हैं। इनमें कुछ उनके बचपन की भी हैं। उनकी कम्प्यूटर टेबल और कम्प्यूटर, दीवारों पर लगे पोस्टर्स और ग्रीटिंग्स ... कैरम और क्रिकेट का सामान। बेटों के कमरों में बैठकर बड़ी शिद्दत से वह उन दिनों को याद करती जो उसके मन के कंगूरे पर अचानक ही कबूतरों की शक्ल में आकर बैठ जाते। बच्चों की आवाजें उसके कानों में ऐसे गूंजती जैसे किसी ने टेपरिकार्डर पर कोई कैसेट चला दी हो — “मम्मी, मेरी टाई कहां रखी है? ... मम्मी, जल्दी से दूध ठंडा कर दो मेरी स्कूल बस आने वाली है ... आपको कितनी बार कहा है मम्मी ... आप कम्प्यूटर की डस्टिंग मत किया करो ... कपड़ा मारते हुए आप यू.पी.एस. ऑफ कर देती हो ...।” आवाजों की कैसेट घूमती रहती — “मेरे ऑफिस का वक्त हो गया और अभी तक आपने लंच पैक नहीं किया मम्मी।” निर्मला बच्चों की इन आवाजों को सुनने के लिए बार-बार उनके कमरों में जाती और पागलों की तरह उनसे आत्म-वार्तालाप करती रहती। निर्मला के आत्म-वार्तालाप की आवाजें जब डॉक्टर साहब को सुनाई देती हो वह उसे सांत्वना

देने लगते — “विककी और रिककी दोनों ही बहुत खुश हैं। उनकी खुशी ही तो चाहते थे न हम। फिर तुम दुखी क्यों हो? बहुत सारे परिवार ऐसे होंगे जहां बच्चे साथ ही रहते हैं लेकिन वे साथ रहकर भी दुखी हैं। हमारे बेटे-बहुएं तो प्रसन्न हैं, स्वस्थ हैं, समाज में उनका सम्मान है ... अच्छा कमाते हैं ... फिर तुम क्यों केवल इस बात से दुखी हो कि वे हमसे दूर रहते हैं। विदेश में ... किसी दूसरे शहर में नौकरियां लगतीं तब भी तो वे हमसे दूर ही रहते।” निर्मला एकटक प्रश्नवाचक मुद्रा में उनका चेहरा देखने लगती तो वह निर्मला से आंखें नहीं मिला पाते। वह जानते थे कि निर्मला जिस प्रश्न का उत्तर लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं ढूंढ पा रही उसका उत्तर उनके पास भी नहीं है कि अकारण और अचानक दोनों बेटे उनसे इतने दूर क्यों और कैसे चले गए। यह दूरी भौगोलिक नहीं थी बल्कि बेटों के दिलों में एक खाई की शक्ल में पैदा हुई थी और समय गुजरने के साथ-साथ दिनों-दिन बढ़ रही थी, अकारण और अनायास ही।

निर्मला को सदमे से उबारने के लिए तो उन्होंने बेटों के कमरों में ताला लगा दिया परन्तु जो घाव

खुद उनके मन पर लगा था उसे वह किसी को नहीं दिखाते थे। खुद को उन्होंने अपनी ही कैद में बंद कर लिया था। जब निर्मला मन की शांति मंदिरों में ढूँढ़ रही होती वह बेटों की पुरानी बर्थडे एलबम लेकर बैठ जाते। एक एलबम से फोटो निकालकर दूसरी एलबम में लगाते तो कभी उनकी धूल और नमी साफ करते। बच्चों के स्कूल के दिनों के कक्षा एक से आठ तक के रिपोर्ट कार्ड्स उन्होंने संभाल कर रखे थे। घण्टों बैठकर फिजूल ही दोनों बच्चों की तुलना करने लगते कि गणित में कौन ज्यादा बुद्धिमान था तो अंग्रेजी किसकी ज्यादा अच्छी थी। बेवजह उनका प्रतिशत निकालते रहते। वे एकाकीपन और डिप्रेशन का शिकार हो चुके हैं, यह वह जानते थे और इसके लिए नियमित दवाई उन्हें खानी पड़ती थी।

सुबह अभी उन्हें थोड़ी सी झपकी लगी ही थी कि घड़ी का अलार्म अपने समय पर फिर उसी कर्कशता से चीख उठा। थोड़ी देर बाद ही निर्मला चाय लेकर आई और उनके चेहरे से उसने रजाई हटा दी — “उठ जाओ और चाय पी लो ... फिर “निक्की” को थोड़ा घुमा लाना वरना घर गंदा करेगा।”

“तुमने उसका नाम भी रख दिया” — उन्होंने उठते हुए पूछा।

“हां, जब तक हमारे साथ है तब तक किसी नाम से तो उसे पुकारना ही पड़ेगा न।”

“लेकिन यह तो लड़कियों वाला नाम हुआ — निक्की। यह तो कुत्ता है। ... और अगर नाम रखना ही था तो मुझसे सलाह लेना तक तुमने जरूरी नहीं समझा। ‘निक्की’ — क्या वाहियात नाम है। कुत्तों के नाम ऐसे थोड़े ही होते हैं।”

“क्यों नाम रखने का अधिकार क्या केवल आपको ही है। दोनों बच्चों के नाम भी आपने कितने पुराने रखे ... विकास और राकेश। दोनों भाइयों के नाम में कोई तुक नहीं। मैंने इतने अच्छे साहित्यिक नाम सुझाए थे” — वह तुनक गई।

“इसमें बच्चे कहां से आ गए ... मैं तो बस इतना कह रहा हूँ कि निक्की फीमेल नाम है और यह कुत्ता है। ... और बच्चों के नामों में तुम्हें कोई तुक या रिदम नजर नहीं आती — विक्की और रिक्की। इससे ज्यादा और कितनी तुक चाहिए तुम्हें” — वे भी बहस पर उतर आए — “बच्चों के नाम रखने के वक्त भी तुमने इसी तरह बहस की थी।”

“इसका नाम निक्की ही रहेगा ... विक्की, रिक्की और निक्की। आसानी से मेरी जबान पर भी चढ़ जाएगा।”

“हद है तुम्हारी भी ... विक्की और रिक्की से इस पिल्ले के नाम की क्या तुक है?” — इस बार उन्हें गुस्सा आ गया — “विक्की और रिक्की से तुक मिलाओगी न, तो यह भी घर में ज्यादा दिन नहीं टिकेगा।” अनायास ही उसने निर्मला की दुखती रग पर हाथ रख दिया। उन्होंने देखा निर्मला का चेहरा एकदम से बुझ गया। “हां, नाम तो लड़कियों वाला ही लगता है ... मुझे भी लग रहा था, परन्तु कोई और नाम याद ही नहीं आया। आप चाय पी लो ... ठंडी हो रही है। फिर आराम से कोई अच्छा-सा नाम सोचना” — वह आत्म समर्पण की मुद्रा में उनके सामने बैठी रही।

डॉक्टर साहब चाय की चुस्किया लेते हुए सोचने लगे। एक दिन में ही इस पिल्ले के आ जाने से निर्मला के अंदर कितना परिवर्तन आ गया है। विक्की और रिक्की के जन्म के समय भी उनके नाम रखने को लेकर दोनों में खूब बहस हुई थी। विक्की और रिक्की नाम निर्मला ने ही रखे थे। उन्होंने तो बस स्कूल के नाम लिखाते समय

विक्की का विकास और रिक्की का राकेश कर दिया था क्योंकि घर में उनके विक्की और रिक्की नाम पक्के हो चुके थे।

“सोचा कोई नाम?” चाय खत्म होते ही निर्मला ने उत्सुकता से पूछा।

“यह देसी नस्ल का पिल्ला है तो कम से कम इसका नाम तो विदेशी होना चाहिए, वरना नाम से ही इसकी औकात पता चल जाएगी” — वे मुस्कराने लगे — “इसका नाम रखते हैं स्टीफन — पूरा नाम जार्ज स्टीफन। तुम चाहो तो इसे जार्ज भी बुला सकती हो। लेकिन इसका नाम रजिस्ट्रेशन में जार्ज स्टीफन ही लिखवायेंगे।”

“सचमुच बहुत अच्छा नाम है” — निर्मला चहक उठी — “आप इसका रजिस्ट्रेशन करवाओगे?”

“क्यों तुम्हें नहीं पता ... हर पालतु कुत्ते का रजिस्ट्रेशन अब अनिवार्य है। बेशक यह आवारा हो परन्तु हम अपनी तरफ से तो कोशिश कर ही सकते हैं न इसे पालतू बनाने की। जब तक इसे हमारे साथ अच्छा लगता है, साथ रहे। चला जाएगा .. तो हम रोकेंगे नहीं।” निर्मला के चहकने का कारण नाम पसंद आना उतना नहीं था जितना यह कि अब वे उसे पालने के लिए तैयार हो गये थे।

कौन जानता था कि वह छोटा सा पिल्ला, इस वृद्ध दम्पति के जीवन में पुनः इतनी सारी खुशियां भर देगा और उन्हें इतना व्यस्त कर देगा कि निर्मला मंदिर जाना भूल जाएगी और डॉक्टर साहब दिन भर टेलीविजन छोड़कर स्टीफन के साथ खेलते रहेंगे ... घूमने जायेंगे। उन्होंने स्टीफन का रजिस्ट्रेशन करवा कर उसे लगने वाले सारे वैक्सीन लगवाए। स्टीफन के लिए उन्होंने बच्चों वाला कमरा खोल दिया था, लेकिन वह था कि रोज ही निर्मला की रजाई में ही घुस कर सोता और अलार्म बजने के साथ ही दौड़कर आता और उनके चेहरे से रजाई खींच लेता। मन मारकर उन्हें बिना चाय पिए उठना पड़ता क्योंकि वह उन्हें फिर रजाई को हाथ नहीं लगाने देता। जब तक वह उठकर फ्रेश होते तब तक निर्मला उन्हें चाय बना देती। बार-बार वह उन्हें जल्दी से चाय

पीने के लिए कहता, कभी उनके कपड़े खींचता और कभी दरवाजे तक दौड़ कर जाता। बाहर घूमने जाने की उसे जल्दी रहती। डॉक्टर साहब उसे प्यार से सहलाते — “घर में तेरा दिल नहीं लगता। दिन भर बाहर घूमता रहता है इधर-उधर, रहेगा तू आवारा ही।” वह उनका मुंह चाटकर फिर दरवाजे की ओर दौड़ जाता। निर्मला को छेड़ने के लिए अक्सर वे स्टीफन को ‘आवारा’ कहते।

जब भी वह कुछ लिखने पढ़ने का काम करते वह उनके कागज लेकर दौड़ जाता। वे निर्मला को आवाज लगाते — “अपने इस आवारा को संभालो मुझे यह कोई काम नहीं करने देता। डॉक्टर साहब को छेड़ने में स्टीफन को ज्यादा मजा आता क्योंकि वह उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ते



थे जबकि निर्मला को वह कतई परेशान नहीं करता था और एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह उसका कहना मानता। जब छोटा था तब तो वह आसानी से पकड़ में आ जाता परन्तु एक वर्ष का होते-होते वह एक स्वस्थ, ऊंचे कद्दावर कुत्ते में बदल चुका था। डॉक्टर साहब ने उसके गले में पालतू कुत्ते का पट्टा अवश्य बांधा था, परन्तु उसे जंजीर से वे कभी बांधकर नहीं रखते थे। निर्मला ने एक बार जंजीर खरीदने की बात कही भी थी तो उन्होंने मना कर दिया था — “अगर उसने जाना ही है तो जंजीर से बांधने पर भी चला जाएगा। जब तक उसका दिल करे साथ रहे, जाना है तो चला जाए। हम नहीं रोकेंगे उसे।”

उस दिन भी रोज की तरह ही वे सुबह स्टीफन को घुमाने गार्डन तक ले गए थे। वह बेंच पर बैठकर अखबार पढ़ते रहे और वह गार्डन में अन्य पालतू कुत्तों के साथ, जिनसे वह रोज खेलता था, धमा-चौकड़ी मचाता रहा। अचानक ही वह उनकी नजरों से गायब हो गया। काफी देर तक वे उसे गार्डन और उसके आसपास आवाजें देकर ढूँढते रहे परन्तु उसका कहीं पता नहीं चला। थक-हारकर वे घर लौट आए। घर आकर निर्मला को

बताया तो वह चिंतित हो उठी। फिर खुद ही उसे ढूँढने निकल पड़ी। दोपहर जब वापस लौटी तो उसका चेहरा रूआंसा हो आया था — “अब तक नहीं लौटा?” — उसने आते ही पूछा।

“नहीं ... नहीं लौटा” — चिंता की लकीरें उनके चेहरे पर भी गहरी हो उठीं।

“और आप घर में ही बैठे रहना ... घर का कोई सदस्य इस तरह गायब हो जाए तो क्या कोई इस तरह घर में आराम से बैठा रहता है” — गुस्से के साथ-साथ निर्मला की रूलाई फूट गई — “आपको क्या चिंता होगी ... पांच-छः दिन का होगा तब से मैंने पाला है उसे, मां की तरह।”

“तुमने पाला है तो क्या मैं उसका ध्यान नहीं रखता ... रोज उसे घुमाने ले जाता हूँ” — वह भी बहस पर उतर आए।

“घुमाने आप उसे नहीं ले जाते वह आपको ले जाता है। आप तो सुबह बिस्तर ही नहीं छोड़ते।” वह उसी तरह बहस करने पर उतर आई जैसे बच्चों के लिए उनसे करती थी।

“तुम तो ऐसे बहस कर रही हो जैसे मैं उसे जानबूझकर छोड़ आया हूँ।

मैं शुरू से ही जानता था, वह देसी नस्ल का एक आवारा कुत्ता है और कभी पालतू नहीं बन सकता। कोई फायदा नहीं है उसे ढूँढने का।” वह गुस्से में भरे बिस्तर पर लेट गए और टेलीविजन ऑन कर दिया। निर्मला देर तक अपने कमरे में मुंह छुपाए रोती रही।

कुछ देर तक वह कमरे में लेटे स्टीफन के बारे में सोचते रहे। उन्हें ख्याल आया कि कहीं आवारा कुत्ते पकड़ने वाली गाड़ी उसे न ले गई हो। उन्होंने वहां जाने की सोची। निर्मला के कमरे में जाकर उसके चेहरे से रजाई हटाई तो देखा उसकी आंखें भरी हुई थीं। “मैं पता करके आता हूँ। कहीं देसी, आवारा कुत्ता समझकर उसे गाड़ी वाले पकड़ कर न ले गए हों।” निर्मला कुछ नहीं बोली। डॉक्टर साहब कुछ देर तक उसका चेहरा देखते रहे। फिर एक झटके से मुड़कर घर के बाहर निकल कार में बैठ गए। एक आशंका ने उन्हें गहरे तक झकझोर डाला। उन्हें लगा स्टीफन के आने के बाद उन दोनों की जीवन में उत्साह के जो अंकुर फूटे थे, लगता है उन पर पाला पड़ गया हो। स्टीफन ने आते ही जीवन और दिनचर्या दोनों को बदल डाला था। वह उनसे इतना प्यार करने लगा था कि वह इस बात को

लगभग भूल ही गए थे कि वह उन्हें छोड़कर भी जा सकता है।

आवार कुत्तों को पकड़कर जहां रखते हैं वहां वे काफी देर तक स्टीफन को ढूँढने का प्रयास करते रहे। परन्तु वह वहां होता तो दौड़ कर उनके पास आ जाता। लौटते हुए वह आसपास सभी सड़कों पर नजरें दौड़ाते घण्टों कार में भटकते रहे कि कहीं स्टीफन उन्हें नजर आ जाए। किसी वाहन की चपेट में न आ गया हो, अतः वे जानवरों के अस्पताल में भी देख आए। शाम होने पर वह भारी मन से घर लौटे। स्टीफन अगर लौट आया होता तो निर्मला अवश्य मोबाइल कर देती। अब वह कभी नहीं लौटेगा — यह सोचने भर से निर्मला का उदास चेहरा उनकी आंखों के आगे घूम जाता।

घर आए तो दरवाजा खुला ही था। संभवतः वह निर्मला ने स्टीफन की वजह से खोलकर रखा था। अंदर जाकर उन्होंने दरवाजा बंद कर दिया और निर्मला से बिना कुछ बोले कपड़े बदलने लगे। निर्मला उठकर उनके कमरे के दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई — “नहीं मिला” — उसने पूछा। “नहीं” — उन्होंने संक्षिप्त सा उत्तर दिया और चुपचाप रजाई में घुस गए।

“चाय रखी है पी लेना।” थोड़ी देर बाद उन्हें निर्मला की बुझी हुई आवाज सुनाई दी। जब तक वे रजाई हटाते निर्मला कमरे के बाहर जा चुकी थी। उन्हें लगा वह उसी सदमे के भंवर में पुनः फंस गई है जिससे स्टीफन के आने से वह उबर चुकी थी।

वे अपने कमरे में लेटे हुए थे। शाम का कुहरा घिरने लगा था। रात के खाने के लिए उन्होंने निर्मला को मना कर दिया था। शाम के अभी छः ही बजे होंगे कि घड़ी का अलार्म अचानक पूरी कर्कशता से चीख उठा। वे आश्चर्यचकित हो उठे कि शाम का अलार्म निर्मला ने क्यों भरा। फिर उन्हें समझ आ गया कि दरअसल अलार्म तो सुबह के लिए ही लगाया होगा, क्योंकि रात का खाना निर्मला ने बनाना नहीं था अतः सोने से पूर्व उसने अभी शाम को ही घड़ी में अलार्म लगा दिया होगा जो शाम के छः बजने पर बज उठा था। अचानक उन्हें विककी के कमरे से बेड के नीचे से निकलता, लड़खड़ाता हुआ स्टीफन आता दिखाई दिया और उन्हें उठाने के लिए आकर उसने उनकी रजाई मुँह में पकड़ ली। उनके मुँह से खुशी के अतिरेक में चीख निकल गई — “निर्मला ... स्टीफन।”

निर्मला दौड़ती हुई आई और दरवाजे पर आकर ठिठक गई। उनकी रजाई मुँह में लिए लगभग अर्धबेहोशी की हालत में स्टीफन उनके बेड से टिका खड़ा था। वे चिंतित हो उठे — “निर्मला शायद गार्डन में इसने कोई जहरीली वस्तु निगल ली है ... इसे अस्पताल ले जाना होगा। उन्हीं कपड़ों में तेजी से उठकर उन्होंने कार निकाली। स्टीफन के साथ कार की पिछली सीट पर बैठी निर्मला अचानक उस सदमे से निकलकर मुखर हो उठी। “कुछ नहीं होगा मेरे स्टीफन को” — उसने स्टीफन को सीने से लगा लिया। “देखा कहीं नहीं गया था मेरा स्टीफन ... हमें छोड़कर ... पूरा दिन घर में ही था। ऐसे ही थोड़े जाता है कोई अपना घर छोड़कर ...।” रोते-रोते वह आत्म वार्तालाप करती रही — “देखा, कहते थे आवारा है ... घर छोड़कर चला गया है, नहीं है न तू आवारा ... तू तो मेरा सबसे प्यारा बेटा है, कभी नहीं जाएगा न घर छोड़कर ... कभी नहीं जाएगा न।”

डॉक्टर साहब की आंखों में देर से दो आंसू अटके हुए थे। आंखें बद कर उन्होंने उन्हें गालों पर बह जाने दिया। वर्षों से वे कभी नहीं रोये थे ... तब भी नहीं जब उनके दोनों बेटे घर छोड़कर अकारण चले गए थे।

प्रस्थान



जसविंदर शर्मा
205, जी एच.3, सेक्टर-24,
पंचकुला-134116 हरियाणा

मेजर विनोद आज भी उसी तरह चुस्त गेटअप में थे, एकदम फिर और सुन्दर पहनावे में। कभी-कभार उनकी आंखों में आंसू आ जाते मगर वह उन्हें बहने से रोक लेते थे। उनकी गीली गमनाक आंखें आज पहली बार देखी थी मैंने। पहले जब भी वह हमसे मिलते थे तो खिले हुए चेहरे और जिन्दादिली से स्वागत करते थे।

आज सुबह दस बजे मेजर साहब के ससुर की मौत हो गई थी। आज ही दोपहर चार बजे शवयात्रा रखी गई थी। घर में पड़ोसी, रिश्तेदार और मित्र लोग जमा हो रहे थे। नब्बे बरस से ऊपर थे उनके ससुर। मृतक का शरीर अब भी खूब तगड़ा था। बीमार चल रहे थे मगर पिछले दो महीने से कुछ ज्यादा मुश्किलें आ रही थी।

उनकी याद्दाश्त कमजोर हो गई थी।

मेजर साहब की मिसेज अपनी सहेलियों को बता रही थी — पिछली रात दस बजे के करीब पापा को सांस लेने में दिक्कत आ रही थी। हमने फैसला किया कि साथ के सरकारी अस्पताल की इमरजेंसी में ले चलते हैं। कुछ दिन पहले पापा एकदम ठीक हो गए थे। आज सुबह भी खुश-खुश लग रहे थे। उन्होंने आराम से पूरा शरीर स्पंज करवाया। सुबह उठते ही नहाने की आदत थी उनकी। याद खत्म होती जा रही थी। पिछले हफ्ते जिद कर बैठे कि मुझे घर ले चलो। मैंने उनके सामने कई तस्वीरें निकालकर रखी और कहा — यह अपना घर ही तो है बाऊजी। देखकर तसल्ली हुई उनको। कहने लगे — तो फिर

ठीक है। टिकते नहीं थे घर में। जब भी मौका मिलता, घर से भागने की सोचते।

मेजर साहब दूसरे रूम में बार-बार आते जहां बहुत सारे लोग शव के पास बैठे थे। हर नए आने वाले से पूछते — खाना खाया आपने।

उनके ससुर की लाश के पास बैठे लोग जाकर खाना कैसे खा सकते थे भला। एकाध उठता और हर बार जब कोई नया आदमी या औरत आती तो मेजर साहब आकर वही बात दोहराते।

मौत की उपस्थिति बहुत ही भयानक होती है। जब मौत की गैर हाजिरी हमें इतना आक्रांत करती रहती है तो उसे सामने देखकर आदमी गहरे तक कांप जाता है।

थोड़ा माहौल ठीक होता तो कोई अन्य करीबी पास आकर सुबकने

लगता। कहता — कुछ दिनों से बाऊजी अब तो बेहतर हो रहे थे।

फिर मिसेज मेजर वही बात दोहराती — रात दस बजे उन्हें सांस लेने में दिक्कत आई तो ...।

कोई बुजुर्ग औरत उनके गले से लिपटती। रूलाई फूटती, आसपास बैठे लोगों की आंखें बरसने लगती। अपना मरा हुआ कोई बहन, भाई, मां या बाप याद आ जाता उन्हें।

थोड़ा माहौल ठीक हुआ तो कोई बूढ़ा मिसेज मेजर को संबोधित करके कह उठा — उर्मिल बेटे, शीनू को भी फोन कर दिया था न।

मिसेज मेजर सख्त चेहरे से बोली — मामाजी, उनसे हमारा कोई आना जाना नहीं है आजकल।

सच बात थी। असल में मरने से पहले ही कुछ लोग हमारे बही खातों में बहुत पहले मर खपकर गायब हो चुके होते हैं। फिर कभी उनके लिए कोई मातम, अफसोस या आंसू नहीं बहाए जाते। धीरे-धीरे वे हमारी स्मृति से अपने आप ही निकल भी जाते हैं कि उनके नाम तक भूल जाते हैं हमें। फिर भी ऐसे मौकों पर लोग उन लोगों के बारे में हमें चेताते हैं कि उन्हें भी इस मौत की खबर देनी चाहिए थी। अपना फर्ज निभाना

चाहिए। कोई आए या न आए। खुशी के मौके पर ऐसी लापरवाही चल सकती है मगर गर्मी में सब को खबर कर दो। कल कोई मलाल या शिकवा करे कि हमें तो खबर ही नहीं दी। मौत के बाद एक दूसरे के मुंह-मंथे लगना होता है।

बाहर बरामदे में खड़े मित्र-पड़ोसी आपस में बेमतलब उलझ रहे थे — आजकल लोग कितने आत्म केन्द्रित हो गए हैं। साथ लगती कोठियों से देखो अब तक कोई नहीं निकला।

दूसरे व्यक्ति ने टिप्पणी की — ये सब सफेदपोश लोग आलीशान कपड़े पहनकर चमचमाती कारों में सीधा शमशान घाट में ही पहुंचेंगे। वहां भी दूर से ही बस हाथ जोड़कर रस्मी अंदाज में खड़े मिलेंगे। मौत उनके लिए एक सामान्य रस्मी-सी घटना है। इसी बहाने वे एक दूसरे के बारे में यहीं शमशान घाट आकर ही अपडेट होते हैं। बस एक दूसरे से ये लोग यहीं मिलते हैं या किसी कॉकटेल पार्टी पर।

शमशान घाट से ए.सी. वैन आ गई थी। सड़क का रास्ता अवरुद्ध था। लोगों ने कारों को इधर उधर करके रास्ता बनाया।

अन्दर मिसेज मेजर कह रही थी — देखो मेरी मासी अब निकली है करनाल से। सुबह दस बजे बता दिया था उनको कि चार बजे मज़ल है। अब किस-किस का इन्तजार करेंगे।

दूसरा बोला — आजकल बूढ़े लोगों की सुनता कौन है। न घर में और न बाहर कहीं।

एक अन्य ने कहा — टैक्सी करके आ जाती। बहुत अमीर है वह।

हर किसी का फोन बज रहा था। हरेक रिश्तेदार की कोशिश थी कि वक्त पर पहुंच जाए। कोई रास्ते में जाम में फंसा था और कोई घर का पता खोजने में भटक रहा था। एक मौत ने उनकी सामान्य दिनचर्या में कितनी भगदड़ मचा दी थी।

लाश को सजा दिया गया था। कम्बल, तौलिया, कंधी, चप्पल आदि न जाने क्या-क्या साथ रखा गया। बस यहीं था जो वे लेकर जा रहा था। इतना बड़ा ठेकेदार था करने वाला। क्या शानदार कोठी डाली थी उसने।

शमशान घाट किसी बाजार से कम नहीं दिखता था। एक बैच आ रहा था तो दूसरा फारिंग होकर खुशी से बाहर निकल रहा था। सैकड़ों आलीशान कारें पार्क थी।

पांच सात चिताएं जल रही थी। कुछ पुरानी सुलग रही थी और कुछ टंडी पड़ गई थी। यहां पूरी तरह साम्यवाद था। यहां मरने वाले सब बराबर थे। कोई अफसर या मजदूर का भेद नहीं, अमीर गरीब सभी यहीं आते थे। जैसे शतरंज के मोहरे – पैदल, हाथी, राजा, रानी सब खेल के बाद एक ही बॉक्स में पैक कर दिए जाते हैं किसी अन्य दिन के खेल के लिए। वैसे ही आदमी कहीं भी पैदा हो, कितना ही खूबसूरत या तीस मार खां क्यों न हो उन सब का अंतिम पता यही होता है – शमशान।

मेजर साहब शांत खड़े थे। शव को चमचमाते लिबासों में लपेटकर चिता पर लिटाया गया। लोग भाग-भाग कर साथ लगे ढेर से लकड़ियां उठा उठाकर लाश के ऊपर तहें बिछाने लगे। एक बूढ़ी लाश के कमजोर से सीने के ऊपर वजनी से वजनी लकड़ियां चिन दी गई। यहां बहुत जल्दबाजी भी थी कि किसी तरह यह सब तुरंत निबटे।

मृतक किसी जल्दबाजी में नहीं लग रहा था। वह अपनी सारी लीला खेल चुका था। उसके शरीर को रात-भर घर में रख भी लेते तो भी उसे कोई परेशानी नहीं थी।

आसपास के लोग चाहते थे कि लाश को जितनी जल्दी मिट्टी के सुपुर्द किया जाए अच्छा है।

मौत इतनी अनवेलकम घटना क्यों है, कितना दुखद है यह सोचना कि हमारे मरने के बाद भी हमसे जुड़े हुए लोग हमें कितना मिस करेंगे। यह हमारा अंतिम प्रस्थान होता है। पहले भी हम कई बार घर से बाहर जाते हैं और तरोताजा होकर लौटते हैं मगर मरने के बाद यह अंतिम शाम है, अब वापसी संभव नहीं। हजारों लोगों को हमने दुनिया से आते-जाते देखा है। हमें उतना फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उनसे हमारा वास्ता बहुत कैजुअल होता है। हमारे घर के लोगों के लिए हमारा यूँ अंतिम रूप से चले जाना बहुत दर्दभरा होता होगा। अपने घर में हमारा एक स्पेस होता है, एक उपस्थिति रहती है जिसे खत्म होने में वक्त लगता है। दूसरा कोई आकर उस शून्य को भरता है और यह बीच का वक्त कुछ खास नजदीकी लोगों को कितनी बार रूलाता है।

चिता ने खूब आग पकड़ ली थी। हर प्रकार के जोखिम से निबटने की तैयारी की गई थी। लकड़ी और फूस को ठीक से चिना गया था। कपूर तथा देसी घी का

भरपूर छिड़काव किया गया था। शमशान के कुशल कारीगर बहुत व्यावसायिक तरीके से यह काम कर रहे थे। जैसे ही आग ने गति पकड़ी सब लोगों के कदम ऊपर सीढ़ियों की तरफ उठने लगे।

साइलेंट मोड पर रखे हुए फोन अब बजने लगे थे। हर कोई आश्वस्त हो गया था कि बस अब यहां से बाहर निकलने की मुक्ति की घड़ी आ गई है। पूरे शमशान घाट में मुर्दे जलाने की प्रक्रिया क्रमवार थी। अलग-अलग चरण पर काम चल रहा था। शव लेकर एक बैच अभी घर से चला था, दूसरा गेट पर, तीसरा अर्थी उठाए चिता के करीब, चौथा बैच लाश के ऊपर लकड़ियां सजाने में तत्पर और पांचवां बैच गेट से बाहर चैन की सांस लेकर निकल रहा था।

सीढ़ियों के ऊपर सब लोग जमा हो गए थे। संक्षिप्त शांति पाठ के बाद रस्म क्रिया की तिथि व समय बताया गया। इतनी देर से शमशान वैराग्य में डूबे लोग शमशान के गेट के बाहर निकलते ही फिर अपनी-अपनी व्यस्त दुनिया में खो गए और दस मिनट में भूल भी गए कि वे किसी के अंतिम प्रस्थान में शिरकत करके लौटे थे।

हिंदी हमारी मातृभाषा



पंकज अरोरा
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

संस्कृत से जन्मी, हिंद देश में पली-बढ़ी,
मां का दर्जा ले, फिर क्यों है उदास खड़ी हिंदी।
संस्कृत से जन्मी, हिंद देश में पली-बढ़ी,
मां का दर्जा ले, फिर क्यों है उदास खड़ी हिंदी।

निराशा को आशा में, दुख को खुशहाली में,
बदलना मेरा वादा है, प्रसारित करनी होगी हिंदी।
संस्कृत से जन्मी, हिंद देश में पली-बढ़ी,
मां का दर्जा ले, फिर क्यों है उदास खड़ी हिंदी।

हिंदी मेरी भाषा है, आशा है, जिज्ञासा है, उत्थान है हिंदी,
मीठी बोली, अद्भुत वाणी, बढ़ती प्रेम पिपासा है।
संस्कृत से जन्मी, हिंद देश में पली-बढ़ी,
मां का दर्जा ले, फिर क्यों है उदास खड़ी हिंदी।

सुंदर, मनोरम, मीठी, सरल, ओजस्विनी है हिंदी,
पाथेय, प्रवास परिचय का सूत्र, मैत्री की उत्कृष्टता है हिंदी।

संस्कृत से जन्मी, हिंद देश में पली-बढ़ी,
मां का दर्जा ले, फिर क्यों है उदास खड़ी हिंदी।

साहित्य का असीम सागर है, शब्दकोष का भंडार है हिंदी,
सब भाषाओं की प्रिय भाषा है हिंदी।

संस्कृत से जन्मी, हिंद देश में पली-बढ़ी,
मां का दर्जा ले, फिर क्यों है उदास खड़ी हिंदी।

गागर में भर देती सागर, न बैर, न ईर्ष्या है,
न नफरत जाने, अपनेपन से लुभाती है हिंदी।

संस्कृत से जन्मी, हिंद देश में पली-बढ़ी,
मां का दर्जा ले, फिर क्यों है उदास खड़ी हिंदी।

मां का दर्जा पा कर, वंदनीय हमारी हिंदी,
राष्ट्र के माथे की बिंदिया है हिंदी।

संस्कृत से जन्मी, हिंद देश में पली-बढ़ी,
मां का दर्जा ले, फिर क्यों है उदास खड़ी हिंदी।



मेघ बनूं



उदय प्रताप सिंह
हिंदी अधिकारी
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
कर्नाटक, बेंगलूरु

“कुछ उलझी अनसुलझी बातें,
बेचैन बहुत कर जाती हैं ...”

“फिर उलफ़त की काली रातें,
प्रश्नों की झड़ी लगाती हैं ...”

“चुपके—चुपके दबे पाँव,
इक अदृश्य शक्ति सी आती है ...”

“खोया होता हूँ सपनों में,
झकझोर मुझे वो जाती है ...”

“घनघोर अँधेरे में बैठा,
कुछ देर सोचता रहता हूँ ...”

“मैं कौन कहाँ से आया हूँ,
खुद से पूछता रहता हूँ ...”

“व्यथित वेदना दुर्बलता का,
नित्य सामना करता हूँ ...”

“कोई अन्य उपाय न पाकर,
लिखने में लग जाता हूँ ...”

“अर्थ अधूरे जीवन का,
परिभाषित अब तक हुआ नहीं ...”

“आराध्य कौन सा छूट गया,
माँगी जिससे दुआ नहीं ...”

“कोई तिमिर प्रकाशक शक्ति,
मिले कहीं से ले आऊं ...”

“कौन सूर्य सक्षम है,
जाकर जिसके गुण गाऊं ...”

“नहीं भुजाओं में अतुलित बल,
संचित नहीं अर्थ शक्ति ...”

“क्षुद्र उपासक ईश्वर का,
दीपक तक सीमित भक्ति ...”

“पुष्पित फलित संवेदना,
कैसे उससे हीन बनूं ...”

“भावशून्य बन जाऊं कैसे,
कैसे रक्तविहीन बनूं ...”

“संभव नहीं नदी होना,
सागर जल मैं बन जाऊं ...”

“उमड़—घुमड़ कर मेघ बनूं,
संपूर्ण धरा को नहलाऊं ...”

इंसानियत



शुभम वर्मा

निजी सहायक, उप-महालेखाकार (प्रशासन)
कार्या. महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

धर्म के नाम पर मत लड़ा कीजिये
जाति के नाम पर मत घृणा कीजिये।
कौन जाने ये काल फिर रहे न रहे
बस एकता के महल को खड़ा कीजिये।
रोज आपस में इतना क्यों लड़ते हो,
दिन-पर-दिन तुम इतना क्यों गिरते हो।
खुद को परखो, समझो, फिर ये कहो,
क्या मिला है? क्या मिलेगा? तुम्हें इस लड़ाई से
ये जाति ये धर्म खुदा ने नहीं बनाया है
उसने तो बस इंसान को बनाया है।
हो सके तो इंसान बन कर रहो,
और प्यार के मोतियों को चुनते चलो।
यहां बीज नफरत के तो सभी बोते हैं,
तुम छांव ममता की लाओ तो जानू तुम्हें।
जो अनजान बनकर पराए हुये,
इनको फिर से अपना बनाओ तो जानू तुम्हें।
जिस दिन ये जाति-धर्म दुनियां से मिटेगा,
तुम्हें इस धरती पर ही स्वर्ग मिलेगा।
हर तरफ ही खुशियां बिखरी हुई मिलेगी,
और बस यहीं पर प्यार का समुन्द्र भी मिलेगा।
न होंगे धर्म और जाति के नाम पर फिर कोई दंगे
न होगी ये सहमी सी धरती दुबारा।
न होगी फिर कहीं पर कोई सिसक,

और न ही होगी धर्म की सर्वोत्तम बनाने की ललक।
इंसान ढूँढो इस इंसान की बस्ती में,
संस्कार ढूँढो इस इंसान की बस्ती में।
यह बहुत बुरा या वह बहुत बुरा,
क्यों कहते फिरते हो लोग सभी।
छोड़ दिया क्यों यह कहकर,
इसका कुछ भी नहीं हो सकता।
मेरा क्या है, मुझे क्या मतलब,
इस बात में मदहोश हैं सभी।
अपने दिल की दुनियां में,
इंसानियत का दीप जलायें सभी।
प्रश्न एक इस उत्सुक मन में आता है जरूर,
कि ईश्वर की बनाई इस नगरी में।
भेदभाव का अंधकार है क्यों?
तो आंसू निकल ही जाते हैं,
इस सोच-विचार में कि
इस दुनियां के लोग इतना स्वार्थी है क्यों?
एक बार उस सुंदर दुनिया की कल्पना तो करो,
और बस एक बार उस एकता के महल को खड़ा तो करो।
धर्म के नाम पर मत लड़ा कीजिये
जाति के नाम पर मत घृणा कीजिये
“एक ही धरती पर जो बसते हैं, वो इंसान हैं हम
एक ही परमात्मा है, उसकी संतान है हम।”

स्वागत है बेटी



केदार नाथ प्रसाद
सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
जय महावीर कालोनी, संदलपुर
महेन्द्र, पटना-800006

कंचन बनकर तुम आई हो,
आभा बनकर ज्योतित रहना।
स्वागत करता हूं बेटी मैं,
सौरभ बनकर पुलकित करना।

चंदा से ले दूधिया लाज,
सुमनों से ले मधुरिम पराग।
विहगों को पास बुलाकर के,
बन जाना तुम कोकिल विहाग।

मैं खुश हूं और अहलादित हूं
तुम हो चन्दन वन का सुवास।
आसिन में स्वाति बन जाना,
सावन का तुम स्वर्णिम विभास।

तेरे अधरों पर फूल खिले,
मैं यही कामना करता हूं।
चंदा कपोल पर आ बैठे —
शत बार वन्दना करता हूं।

शत बार वन्दना करता हूं —
तुम जो सोचो वह पा जाना।

घनघोर तिमिर में बन चपला,
तारों को राह दिखा जाना।

बन पत्र पुष्प, अक्षत चन्दन,
जूही, चम्पा और हरसिंगार।
रक्तिम गुलाब, श्वेताभ कमल,
रेशमी रूप, शीतल बयार।

मेरे मन के सरि-सागर में,
चन्दनगंधी तेरा स्वागत।
शारदे! सदा हंसती रहना,
स्वागत है, स्वागत अभ्यागत।

तनये! अनन्त आशीष तुम्हें,
हरदम पुष्पित, विहंसित रहना।
हरदम खिलना बन कनक पुष्प,
मधुमय प्रशांत ज्योतित रहना।

चम्पकवर्णी फिर से स्वागत,
स्वागत है और स्वर्णाभ किरण।
आरती थाल का अगरु धूम,
स्वागत है और श्वेताभ वरण।

फलसफ़ा

दिलीप कुमार मिश्र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, एएमजी-।
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
का कार्यालय, झारखंड, रांची

हँस लेता हूँ, रो लेता हूँ
बस खुद में ही हो लेता हूँ।
अब दुनिया की परवाह नहीं,
निज सपनों में खो लेता हूँ।

दुनिया अब पहले सी लगती नहीं,
कलियाँ भी पहले सी खिलती नहीं,
खुद में सिमटी दुनिया मेरी,
कैसे भी बस जी लेता हूँ।

किससे पूछूँ और क्या पूछूँ
कौन मुझे बतलाएगा।
इस अँधियारे जीवन में फिर,
कौन उजाला लाएगा।

कभी संग सखा सब रहते थे,
सब हँसी-ठिठोली करते थे।

सब बड़े हुए और छूट गए,
सब खुद में ही मसगुल हुए।

मैंने भी जिद ठानी थी,
अपनी पहचान बनानी थी,
घर छोड़ा, माँटी छोड़ी,
बंधन तोड़े, अपने छोड़े।

तब जाकर पहचान मिली, सोहरत पाया,
पर शिखर पर अब मैं अकेला हूँ,
अब संग नहीं अपने मेरे,
बस तनहाई का डेरा है।

किससे बाँटू खुशियाँ अपनी,
कौन यहाँ अब मेरा है,
सब कुछ पा कर मैंने जाना,
सब कुछ खो कर मैं बैठा हूँ।



जीवन के सफर में ...!



सुश्री हिमा बिंदु
संयुक्त सचिव
वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग
नई दिल्ली

ऐसे ही बैठे बैठे सोचे है कि
खुद से कितने बार मुंह मोड़ लिये हैं हम।

करना कुछ और चाहे
कर कुछ और रहे हैं हम।

जिन्दगी की नाम की परीक्षा में
ऐसे मोड़ पे खुद को कई बार पाये हैं हम।

विफल तो ना हुए यारों लेकिन
नियति की तलाश में फिर भी हैं हम।

जिंदा दफना रहा हूँ

सुश्री जुलियट विमला बी.
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
361, अण्णा सालै, तेनामपेट
तमिलनाडु, चेन्नै-600018

कभी रात के अंधेरे में
मैं अपनी अंतरात्मा पर एक नज़र डालता हूँ
यह देखने के लिए कि क्या वह अभी भी सांस ले रही है
चूंकि वह रोज रोज धीमी मौत मर रही है
जब मैं एक 5 सितारा होटल में भोजन के लिए भुगतान करता हूँ
सोचता हूँ कि शायद यह रकम, दरवाज़ा खोलने वाला पहरेदार की मासिक आय है
और जल्दी से मैं उस सोच को दूर कर देता हूँ
तब मेरी अंतरात्मा थोड़ी मर रही होती है।

जब मैं सब्जी वाले से सब्जी खरीदता हूँ और
उनका बेटा "छोटू" एक छोटा बच्चा, जिसे स्कूल में पढ़ना चाहिए
मुस्कुराते हुए आलू का वजन तोलता है,
तो मैं इस को नजरअंदाज कर देता हूँ
तब मेरी अंतरात्मा थोड़ा और मर रही होती है।

जब मैं एक डिजाइनर पोशाक में तैयार होता हूँ
एक पोशाक जो बहुत कीमती है
और मुझे ट्रैफिक सिगनल पर एक महिला दिखाई देती है
जो अपनी गरिमा बचाने के प्रयास में है
तो मैं तुरंत अपनी खिड़की बंद कर देता हूँ
तब मेरी अंतरात्मा थोड़ा और मर रही होती है।

जब क्रिसमस पर मैं अपने बच्चों के लिए महंगे गिफ्ट खरीदता हूँ
वापसी पर, मैं बच्चों को लाल बत्ती सिगनल पर देखता हूँ
जो खाली पेट और भूखी आंखों से सेंटा क्लॉस बेचते हैं
मैं उनसे मोलभाव करने की कोशिश करता हूँ
तब मेरी अंतरात्मा थोड़ा और मर रही होती है।

जब मेरी बीमार नौकरानी अपनी बेटी को काम करने के लिए भेजती है
 मुझे पता है कि मुझे उसे वापस जाने के लिए कहना चाहिए
 लेकिन जब मैं भरी हुई सिंक में गंदे बर्तनों को देखता हूँ
 तो मैं अपने आप को तसल्ली देता हूँ कि बस एक ही दिन की तो बात है
 तब मेरी अंतरात्मा थोड़ा और मर रही होती है।

किसी पार्टी से देर से घर आने के लिए
 जब मैं अपने बेटे को आज्ञा दी देता हूँ
 और फिर जब मेरी बेटी पूछती है
 मैं उसे बताता हूँ कि यह और संस्कारों के खिलाफ है
 मैं अपनी आवाज ऊँची कर लेता हूँ जब वह सवाल करती है
 तब मेरी अंतरात्मा थोड़ा और मर रही होती है।

जब मैं एक बलात्कार या बच्चे की हत्या के बारे में सुनता हूँ
 मैं दुखी महसूस करता हूँ फिर सुकून मनाता हूँ वो मेरा नहीं है
 फिर मैं खुद को आईने में नहीं देख सकता
 तब मेरी अंतरात्मा थोड़ा और मर रही होती है।

जब लोग जाति पंथ और धर्म पर लड़ते हैं
 मैं आहत और असहाय महसूस करता हूँ
 मैं भ्रष्ट राजनेताओं को दोषी ठहराता हूँ
 खुद को सभी जिम्मेदारियों से मुक्त समझ लेता हूँ
 तब मेरी अंतरात्मा थोड़ा और मर रही होती है।

जब मेरे शहर का दम घुट रहा हो
 शहर में सांस लेना मुश्किल है।
 मैं रोजाना काम करने के लिए अपनी कार से जाता हूँ
 मेट्रो नहीं ले रहा, कार पूल की कोशिश नहीं कर रहा,
 मुझे लगता है कि एक कार से कोई फर्क नहीं पड़ता
 तब मेरी अंतरात्मा थोड़ा और मर रही होती है।

रात के अंधेरे में जब मैं अपनी अंतरात्मा पर एक नज़र डालता हूँ
 मैं आश्चर्यचकित हूँ कि वह अभी भी सांस ले रही है
 क्योंकि मैं उसे अपने ही हाथों से,
 रोज, थोड़ा-थोड़ा करके जिंदा दफना रहा हूँ।

ओझा का पोछा



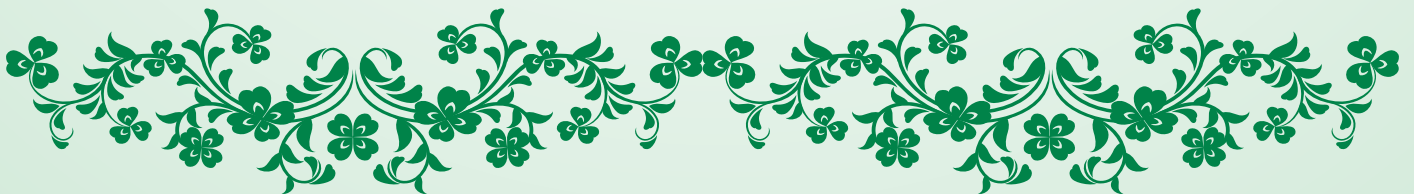
हीरा बल्लभ भट्ट
सलाहकार
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

कोविड 19 उर्फ कोरोना वायरस
जैसे ही जवां हुआ
उसने वैश्विक उपस्थिति दर्ज कर
मनुष्यों को छुआ
मानवों में अजीब-सा मर्ज हुआ
संक्रामक रोग की रोकथाम के लिए
उपलब्ध न थी कोई दवा
मांगते फिरते थे सब
अपने-अपने रब से दुआ।
प्रायः लोग
देखकर फैलता है रोग
दुबके रहते अपने घरों में
आठों पहरों में
यही हाल था गांवों और शहरों में।
गृह-सहायिकाएं जो दिन में
एक घर से दूसरे घर पर
काम करती आती थीं नजर

उनको संभावित संवाहक मान जबरन
अवकाश पर भेज दिया गया
शहरी घरों में आयातित था एक फंडा नया
हर कोई हिल गया
सबके नाक मुंह के लिए मास्क सिल गया।
श्रीमती ओझा जो एक कामकाजी महिला हैं
अपना मुख खोली और
अपने प्रियतम से मंद स्वर में बोली –
अब ऐसा करते हैं गृह सहायिका का काम
स्वेच्छा से छांट लेते हैं
अन्यथा पर्ची से बांट लेते हैं।
पति बोला –
जो जिस कार्य में प्रवीण है
जिसे करने का उसे यकीन है
वह उसे करने देते हैं
आपस की बात है
मुंह जबानी बांट लेते हैं।

श्रीमती ओझा बोली —
 आप जिसमें मुझे प्रवीण समझते हो
 मैं वो करूंगी
 मैं बिल्कुल ना डरूंगी
 काम से क्या डरना है
 मैं मैनेज करूंगी
 जो आप कर सकते हैं
 जिसका आपको मूल भूत ज्ञान है
 वह आप करो
 कुछ दिनों की बात है
 फिर संग में मैं भी तो हूँ
 तुम कतई ना डरो।
 मुझमें एक हुनर है
 मल्टी टास्किंग का सलीका है
 मैंने मां से दोनों चूल्हे जलाना
 उनमें रोटी-सब्जी एक साथ बनाना
 व कपड़े धोना भी सीखा है
 दोनों बार का खाना मैं बनाऊंगी
 कपड़े भी मैं ही धोऊंगी
 चूल्हे की गर्मी में मैं नहीं रोजूंगी।
 मिस्टर ओझा!
 आपने क्या सोचा?
 ओझा महाशय बोले —

गर्मी में रोटी बनाना
 कपड़ा धोना मुझसे न होगा
 न आता है न भाता है
 कुछ दिनों की बात है
 मैं भी ना डरूंगा
 मैं तुम्हारी कुछ न कुछ
 तो मदद जरूर करूंगा।
 श्रीमती ओझा बड़े प्यार से बोली —
 मिस्टर ओझा
 लीजिए यह रहा झाड़ू
 यह लीजिए पोछा
 अपना पुस्तैनी झाड़फूंक
 का काम कर लीजिए
 फिर तनिक आराम कीजिए
 दोनों वक्त के बर्तन सायंकाल
 कार्यालय से आने के बाद
 विम से धो दीजिए
 बरतनों का यह ढेर देखकर
 धीरज न खोओ
 यदि चाहो तो हर बार
 जब भी साबुन से हाथ धोओ
 दो बरतन भी तब साथ धोओ।



गज़ल



सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय महालेखाकार का कार्यालय (ले. व ह.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

भीख देकर न भिखारी को खिलाया जाए
फ़ल्सफ़ा ये है उसे काम बताया जाए
बिन गरज़ के ही जो करते हैं भला दुनिया का
उनके सम्मान में ही सर को झुकाया जाए
धर्म के नाम पे हम हिंदू मुसलमां न बनें
है ये बेहतर हमें इंसान बनाया जाए
धूप में उड़ते परिंदों को भी कुछ राहत हो
अपने आंगन में अगर पेड़ लगाया जाए
लोग कहते हैं नशा इश्क़ का सबसे बढ़कर
गर ये सच है तो इसे सबको कराया जाए
हाथ से जाम न दे मुझको नशा होता नहीं
इश्क़ का जाम निगाहों से पिलाया जाए
कागज़ी इल्म से होती न पढ़ाई पूरी
पाठ उल्फ़त का भी तो साथ पढ़ाया जाए
खुदकुशी करना मुसीबत का समाधान नहीं
दर्द कम करना है गर दुख को बँटाया जाए
जिन रिवाजों ने दुखाया है सदा दिल 'मीरा'
उन रिवाजों को ज़माने से हटाया जाए।



पंजीकरण सं.-2 एल (9)/8747177 /87(90)



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124